VIDHYADEEP
FOUNDATION

वे दो दिन
Culture with a Purpose



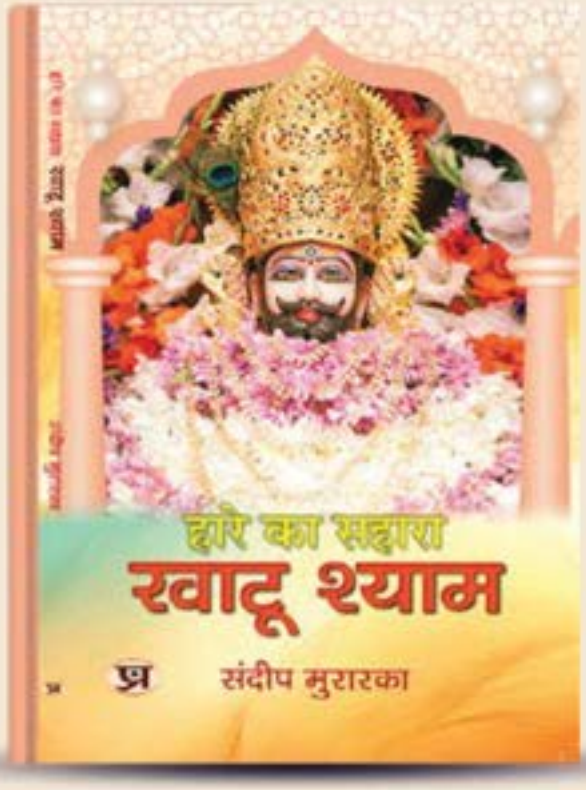
जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल

Where Art Meets Ink & Ideas Ignite

नई पुस्तक

हारे का सहारा : खाटू श्याम

प्रकाशक :प्रभात प्रकाशन प्रा. लि.
प्रकाशन तिथि : 15 दिसंबर 2025
भाषा : हिंदी
पृष्ठ : 160



यह पुस्तक महाभारत के अमर योद्धा बर्बरीक (खाटू श्याम) की जन्मस्थली महादेवशाल, पश्चिमी सिंहभूम, झारखंड को प्रामाणिक संदर्भों के साथ प्रस्तुत करती है। प्राचीन ग्रंथों, स्थानीय लोककथाओं, पुरातात्त्विक संकेतों और पौराणिक यात्राओं के आधार पर लेखक ने सिद्ध किया है कि पांडवों की वन-यात्रा एवं भीम हिडिंबा प्रसंगों की जड़ें झारखंड की धरती में गहराई से जुड़ी हैं। पुस्तक में पांडव-यात्रा मार्ग, महादेवशाल की असाधारण गाथा, बर्बरीक के तीन बाण, पांडवों एवं श्रीकृष्ण से उनका संवाद और हारे का सहारा बनने की दिव्य प्रक्रिया को जीवंत कथा शैली में प्रस्तुत किया गया है। धार्मिक आस्था, इतिहास, पर्यटन और लोकविश्वास, इन चारों के अद्भुत संगम के रूप में यह ग्रंथ पाठकों को आध्यात्मिक गहराई और सांस्कृतिक गर्व का अनुभव कराता है।

PLEASE BOOK YOUR COPY : **+91 91234 05236**

वे दो दिन
Culture with a Purpose

प्रबंध संपादक

अजय अग्रवाल

माधव खंडेलवाल

संपादक मंडल

डॉ. मुदिता चंद्रा

डॉ. जूही समर्पिता

प्रसेनजीत तिवारी

संदीप मुरारका

परामर्श

डॉ. रागिनी भूषण

हरि मित्तल

कमल किशोर अग्रवाल

नीरज पाठक

आकल्पन

Cheers Digitals

मुद्रक

नवीन प्रिंटर्स, दिल्ली

प्रकाशक

विद्यादीप फाउंडेशन

मूल्य

पाँच सौ रुपए

अनुक्रम

1. आगाज 3
2. शब्द शिल्पी सम्मान : पुस्तक अलंकरण समारोह 12
3. शब्द शिल्पी सम्मान के निर्णायक मंडल का आभार 16
4. सत्र 1. Cracking the Marwari Code : व्यापार और निवेश की समझ 20
5. सत्र 2. बदलता भारत, बदलती मीडिया की कहानी 22
6. सत्र 3. साइलेंट सिनेमा से OTT तक : Entertainment का Big Shift 24
7. सत्र 4. पद्मश्री विभूतियों का सम्मान 26
8. सत्र 5. संवाद, साहित्य और लोकतंत्र 30
9. जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल में श्री हरिवंश जी 32
10. सत्र 6. सरकारी गलियारों से OTT तक : हिंदी का बढ़ता दायरा 36
11. सत्र 7. बोलचाल की भाषा में कविता : हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी और अन्य भाषाओं की मिली जुली कविता 38
12. सत्र 8. पूर्वोत्तर गीता ज्ञान यात्रा का शुभारंभ 40
13. सत्र 9. North-East Echoes : भारत के सबसे रंगीन कोने से बातचीत 42
14. सत्र 10. व्यंग्य की धार : राजनीति, समाज और सच 44
15. ठंड की सॉंझ : शहनील के गीतों के साथ 46
16. पुस्तक लोकार्पण 50
17. मीडिया कवरेज 52
18. सत्र 11. Journalism Masterclass: ब्रेकिंग न्यूज से रील्स तक – रिपोर्टिंग की असल रियलिटी 70
19. सत्र 12/13. सिकुड़ती नदियों की कहानी : जल-संकट और जन-भागीदारी शब्द, समाज और सरोकार 72
20. सत्र 14. लकीरों में छुपा सच : हिंदी कार्टून की ताकत 74
21. सत्र 15. सांस्कृतिक धरोहरें : भारतीय साहित्य की दृष्टि में 76
22. सत्र 16. शंकराचार्य से वीर सावरकर तक : धर्म, राष्ट्र और साहित्य 78
23. सत्र 17. Screen Uncut: निर्देशक और अभिनेता से बेबाक संवाद 80
24. सत्र 18. कैनवास और ब्रश की जादुई क्लास 82
25. सत्र 19. Biography of Canvas : जहाँ रंग बोलेंगे 84
26. कमेंट्स बुक में दर्ज अतिथियों के विचार 86
27. सत्र 20. गांधी और विनोबा : परिवार, समाज और राजनीति में सात्विकता के पथ-प्रदर्शक 90
28. सत्र 21. विद्यादीप सम्मान 92
29. सत्र 22. Green Revolution 2.0: जल, जंगल और जन-भागीदारी 100
30. सत्र 23. दर्शन की सीमाएँ नहीं होतीं: एक गहन विचार-यात्रा 102
31. सत्र 24. जब लगेगा ग़ज़ल-कविता का तड़का : तब बनेगा माहौल 104
32. पद्मश्री मुलाबो सपेरा का मोहक कालबेलिया नृत्य 106
33. अतिथियों के कैरिकेचर : मनोज कु. सिन्हा का कलात्मक कमाल 112
34. ज्ञान का आदान-प्रदान : पुस्तकों के साथ 114
35. प्रायोजक : उत्सव के मौन सूत्रधार 118
36. From the Facebook Walls – JLF 2025 120
37. बोलती तस्वीरें 124
38. एक आत्मीय मुलाकात 140
39. जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल 141
40. संघर्ष से शिखर तक 142
41. मील का पत्थर 143
42. सत्रों का ब्योरा 144
43. बनारस लिटरेचर फेस्टिवल में जमशेदपुर 162
44. बुंदेलखंड लिटरेचर फेस्टिवल में जमशेदपुर 163
45. Unveiling the Theme of JLF 2.0 164

आ गा ज



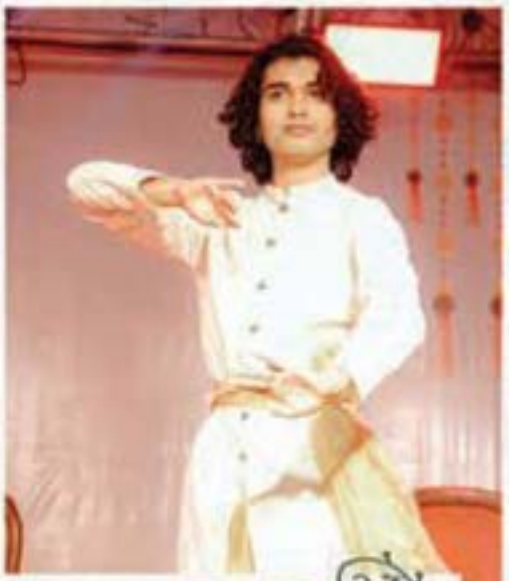










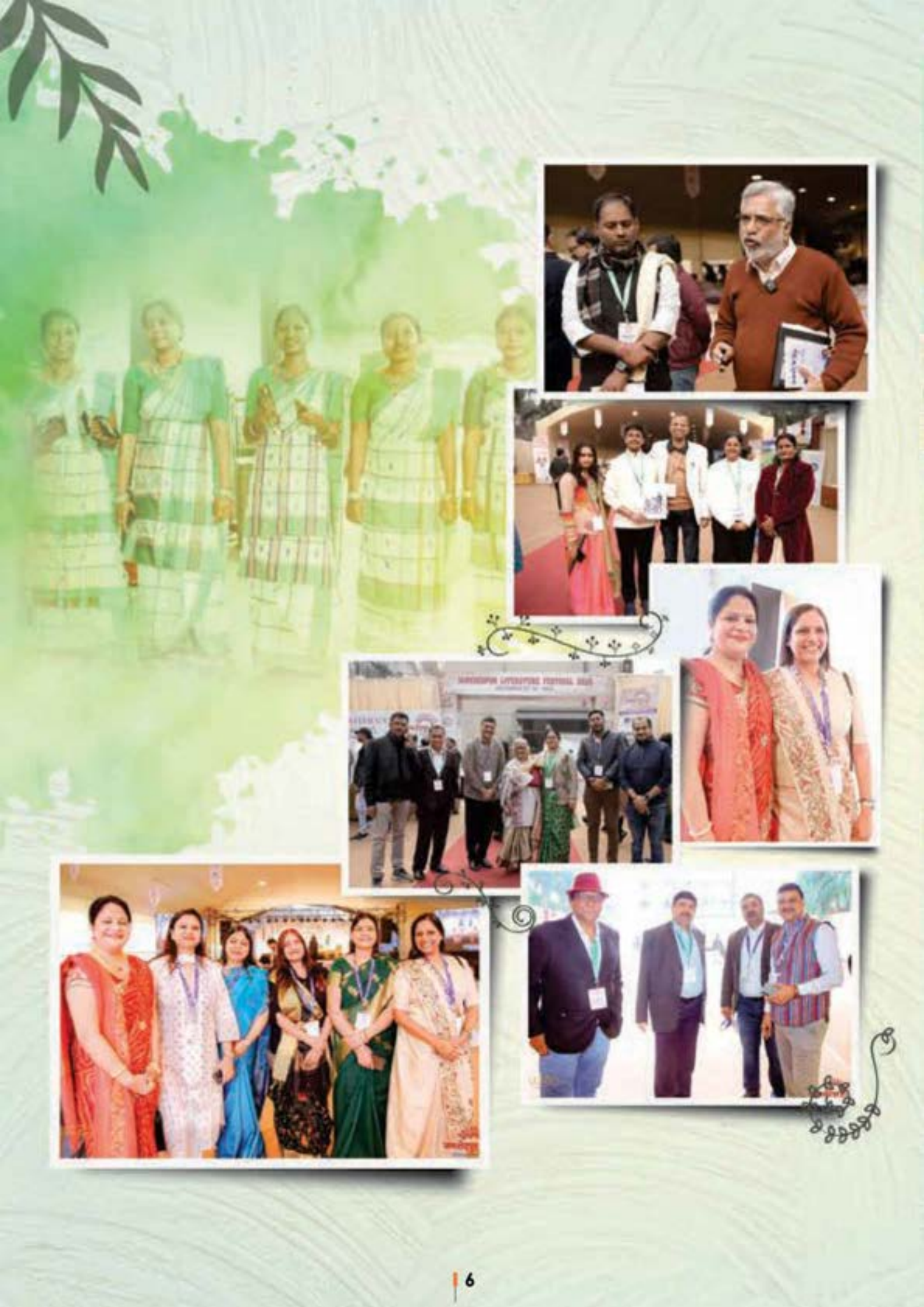


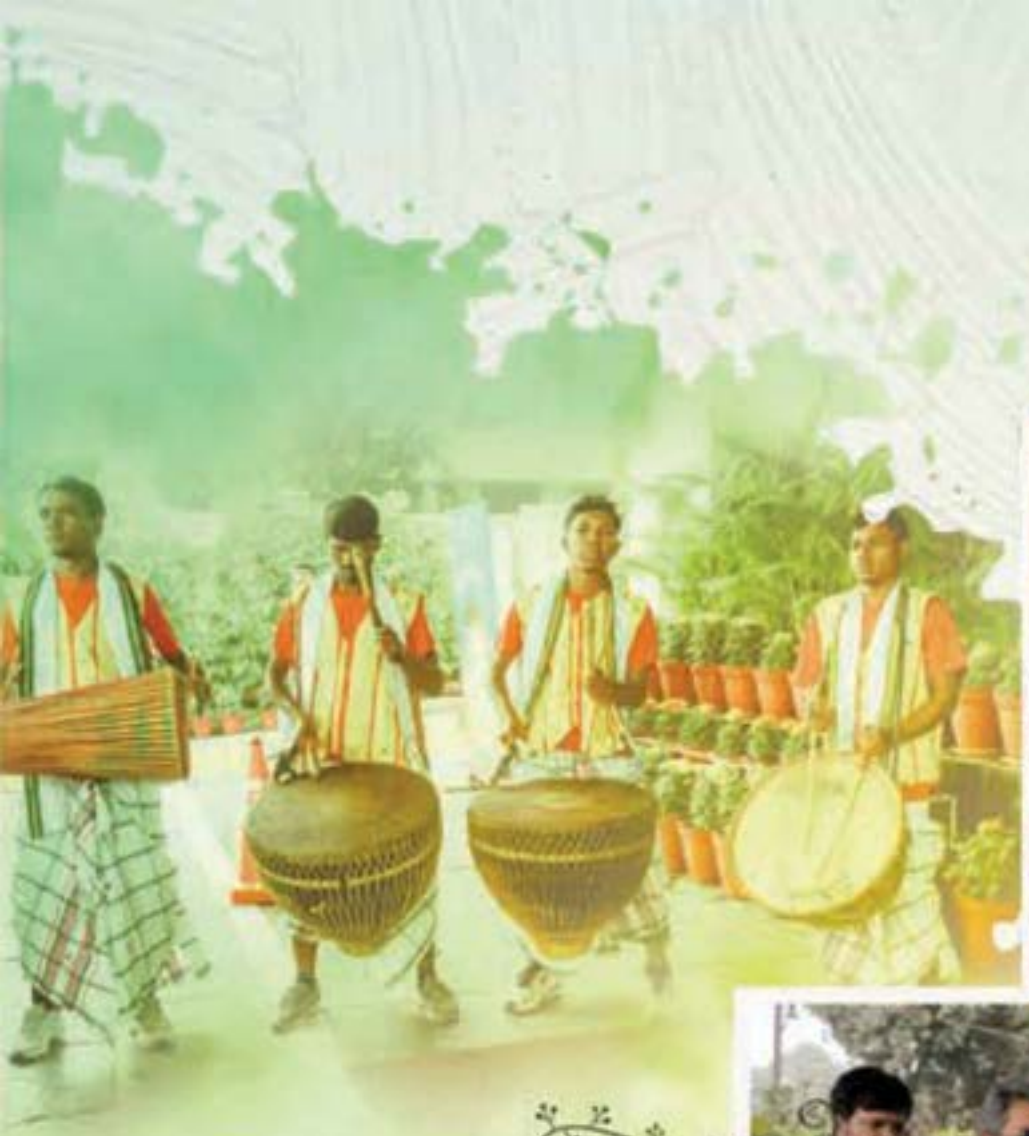

RAMADA




















जमशेदपुर
VIDHYADEEP




JANSHCHOR LITERATURE FESTIVAL 2023

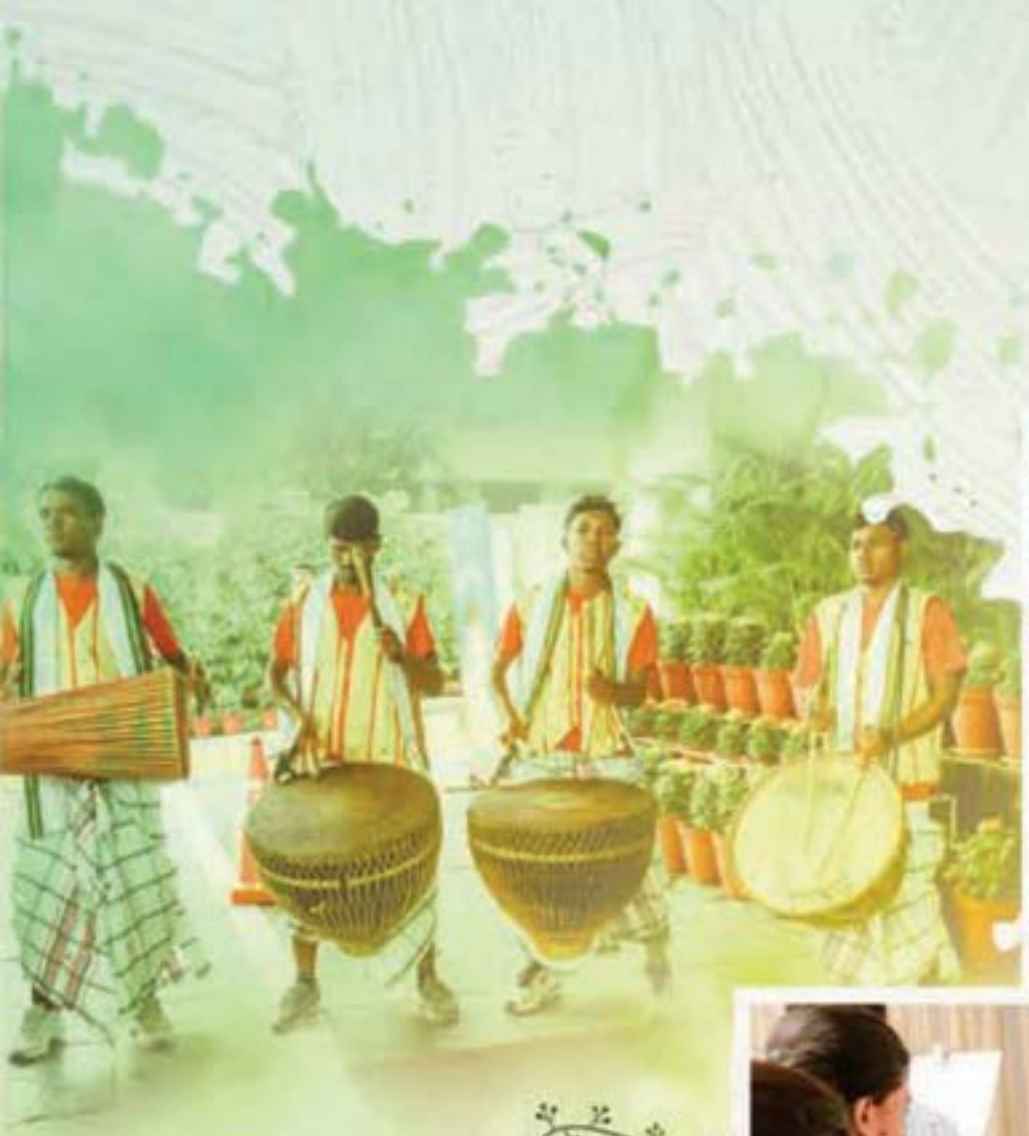





JANSHCHOR LITERATURE FESTIVAL 2023





























जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



शब्द शिल्पी सम्मान
पुस्तक अलंकरण समारोह

विशेष उदबोधन:
हरिवंश जी, नई दिल्ली
डॉ. अंजुम शर्मा, नई दिल्ली
व्योमेश शुक्ल, वाराणसी
बाबुषा कोहली, जबलपुर
डॉ. रविदत्त बाजपेई, राँची
प्रो. स्वाति पराशर, स्वीडन
बी. एल. मित्तल, कोलकाता
डॉ. मयंक मुरारी, राँची
अचल प्रियदर्शी, राँची

संयोजक:
डॉ. मुदिता चंद्रा एवं डॉ रागिनी भूषण



20 दिसंबर, 2025 | बैंक लॉन, होटल रमाडा, जमशेदपुर



हरिवंश
पुस्तक : झारखंड – एक चुनौती भी, अवसर भी
प्रकाशक : प्रकाशन संस्थान



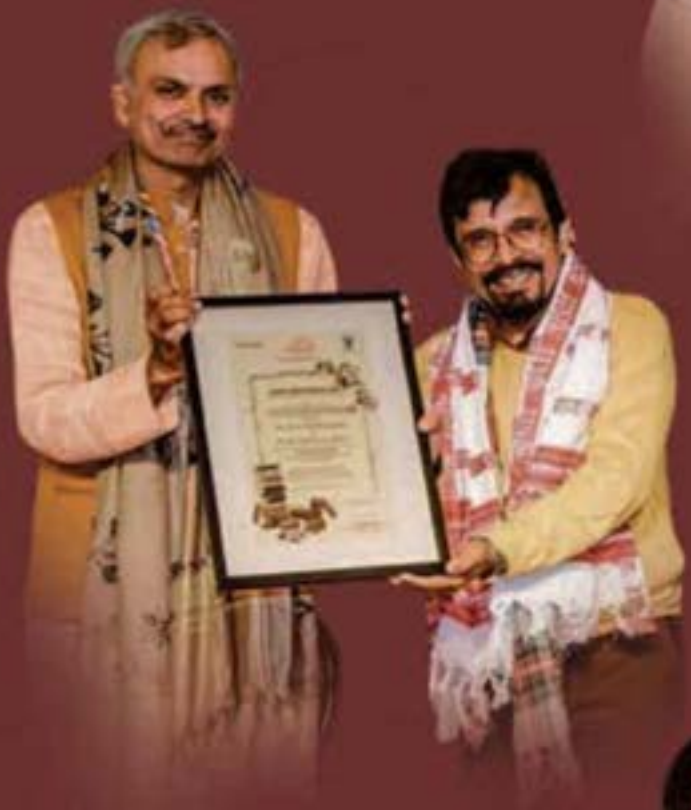
डॉ. अंजुम शर्मा
कृति : लोकप्रिय वीडियो-इंटरव्यू शृंखला 'संगत' के 100 एपिसोड की अद्वितीय साहित्यिक यात्रा
प्रकाशन मंच : YouTube Channel – Hindwi



व्योमेश शुक्ल
पुस्तक : आग और पानी
प्रकाशक : रुख पब्लिकेशन
व्योमेश शुक्ल का सम्मान ग्रहण करती राजश्री की भावांजलि सिंह



वाबुषा कोहली
पुस्तक : लौ
प्रकाशक : रूख पब्लिकेशन



Dr. Ravi Dutt Bajpai
Book : Camille Bulcke : The Jesuit Exponent of Ramkatha
Publisher : Cambridge University Press & Assessment



Prof. Swati Parashar
Book : Camille Bulcke : The Jesuit Exponent afRamkatha
Publisher : Cambridge University Press & Assessment



B. L. Mittal
Book : Cracking the Marwari Code: Timeless Proverbs for Business Management
Publisher : Notion Press



Dr. Mayank Murari
Book : Tribal Bravehearts
Publisher : Prabhat Prakashan



Achal Priyadarshy
Book : Tribal Bravehearts
Publisher : Prabhat Prakashan

JMD
JAI MATA DI
OUTDOOR ADVERTISEMENT
JAMSHEDPUR, JHARKHAND, INDIA
9204965321

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



शब्द शिल्पी सम्मान के निर्णायक मंडल का आभार

संजय मिश्र, संपादक, प्रभात खबर
भवानंद झा, संपादक, दैनिक भास्कर
उत्तम नाथ पाठक, संपादक, दैनिक जागरण
गणेश मेहता, संपादक, दैनिक हिंदुस्तान
जयप्रकाश राय, संपादक, चमकता आईना
ब्रज भूषण सिंह, संपादक, इस्पात मेल
उदित अग्रवाल, संपादक, उदित वाणी
संदीप मुरारका, लेखक



20 दिसंबर, 2025 | बैंक लॉन, होटल रमाडा, जमशेदपुर



संजय मिश्र



भवानंद झा



उत्तम नाथ पाठक



गणेश मेहता



जय प्रकाश राय



ब्रज भूषण सिंह



उदित अग्रवाल



संदीप मुरारका

UNITED INFRACORE LTD

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-1

Cracking the Marwari Code: व्यापार और निवेश की समझ

सत्र वक्ता:
बी. एल. मित्तल, उद्यमी सह लेखक, कोलकाता

संवाद सूत्रधार:
विनोद दूबे, साहित्यकार, सिंगापुर

संयोजक:
डॉ. अंजनी किशोर सहाय एवं इंदिरा पांडेय



20 दिसंबर, 2025 | बैंक लॉन, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 14.40- 15.30



B. L. Mittal

A renowned entrepreneur, author, and thinker, widely known for his inspiring work Cracking the Marwari Code: Timeless Proverbs for Business Management, which explores Indian business traditions and Marwari values.
He is respected for blending ethical entrepreneurship with modern business thinking, inspiring entrepreneurs and family businesses across India.

इस पुस्तक का हिंदी अनुवाद भी उपलब्ध है।

Kolkata, West Bengal



Vinod Dubey
Merchant Navy Captain | Poet | Novelist

Born in Bhadohi and currently based in Singapore, Vinod Dubey is a sailor by profession and a writer at heart.
His novels Indiyapa and Okka-Bokka have received wide appreciation among readers.His poetry collections include Weekend Wali Kavita, Jahazi, Betarteeb, and Gullak.
His YouTube channel and Instagram Live series "Weekend Wali Charcha" are highly popular among literature enthusiasts.

Singapore

"सफलता की दौड़ में प्रेम पीछे छूट जाता है।"

विनोद : क्या पैसों की दौड़ चिंता और बीमारी बढ़ाती है?

मित्तल: पैसे के लिए मरना नहीं है, लेकिन उसके लिए दौड़ना ज़रूरी है। वर्तमान में जीना, अतीत से सीखना और भविष्य की योजना बनाना—यही जीवन का सूत्र है। चिंता स्वाभाविक है, पर उसके कारणों को खत्म करना ज़्यादा ज़रूरी है।

विनोद : "सफल सुंदर" की परिकल्पना कैसे हुई?

मित्तल: पिताजी ने कहा था—CA अपने पैसे से करो। पढ़ाई के साथ काम किया, इनकम टैक्स सीखा और वर्षों तक पूँजी बनाई। एक मेडिकल इमरजेंसी ने दवाइयों के क्षेत्र की सच्चाई दिखाई—यहीं से सफल सुंदर का विचार जन्मा।

विनोद : शेयर मार्केट पर युवाओं के लिए आपकी सलाह?

मित्तल: मारवाड़ी कहावत है—"जो करे फटाका, ना वह घर का, ना घाट का।" शेयर बाज़ार में शॉर्टकट नहीं चलते। धैर्य और दीर्घकालिक सोच ही काम आती है। व्यापार के तीन धन हैं—इज़्ज़त, शोहरत और गुणी।

विनोद : प्रेम के बारे में आपकी सोच?

मित्तल: शादी एक मिशन है, पर प्रेम को समय देना भी ज़रूरी है। अक्सर सफलता की दौड़ में प्रेम पीछे छूट जाता है—और यही सबसे बड़ी भूल है।

विनोद : जीवन से मिला कोई संदेश?

मित्तल: व्यस्तता कितनी भी हो, स्वास्थ्य से बड़ा कुछ नहीं। इसे हमेशा पहली प्राथमिकता रखें।



जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-2

बदलता भारत, बदलती मीडिया कहानी

सत्र वक्ता:
डॉ. अंजुम शर्मा, डिप्टी एडिटर, इंडिया टुडे
संवाद सूत्रधार:
संजय मिश्र, पत्रकार
संयोजक:
रीना सिन्हा एवं सुधा गोयल



20 दिसंबर, 2025 | बैंक लॉन, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 15.30 -16.30



Dr. Anjum Sharma
Deputy Editor, India Today

A Voice That Captivates | A Curator of Literary Conversations
The driving force behind the acclaimed video-interview series"Sangat" – 100 compelling episodes that have sparkeda rare and powerful dialogue within contemporary Hindi literature,bringing writers, ideas, and words into vibrant conversationon the Hindwi YouTube channel.

New Delhi



Sanjay Mishra
Journalist

Currently the Editor of the Jamshedpur edition of Prabhat Khabar. With nearly three decades in journalism, he has worked with leading media houses including Dainik Bhaskar and Amar Ujala. Known for his sharp perspective on politics, literature, and society, he represents a thoughtful and intellectually grounded tradition of journalism.

Jamshedpur, Jharkhand

"मीडिया की ताक़त व्यूज में नहीं, सत्य में होती है."

लोकतंत्र के चार स्तंभों में मीडिया को चौथा स्तंभ माना जाता है। जिस गति से भारत प्रगतिशीलता, तकनीक और आधुनिकता की ओर अग्रसर है, उसी गति से मीडिया का स्वरूप भी बदला है। भूमंडलीकरण और डिजिटल क्रांति के इस दौर में सोशल मीडिया और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने न केवल सूचना के प्रसार की दिशा बदली है, बल्कि विचार, विमर्श और साहित्य की दुनिया को भी नए आयाम दिए हैं।

इन्हीं बदलते परिदृश्यों को समझने के लिए जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल के मंच पर इंडिया टुडे के डिप्टी एडिटर डॉ. अंजुम शर्मा से प्रभात खबर, जमशेदपुर संस्करण के संपादक संजय मिश्र ने संवाद किया।

डिजिटल स्पेस और साहित्य का विस्तार

संजय मिश्र : डिजिटल स्पेस में साहित्य के लिए जो जगह बन रही है—खासतौर पर हिंदी भाषी समाज और पूरी हिंदी पट्टी में—आप उसे किस तरह देखते हैं? साथ ही डिजिटल और ए.आई. को लेकर लोगों के मन में जो आशंका है, आप उसे एक युवा पत्रकार के रूप में कैसे देखते हैं?

डॉ. अंजुम शर्मा : सबसे पहले मैं जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल के आयोजकों को धन्यवाद देना चाहता हूँ। सच कहूँ तो यह बिल्कुल नहीं लगता कि यह आयोजन पहली बार हो रहा है। एयरपोर्ट से लेकर होटल तक, हर स्तर पर व्यवस्था इतनी सधी हुई थी कि यह एक परिपक्व और अनुभवी आयोजन प्रतीत हुआ। ऐसे आयोजन कम ही देखने को मिलते हैं, खासकर इंटीरियर क्षेत्रों में, जहाँ युवाओं और आम जनता को सुनने-समझने का अवसर मिलता है।

डिजिटल स्पेस के आने के बाद साहित्य और अभिव्यक्ति के स्वर में बड़ा बदलाव आया है। पहले हम यह नहीं जान पाते थे कि अरुणाचल या हिमाचल में बैठकर कोई लेखिका क्या लिख रही है। सोशल मीडिया ने यह दूरी मिटा दी। कई बार ऐसा हुआ कि हिंदी पट्टी के स्थापित लेखकों से बेहतर लेखन दूर-दराज के क्षेत्रों से सामने आया—बस अंतर इतना था कि उनके पास मंच नहीं था।

अब विमर्श केवल पत्रिकाओं तक सीमित नहीं रहा। संपादकीय हस्तक्षेप कम हुआ है। पहले यह तय करने की सत्ता संपादक के हाथ में होती थी कि कौन लेखक बनेगा और क्या प्रकाशित होगा। यह सत्ता टूटी है—यह अच्छी बात भी है और चुनौती भी। क्योंकि अब यह सवाल उठता है कि उभरता हुआ लेखन गुणवत्तापूर्ण है या नहीं—यह बताने वाला कौन होगा?



डिजिटल युग में हमने लेखकों को इंफ्लुएंसर बनते देखा है और इंफ्लुएंसर को लेखक बनते भी। पहली स्थिति बेहद सकारात्मक है, लेकिन दूसरी जगह एक चिंता भी है। डेढ़ लाख फॉलोअर्स होने के बावजूद किताब की चार-पाँच प्रतियाँ भी न बिकें—तो आत्ममंथन ज़रूरी हो जाता है।

भाषा के स्तर पर भी घालमेल हुआ है। दूसरी भाषाओं के शब्दों का हिंदी में आना स्वाभाविक और स्वागतयोग्य है, लेकिन शुद्धतावादी पीढ़ी इसे सहज नहीं स्वीकारती। इसके बावजूद डिजिटल स्पेस ने नई विधाएँ दी हैं—जैसे ट्विटर पर लघु प्रेम कथाएँ, वायरल कविताएँ, स्लैम पोएट्री। 240-280 शब्दों में भाव कहने की कला विकसित हुई है। स्टोरीटेलिंग और कविता-पाठ की नई पीढ़ी सामने आई है, जो पुराने लेखकों—निर्मल वर्मा, जयशंकर प्रसाद, कमलेश्वर—को भी पढ़ रही है।

मेरे लिए यह दौर अवसरों और कमियों दोनों का है, लेकिन मैं इसे एक बेहतर दौर मानता हूँ।

शेष सामग्री पृष्ठ ... में

Adhunik

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-3

साइलेंट सिनेमा से OTT तक :
Entertainment का Big Shift

सत्र वक्ता:
राजेश जैस, फिल्म अभिनेता, मुंबई
डी. एन. ओझा, पटकथा लेखक, मुंबई
संवाद सूत्रधार:
प्रो. एम. के. पांडेय, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली यूनिवर्सिटी
संयोजक:
डॉ. संध्या सिन्हा



20 दिसंबर, 2025 | बैंक लॉन, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 16.30-17.30



Rajesh Jais

A renowned film actor and an exceptional speaker with a deep emotional connection to his birthplace, Jharkhand.
His words carry a rare blend of cinematic experience and the earthy essence of Jharkhand, making his presence both powerful and deeply rooted.

Mumbai, Maharashtra



D. N. Ojha

An experienced writer-director active in the Mumbai film industry for over two decades.
Writer of popular TV shows S Se Saraswati and Afsar Bitiya, co-writer and researcher of the film Raag Desh, and screenplay writer of Vardaniya.
He is widely known for his research-based work on Indian cinema, Hindustani Silent Cinema.

Jamshedpur, Jharkhand



Prof. (Dr.) M. K. Pandey

Associate Professor at Satyawati College, University of Delhi, a passionate cinema enthusiast and a strong advocate of folk languages and the Indian ethos.
In his view, films are not merely an art form, but the voice of the people and a mirror of society.

New Delhi

डी. एन. ओझा द्वारा लिखित पुस्तक 'चाणी सिहाड' भारतीय साइलेंट सिनेमा के इतिहास पर आधारित एक अत्यंत महत्वपूर्ण और दुर्लभ कृति है. यह पुस्तक उस दौर की कहानी कहती है, जब सिनेमा संवादों से नहीं, बल्कि दृश्यों, भाव-भंगिमाओं और मौन अभिव्यक्ति के माध्यम से दर्शकों से संवाद करता था. भारतीय सिनेमा के आरंभिक वर्षों पर केंद्रित यह पुस्तक न केवल ऐतिहासिक दस्तावेज है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए सिनेमा की जड़ों को समझने का एक सशक्त माध्यम भी है.

कार्यक्रम के सूत्रधार एम. के. पांडे, जो सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं, ने सत्र की शुरुआत अत्यंत विचारोत्तेजक पंक्तियों से की—

"सिनेमा एक दर्शक के तौर पर कुछ दीवानों का ऐसा काम है, जिसमें कीमत-शाक पूँजी लगती है; यह बाजार का भी एक खेल है.

"यह कथन सिनेमा के रचनात्मक और व्यावसायिक द्वंद्व को सटीक रूप से रेखांकित करता है. पटकथा लेखक डी. एन. ओझा ने कहा कि मुख्यधारा और धारावाहिक लेखन से जुड़ाव के बावजूद उन्होंने साइलेंट सिनेमा के इतिहास पर इसलिए काम किया, क्योंकि भारत में इस विषय पर किसी भी भाषा में विस्तृत और प्रामाणिक पुस्तक उपलब्ध नहीं थी. जो सामग्री थी, वह केवल 30–40 पृष्ठों तक सीमित थी और उसमें भी संक्षिप्त भूमिका भर मिलती थी.

'चाणी सिहाड' इस अभाव को दूर करती है और आज से 15–20 वर्ष बाद की युवा पीढ़ी को भारतीय सिनेमा की शुरुआत, संघर्ष और विकास की पूरी कहानी विस्तार से उपलब्ध कराएगी.

भारत का पहला सिनेमाघर इलेक्ट्रिक थिएटर, कोलकाता में 1907 में जमशेदजी फ्रामजी मदन द्वारा बनवाया गया था, जिसका नाम बाद में पैथेलिक थिएटर पड़ा. दुर्भाग्यवश 1911 में इसे ध्वस्त कर दिया गया और सिनेमा की एक अमूल्य स्मृति इतिहास में खो गई.

भारत में सिनेमा की नींव रखने वाले दादासाहब फाल्के, श्रीनाथ पटनकर, हारकाटाम संपत और वी. शांताराम जैसे साहसी लोग थे. सीमित संसाधनों और तकनीकी ज्ञान के बावजूद उन्होंने लंदन से कैमरे मँगवाए और प्रयोगों के सहारे भारतीय सिनेमा को आकार दिया. भारत में कुल लगभग 1350 साइलेंट फिल्में बनीं, जिनमें से आज केवल 27 फिल्में ही सुरक्षित हैं.

शेष सामग्री पृष्ठ ... में



झारखंड
सिर्फ लोकेशन नहीं है, यह
ओपन स्टूडियो
है।

Khetan

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-4

पद्मश्री विभूतियों का सम्मान

मंचासीन:
हरिवंश जी, उपसभापति, राज्यसभा
आबिद सुरती, व्यंग्य चित्रकार, मुंबई
सोपान जोशी, पत्रकार, दिल्ली
संदीप मुरारका, लेखक, जमशेदपुर

पद्मश्री भज्जू श्याम, भोपाल
पद्मश्री जमुना टुडू, चाकुलिया
पद्मश्री डॉ. दमयंती बेसरा, रायरंगपुर
पद्मश्री चामी मुर्मू, राजनगर
पद्मश्री प्रेमलता अग्रवाल, जमशेदपुर
पद्मश्री शशाधर आचार्य, सरायकेला
पद्मश्री छुटनी देवी, सरायकेला

संयोजक:
डॉ. जूही समर्पिता
अनिता निधि



20 दिसंबर, 2025 | बैंक लॉन, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 17.30 -18.30

10 पद्मश्री, 1 मंच और असंख्य प्रेरणाएँ

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल 2025



Bhajju Shyam

A Gond artist who has brought the soul of tribal life, folklore, and nature to the global stage through his distinctive art.
His works are a vibrant confluence of tradition and modernity, giving a new identity to Patangarh art and creating sustainable livelihoods for local communities.
He was honoured with the Padma Shri in 2018.

Bhopal, Madhya Pradesh

Jamuna Tudu

A remarkable Santhal woman and a pioneering environmental activist who led the movement to protect forests in Jharkhand.
She was honoured with the Padma Shri in 2019 for her courageous and impactful work in forest conservation.

Chakulia, East Singhbhum





Dr. Damayanti Besra

An eminent Santhali writer, poet, and a leading voice of cultural identity.
She was honoured with the Padma Shri in 2020 for her outstanding contribution to Santhali language and literature.

Rairangpur, Odisha

Chami Murmu

An inspiring environmentalist who has revitalized nature by leading the plantation of over 3 million trees, giving a new breath of life to the environment.
She was honoured with the Padma Shri in 2024 for her remarkable contribution to environmental conservation.

Rajnagar, Saraikela Kharswan





Premlata Agarwal

An inspiring mountaineer who, through sheer determination and willpower, successfully completed the Seven Summits–scaling the highest peaks on all seven continents.
She was honoured with the Padma Shri in 2013 for her remarkable achievements.

Jamshedpur, East Singhbhum



Shashadhar Acharya

A distinguished exponent, guru, and torchbearer of Chhau dance, who has played a vital role in preserving and promoting this classical dance tradition through performance and training.
He was honoured with the Padma Shri in 2020 for his outstanding contribution to Indian performing arts.

Saraikela Kharswan



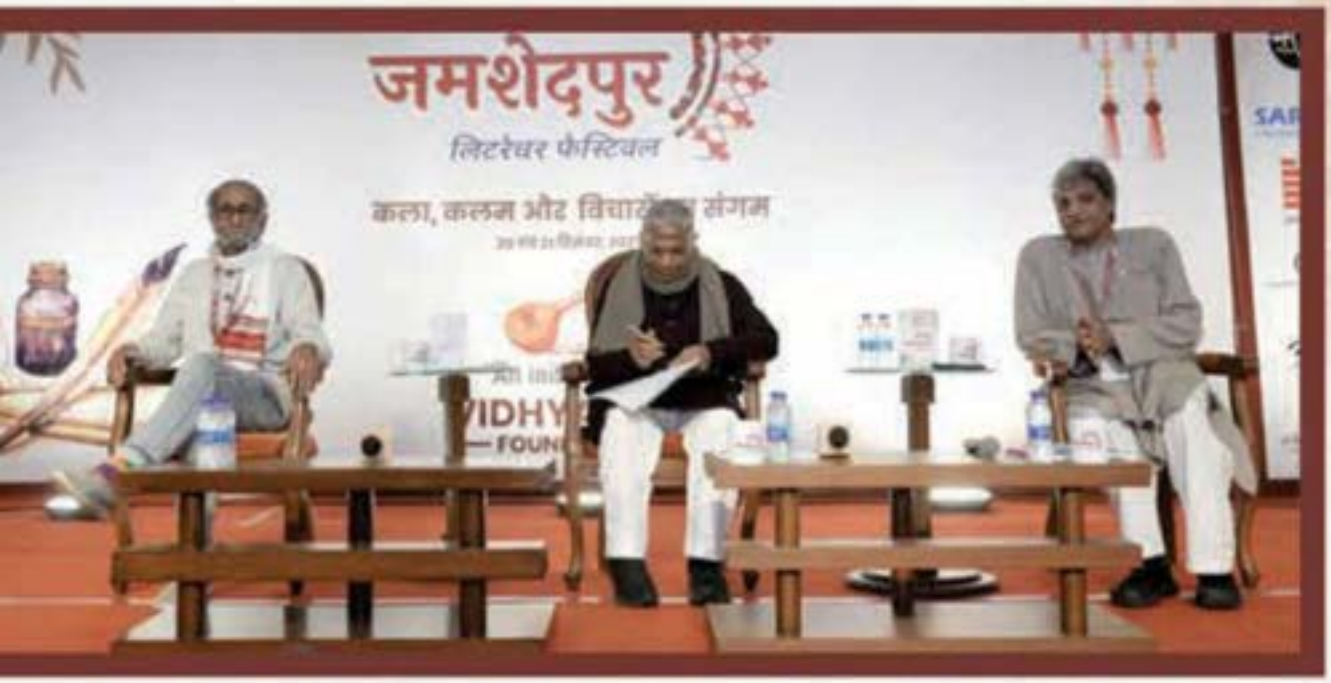
Chhutni Devi

A fearless social activist who stood firmly against the inhuman practice of witch-hunting.
She was honoured with the Padma Shri in 2021 for her courageous fight against this social evil and her work for dignity and justice.

Ghamaria, Saraikela Kharswan

SARLAL
ENGINEERING LIMITED

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-5

संवाद, साहित्य और लोकतंत्र

विशेष उदबोधन:
हरिवंश जी
राज्यसभा के उपसभापति
संयोजक:
डॉ मुदिता चंद्रा



20 दिसंबर, 2025 | बैंक लॉन, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 18.30 - 19.30



Harivansh Narayan Singh

A Vigilant Custodian of Hindi Satire
Editor, Vyangya Yatra

He is a rare blend of simplicity, intellectual depth, and moral clarity. With nearly four decades in journalism, he has led renowned publications such as Dharmayug, Ravivar, and Prabhat Khabar, strengthening democratic discourse. A former media advisor to Prime Minister Chandra Shekhar, he is also a distinguished author whose writings on Jharkhand, Bihar, tribal identity, literature, and democracy continue to inspire thoughtful dialogue and public conscience.

New Delhi

साहित्य संवेदना देता है, साहित्य सहोकार देता है, साहित्य सामूहिक ताकत है. जब दुनिया आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के डेवलपमेंट के कार्यक्रम में व्हाट्सएप से करोड़ों लोग जुड़ रहे हैं, वैसे में आज जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल जैसा उत्सव समाज में कभी नहीं रहा.

सामूहिकता को समझने की ताकत, आत्मबल, उदासी, अकेलेपन के क्षणों में कहाँ से आपको ताकत मिलती है, वह साहित्य ही ताकत देता है, समझ देता है. आदिवासी समाज की सबसे बड़ी ताकत समूह में जीने, रहना है.

विकृत परिस्थितियों में भी खड़ा रहने की प्रेरणा आपको साहित्य देता है. मैं दफ्तर में आते हुए सोच रहा था कि हमने साहित्य से क्या सीखा? तो सबसे पहले मैं आपको बताऊँ तो बहुत वर्षों पहले जिस अखबार में मैं काम करता था, हमने दुनिया के मशहूर किताबों के बारे में नए ढंग से चर्चा की थी और मैंने खुद लिखा था कि किन किताबों ने दुनिया को एक-एक बड़ी प्रेरणा, आत्मबल और साथ दिया?

एक किताब का मैं उल्लेख करूंगा जिस लेखक के घर घर जाने का बड़ा अवसर मिला - "मैन सर्च फॉर मिनिंग". यह फ्रैंकल की किताब है. जिस व्यक्ति को परिवार के साथ, उस परिवार में नाजी कैम्प में रखा गया. उस दौर में उनके परिवार के सारे लोग नहीं रहें. उन विपरीत परिस्थितियों में भी आत्मबल उन्होंने बनाए रखा. वे जीवित रहे और उसके बाद उन्होंने लिखा. यह दुनिया में करोड़ों बिकने वाली किताबों में से है. हमारे यहाँ आदरणीय प्रभास जी ने वो काम सौंपा था. आदरणीय चंद्रशेखर जी की जेल डायरी के दो हिस्सों में संपादन को हम लोग पढ़ रहे थे. उनको हम लोग प्रेरणा स्वरूप देखते हैं. जेल की कोठरी में दो लोगों को पटियाला में रखा गया था. जॉर्ज फर्नांडिस और चंद्रशेखर जी. जब कोई आता नहीं थी, तब वो स्वाभिमान, वो ताकत, उन्हें अकेले रहने की प्रेरणा कहाँ से मिली. यह एक लंबा इकरण होगा फ्रैंकल का, अपने देश के साहित्यकारों का.

और तो और उन्होंने लिखा है कि वे जीवन में जिनसे सबसे अधिक प्रेरित हुए, वो हैं बंकिमचंद्र बाबू और उनका आनंद मठ. जिन्होंने हर एक पल प्रेरणा दी है.

इसी तरह हमने बहुत बाद में, "यूरीपिक" की जेल डायरी जो "फांसी के तख्ते" नाम से हिन्दी अनुवाद है, का एक-एक शब्द हमें प्रेरित करते हैं. इस साल में मैं पाकिस्तान के एक व्यक्ति, जिनके पिता वहाँ की राजनीति के एक बड़े कद के व्यक्ति थे, पंजाब के गवर्नर हुआ करते थे. उनको वहाँ लोगों ने आतंक में मार डाला और उनके बेटे को अपहरण किया, सहबाज तासीर. चौदह वर्षों तक किस रूप में कैद रखा और किस तरह यातनाएं दी, वो यातनाएं जिसकी आप कल्पना तक नहीं कर सकते. शायद पढ़ने के दौरान आपको पढ़ने में भी झिझक हो. उन यातनाओं के बीच कहाँ से उस व्यक्ति को आत्मबल और ताकत मिलती रही कि किस तरह, कहाँ जगह मिलती और कैसे दो भाग निकले? मशहूर किताब है - द मैनोडर ऑफ हेप, कैमिली इंड फाइव ईयर्स इन टेररिस्ट कैप्टिविटी. "ऐसी अनेक किताबें".

संवाद संकलन - डॉ. प्रियंका सिंह



जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल में

श्री हरिवंश जी































हरिवंश
Harivansh

उप सभापति, राज्य सभा
Deputy Chairman, Rajya Sabha

18-01-2026

श्री संदीप मुरारका जी

आयोजक/व्यवस्थापक

जमशेदपुर साहित्य उत्सव

जमशेदपुर, झारखंड

20 दिसंबर 2025 को जमशेदपुर में हुए प्रथम जमशेदपुर साहित्य उत्सव में हमें आमंत्रित करने के लिए आयोजन समिति का धन्यवाद और आभार. आपका यह आयोजन सुंदर,सुव्यवस्थित और सार्थक रहा. इस अवसर पर आयोजन समिति ने झारखंड पर लिखित हमारी किताबों का चयन पुरस्कार के लिए किया. इसके लिए आप सभी का विशेष धन्यवाद और आभार.

हमने आयोजन के समय ही मंच से कहा था कि पुरस्कार की राशि आयोजन समिति अपने विवेक से तय कर भारत सेवा संघ या रामकृष्ण मिशन जैसी किसी संस्था को दे दे. उनसे आग्रह करें कि झारखंड के कोल्हान इलाके के किसी सुदूरवर्ती गांव के छात्र–छात्राओं के बीच एक दिन (रविवार वगैरह) का आयोजन कराये. इस आयोजन में खेल-कूद प्रतियोगिता, स्थानीय सांस्कृतिक आयोजन व भोजन की व्यवस्था हो. इस कार्यक्रम के अंत में रामायण संबंधी प्रश्नोत्तरी या प्रस्तुति भी हो तो और बेहतर.

जो भी संस्था रामकृष्ण मिशन या भारत सेवा संघ इस आयोजन को करे, वे अपने महापुरुषों के बारे में भी बच्चों को बताये.

हमें प्रसन्नता होगी कि पुरस्कार की राशि का उपयोग अगर इस तरह हो. बहुत सुंदर साहित्य उत्सव जमशेदपुर और झारखंड में आयोजित करने के लिए आपको और आयोजन समिति को पुन: बधाई.

(हरिवंश)

Office : 32, Parliament House, New Delhi-110 001 Ph. : 011-23034685, 23034677, 23017371
Fax : 011-23012559 E-mail : office.hdnrajyasabha@sansad.nic.in
Delhi Residence : 14, Akbar Road, New Delhi-110001, Ph.: 011-23010279 Telefax : 23016180
Ranchi Resi.: Vrindavan Colony, Chirondi, Bodya Road, Ranchi, Jharkhand-834006 Ph.: 0651-2551900

YATILYA
CREATIVE & SOLUTION

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-6

सरकारी गलियारों से OTT तक: हिंदी का बढ़ता दायरा

वक्ता:
डॉ. दामोदर खड़से,
साहित्य अकादमी सम्मानित हिंदी साहित्यकार
श्रीमती अंजू रंजन, IFS
कथाकार, कवयित्री सह वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
संवाद सूत्रधार:
डॉ. कुमार विमलेन्दु सिंह,
शिक्षाविद सह फिल्म समीक्षक
संयोजक:
डॉ. भारती कुमारी एवं अधिवक्ता ममता सिंह



20 दिसंबर, 2025 | क्रिस्टल हॉल, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 14.40-15.30



Smt. Anju Ranjan, IFS
Joint Secretary (RBB & IT), Government of India
A distinguished diplomat and a sensitive literary voice; Gold Medalist in Chemistry and MBA (Finance). Recipient of the Nai Dhara Award, she continues to advance the global reach of Indian languages through her creative and cultural initiatives.

New Delhi



Dr. Damodar Khadse
A Sahitya Akademi Award-honoured and eminent Hindi litterateur
Whose writing beautifully blends the earthy fragrance of Marathi soil with the expressive power of the Hindi language, bringing both traditions vividly to life.

Pune, Maharashtra



Dr. Kumar Vimalendu Singh
Academician | Author | Poet | Film Critic
A multifaceted intellectual, whose research opens new pathways at the confluence of cinema and literature.
His contribution to understanding and appreciating film and theatre as powerful art forms is widely acknowledged and deeply impactful.

Patna, Bihar

यह सत्र केवल एक भाषण या वार्तालाप नहीं, बल्कि हिंदी की यात्रा पर एक जीवंत संवाद बन गया—ऐसा संवाद, जिसने सरकारी दफ्तरों की फाइलों से लेकर OTT प्लेटफॉर्म्स की स्क्रीन तक, हिंदी की बदलती भूमिका पर खुलकर चर्चा हुई।

भाषा का विस्तार : संख्या या गुणवत्ता?

डॉ. कुमार विमलेन्दु सिंह : क्या भाषा का दायरा अधिक प्रयोग से बढ़ता है, या गुणवत्ता के संवर्धन से?

डॉ. दामोदर खड़से : भाषा में संख्या और गुणवत्ता एक-दूसरे से अलग नहीं, बल्कि गहराई से जुड़ी हुई हैं। हिंदी की गुणवत्ता से किसी भी कीमत पर समझौता नहीं किया जाना चाहिए, लेकिन जैसे-जैसे अधिक लोग हिंदी का प्रयोग करेंगे, उसकी गुणवत्ता भी स्वतः विकसित होगी।

भाषा का निरंतर प्रयोग ही उसे जीवंत बनाए रखता है।

सिनेमा, भाषा और बदलता बोध

डॉ. खड़से ने सिनेमा का उदाहरण देते हुए बात को और स्पष्ट किया। उन्होंने कहा—मुगल-ए-आजम जैसी फिल्में हमें इतिहास की गहराई में ले जाती थीं, जबकि आज की कुछ फिल्मों की भाषा दर्शक को असमंजस में डाल देती है।

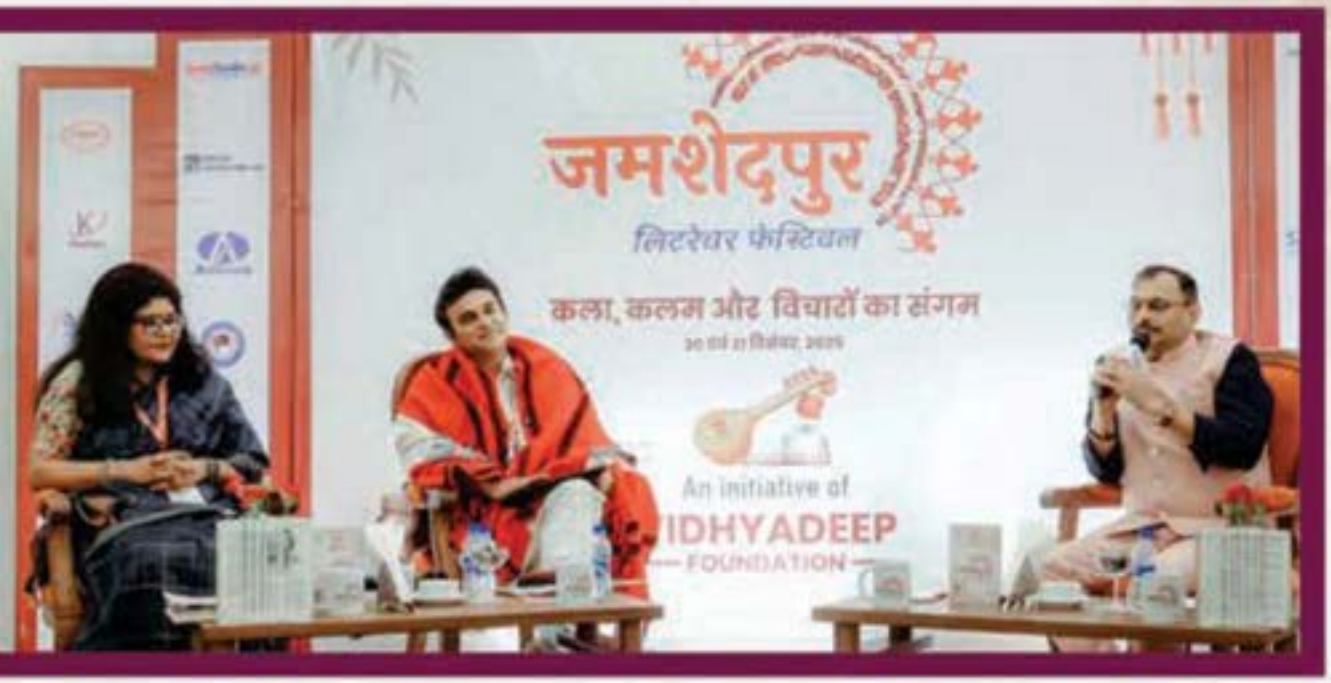
हिंदी की परंपरा कविता, छंद, दर्शन और अलंकार पर आधारित रही है।

भाषा पर बात करते हुए उन्होंने एक महत्वपूर्ण बात कही—कोई शब्द कठिन नहीं होता, वह केवल परिचित या अपरिचित होता है। इसलिए तकनीकी या विदेशी शब्दों के प्रयोग में संतुलन



सौ किताबें पढ़े बिना,
एक किताब लिखना
संभव नहीं.

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-7

बोलचाल की भाषा में कविता : हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी और अन्य भाषाओं की मिली जुली कविता

वक्ता:
सौरभ तिवारी
प्रो. स्वाति पराशर
संवाद सूत्रधार:
वैभवमणि त्रिपाठी
संयोजक:
विद्या तिवारी एवं डॉ. संध्या सिन्हा



20 दिसंबर, 2025 | क्रिस्टल हॉल, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 15.30 - 16.20



Saurabh Tiwari
Additional Secretary, Cabinet Secretariat, Government of India, New Delhi
Author | Speaker | Thinkera
A visionary civil servant whose writings reflect depth, purpose, and compassion. His thoughts bridge governance with human values, inspiring the youth to lead with integrity and imagination.

New Delhi



Prof. Swati Parashar
Author
A distinguished Indian academic, author and international researcher, widely acclaimed for her influential work on global politics, gender studies, and South Asian discourses.

Sweden, Europe



Vaibhav Mani Tripathi
Literature enthusiast | Critic
Rooted in Gorakhpur and serving in the Jharkhand Registration Service, he actively contributes to Jharkhand's literary life. His reviews of books and films are known for their clarity, honesty, and perceptive insight.

Jamshedpur, Jharkhand

"बोलचाल की भाषा में कविता: हिंदी, उर्दू, अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं की मिली-जुली कविता" विषय पर एक अत्यंत विचारोत्तेजक और ज्ञानगर्भित सत्र का आयोजन किया गया, जिसने श्रोताओं को भाषा, कविता और अभिव्यक्ति के वर्तमान तथा भविष्य पर गंभीरता से सोचने को प्रेरित किया।

संवाद सूत्रधार वैभव मणि त्रिपाठी ने विमर्श की भूमिका रखते हुए यह प्रश्न उठाया कि—क्या भाषा का दायरा अधिकाधिक प्रयोग से बढ़ता है, या शुद्धता के संरक्षण से?

इस प्रश्न के उत्तर में सौरभ तिवारी ने स्पष्ट किया कि भाषा में संख्या और गुणवत्ता एक-दूसरे से लगातार से जुड़ी होती हैं।

उन्होंने कहा कि हिंदी की गुणवत्ता से समझौता नहीं किया जाना चाहिए, किंतु जैसे-जैसे अधिक लोग हिंदी का प्रयोग करेंगे, उसकी गुणवत्ता भी स्वतः विकसित होगी। भाषा का निरंतर प्रयोग ही उसे जीवंत बनाए रखता है।

कविता को जज करना नहीं, समझना चाहिए—सौरभ तिवारी ने इस बात पर विशेष बल दिया कि कवियों को जज करना उचित नहीं है। कोई यह तय नहीं कर सकता कि कवि अपनी कविता में क्या लिखेगा या किस भाषा का प्रयोग करेगा। साहित्यकारों को अपनी रचना और भाषा के चयन में पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए।

उन्होंने एक आत्मीय उदाहरण साझा करते हुए बताया कि उनके घर की सहायिका की बेटी उनकी लिखी कविता को गुनगुना रही थी। इस प्रसंग के माध्यम से उन्होंने कहा—"जब कविता व्यक्ति से व्यक्ति तक पहुँचती है, तभी रचना वास्तव में सफल होती है।

"उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि हिंदी की परंपरा कविता, छंद, दर्शन और अलंकार पर आधारित रही है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि भाषा को जड़ बना दिया जाए।

शब्द: कठिन नहीं, केवल अपरिचित भाषा के संदर्भ में सौरभ तिवारी ने एक महत्वपूर्ण बात कही—कोई शब्द कठिन नहीं होता; वह या तो परिचित होता है या अपरिचित। इसलिए तकनीकी या विदेशी शब्दों के प्रयोग में संतुलन आवश्यक है। भाषा पर जबरन शुद्धतावाद थोपना उचित नहीं—बल्कि सहज और स्वाभाविक विकास का मार्ग अपनाया जाना चाहिए।

"आलोचना से पहले आत्ममंथन जरूरी"





सत्र-8

पूर्वोत्तर गीता ज्ञान यात्रा का शुभारंभ

उद्घोषणा:
प्रो. (डॉ.) रंजन त्रिपाठी
संदीप मुरारका
संयोजक:
प्रसेनजीत तिवारी



20 दिसंबर, 2025 | क्रिस्टल हॉल, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 16.20 - 16.40



Prof. (Dr.) Ranjan Kumar Tripathi
A Dean, Students' Welfare,
University of Delhi
An exceptional orator who vividly bridges ideas ranging from Shankaracharya's Advaita philosophy to Savarkar's vision of nationhood. In his words, spirituality, nationalism and literature flow together as a single cultural current, awakening a deep resonance with the soul of India.

New Delhi



Prasenjit Tiwari
Literary Patron
Honorary General Secretary of Singhbhum Zila Hindi Sahitya Sammelan (Tulsi Bhavan). Professionally associated with Tata Steel and a dedicated worker of the Rashtriya Swayamsevak Sangh. Though not a writer, he is a key pillar of Jamshedpur's literary ecosystem.

Jamshedpur, Jharkhand



Sandeep Murarka
Author | Speaker | Voice on Tribal Issues
A prominent contemporary Hindi writer known for articulating the success stories of tribal communities through research-driven and empathetic writing. Actively engaged in promoting the translation of the Shrimad Bhagavad Gita into tribal languages, with special focus on the Northeast.

Jamshedpur, Jharkhand

Heritage in Every Script — Gita in Every Voice.
हर लिपि में विरासत — हर स्वर में गीता

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल में विद्यादीप फाउंडेशन की दूरदर्शी एवं सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण भावी योजना "पूर्वोत्तर गीता ज्ञान यात्रा" के शुभारंभ की औपचारिक घोषणा दिल्ली विश्वविद्यालय के डीन (स्टूडेंट्स वेलफेयर) प्रो. (डॉ.) रंजन कुमार त्रिपाठी द्वारा की गई. इस अवसर पर अपने संबोधन में उन्होंने कहा—"पूर्वोत्तर भारत—जहाँ गगन धरती को चूमता है, जहाँ सूरज सबसे पहले मुस्कराता है. असम से अरुणाचल तक घाटियाँ बोलती हैं, मिजोरम से मणिपुर तक नदियाँ गीत गाती हैं. यह केवल भौगोलिक विस्तार नहीं, आत्मा का विस्तार है.

"उन्होंने रेखांकित किया कि पूर्वोत्तर भारत में 8 राज्य, 130 से अधिक जनजातियाँ, 200 से अधिक भाषाएँ, 300 से अधिक बोलियाँ और 10 से अधिक लिपियाँ विद्यमान हैं, किंतु इसके बावजूद श्रीमद्भगवद्गीता अब तक संभवतः केवल तीन ही पूर्वोत्तर भाषाओं में अनूदित हो सकी है.

उन्होंने उपलब्ध अनुवादों का संदर्भ देते हुए बताया कि—मणिपुरी भाषा में श्रीमद्भगवद्गीता का अनुवाद कलाचंद शास्त्री द्वारा वर्ष 1961 में प्रकाशित हुआ,कार्बी भाषा में गीता का अनुवाद पद्मश्री प्रो. (डॉ.) सोंगबोंग तेरांग द्वारा किया गया,तथा असमिया भाषा में भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद द्वारा अनूदित "भगवद्गीता ऐज इट इज़" वर्ष 2009 में प्रकाशित हुई.

अपने वक्तव्य को आगे बढ़ाते हुए प्रो. (डॉ.) रंजन कुमार त्रिपाठी ने कहा—गीता केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि एक भावयी और .....

शेष सामग्री वृत ... में



जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-9

North-East Echoes : भारत के सबसे रंगीन कोने से बातचीत

वक्ता:
मोर्जुम लोयी
डॉ. तादाम रुती
संवाद सूत्रधार:
जयप्रकाश राय
संयोजक:
डॉ. रागिनी भूषण एवं पामेला घोष दत्ता



20 दिसंबर, 2025 | क्रिस्टल हॉल, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 16.40 - 17.30



Morjum Loyi
Assistant Professor of Hindi Literature, Bini Yanga Government Women's College, Lekhi, Itanagar
A distinguished writer and author of the novel 'Minam', the Galo tribal folk songs 'Nanam Ponnu' and the folk tales collection 'Kabu'.

Arunachal Pradesh



Dr. Tadam Uti
Assistant Professor, Hindi Department, Government College, Doimukh, Arunachal Pradesh
A committed Hindi academic and the first translator of the Shrimad Bhagavad Gita into the Galo language, working to make spiritual knowledge accessible through language and culture.

Arunachal Pradesh



Jai Prakash Rai
Journalist
With over three decades of active engagement in third-generation journalism, he is widely respected for his sharp insight into social and political dynamics. A skilled speaker and a person of simple, grounded demeanor, he is currently the Editor of the Jamshedpur daily newspaper Chamakta Aaina.

Jamshedpur, Jharkhand

"संवाद दूरियाँ मिटाते हैं, दृष्टियाँ बदलते हैं"

जयप्रकाश राय: मोर्जुम लोयी जी, कहा जाता है कि भारत में सबसे पहले सूर्योदय अरुणाचल प्रदेश में होता है. उस सुबह का अनुभव कैसा होता है?

मोर्जुम लोयी: हमारे यहाँ ब्रह्म मुहूर्त के लगभग आधे घंटे बाद, यानी सुबह करीब 4:30 बजे, सूरज उग आता है.उस समय का दृश्य बेहद खूबसूरत होता है. सूर्य की किरणें अरुणाचल के अंतिम छोर को स्पर्श करती हुई पहाड़ों पर फैल जाती हैं. उन किरणों को अपने चारों ओर समेटे पहाड़ पर चढ़ना, वह अनुभव आत्मा को गहरी शांति देता है.

जयप्रकाश राय: यह सुनकर लगता है कि वहाँ प्रकृति केवल दृश्य नहीं, बल्कि जीवन का अभिन्न हिस्सा है.

मोर्जुम लोयी: बिल्कुल! हम जब घर बनाते हैं, तब भी यह विशेष रूप से देखा जाता है कि सूर्य की किरणें कहाँ और कैसे पड़ेंगी. हमारा जीवन प्रकृति के साथ संतुलन में चलता है.

जयप्रकाश राय: यानी जिसे हम वास्तु शास्त्र कहते हैं, वह आप लोगों की पुरखों की परंपरा में सहज रूप से चला आ रहा है.

जयप्रकाश राय: डॉ. तादाम, आप श्रीमद्भगवद्गीता का भाषानुवाद अपनी मातृभाषा गालो में करने जा रहे हैं. यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कार्य है. इसकी प्रेरणा आपको कहाँ से मिली?

डॉ. तादाम उती: मैंने भक्तिकाल, रामायण, महाभारत और गीता का बहुत मनोयोग से अध्ययन किया है. संदीप जी से साहित्य और ग्रंथों पर अक्सर चर्चा होती रहती थी. इसी बातचीत के दौरान एक दिन उन्होंने सहज रूप से कहा—"आप गीता का अनुवाद अपनी भाषा में क्यों नहीं करते?"

शेष सामग्री पृष्ठ ... में



IHC
Industrial Hardware Corporation

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-10

व्यंग्य की धार : राजनीति, समाज और सच

वक्तागण:
डॉ. प्रेम जनमजेय, नई दिल्ली
मुकेश नेमा, इंदौर
संवाद सूत्रधार:
नवीन कुमार अग्रवाल, जमशेदपुर
संयोजक:
डॉ. अरुण सज्जन



20 दिसंबर, 2025 | क्रिस्टल हॉल, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 17:30 - 18:20



Dr. Prem Janmejay
A Vigilant Custodian of Hindi Satire
Editor, Vyangya Yatra
Editor, 'Vyangya Yatra'; a renowned satirist, storyteller and editor whose writing blends sharp humor with deep social sensitivity and a keen critical gaze.

New Delhi



Mukesh Nema
Additional Commissioner,
Excise Department, Madhya Pradesh
A renowned satirist and author of several satire collections, including the popular 'Sahabnama'. His writing reflects a remarkable blend of administrative experience and sharp social satire.

Indore, Madhya Pradesh



Naveen Kumar Agrawal
A Prominent Voice in Humorous Satire | Skilled Stage Host | Poet
Secretary of the poets' forum Hulas and actively associated with leading social organizations. His works have been published in prominent magazines and journals.

Jamshedpur, Jharkhand

नवीन का प्रश्न: राजनीति, समाज, सच और व्यंग्य– इनमें आप क्या संबंध देखते हैं?

प्रेम ज.: व्यंग्य का राजनीति एवं समाज से रिश्ता बहुत पुराना है। हमें उपनिषदों, वेदों, रामायण– यहाँ तक कि महाभारत में भी व्यंग्य के उदाहरण मिलते हैं। द्रौपदी का वह कथन– "अंधे का पुत्र अंधा"– यदि व्यंग्य नहीं है, तो फिर क्या है?

मुकेश ने.: राजनीति और समाज गाड़ी के दो पहिए की तरह होते हैं, जहाँ सच चालक की भूमिका में होता है क्या व्यंग्य स्टेपनी की तरह काम करता है। चालक को भरोसा होता है कि स्टेपनी है, इसलिए गाड़ी रुकती नहीं।

नवीन का प्रश्न: राजनीति एवं समाज में व्यंग्य की क्या भूमिका है?

प्रेम ज.: व्यंग्य डॉक्टर के हाथ में वह चाकू है, जो समाज की बीमारियों को ठीक करने के लिए चीरा लगाता है। चाकू की धार चुभती जरूर है, लगता उसी से बीमारी का इलाज होता है।

मुकेश ने.: व्यंग्य सासू माँ के ताने की तरह होता है, जो समाज-रूपी बहू को सदैव सही और गलत की पहचान कराता रहता है।



> "जहाँ सच बोलना कठिन हो जाए, वहाँ व्यंग्य सबसे सशक्त भाषा बन जाता है।

नवीन का प्रश्न: लोग अक्सर हास्य को व्यंग्य समझ लेते हैं। व्यंग्य में हास्य कितना आवश्यक है?

प्रेम ज.: व्यंग्य में हास्य का संतुलन आवश्यक है। हास्य व्यंग्य को रोचक बनाता है, लेकिन उसकी अधिकता व्यंग्य को चुटकुले में बदल सकती है। व्यंग्य करुणा की अभिव्यक्ति है, हास्य की नहीं।

मुकेश ने.: इसे यूँ समझिए– हास्य वह है, जो हम साली से गुफ्तगू में करते हैं; लेकिन साले के ताने तीखे होते हैं– ठीक व्यंग्य की तरह।

प्रश्न पूछते लेखक अरविंद यादव, आसनसोल

KUSHAL PALLI

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



ठंड की साँझ :
राहगीर के गीतों के साथ

राहगीर (सुनील कुमार गुर्जर, राजस्थान)
गीतकार, गायक

पुस्तकें:
समझ गए या समझाऊँ?
कैसा कुत्ता है!
आहिल



20 दिसंबर, 2025 | बैंक लॉन, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 20.00 - 22.00


जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल
कला, कलम और विचारों का संगम
An initiative of
VIDHYADEEP













"अभी है बाप जिंदा, बेटे बंटवारे को लड़ गए!
भाई राहगीर, ये हम कौन सी गाड़ी पे चढ़ गए?"





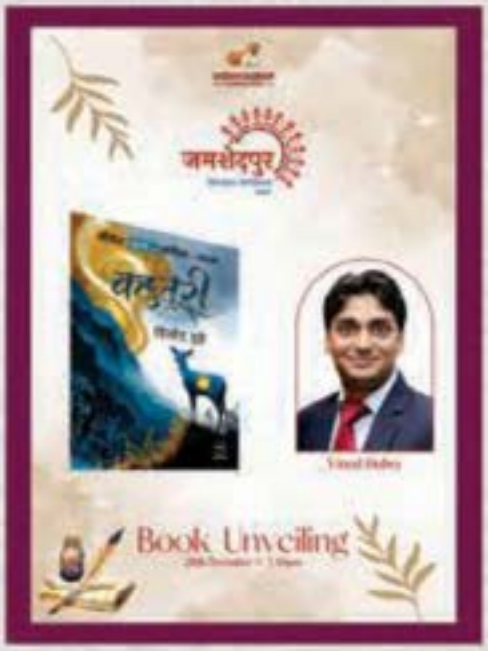
SURYA TRAVELS
Making Travel Simple

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल

सिंगापुर से आए प्रवासी साहित्यकार विनोद कुमार दुबे के कविता-संग्रह 'कस्तूरी' का लोकार्पण।

अतिथि: बी. एल. मित्तल

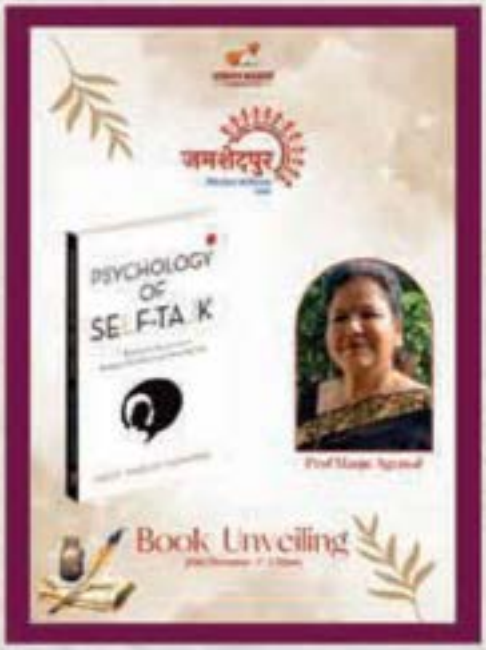




Book of Prof. Manju Agrawal (Lucknow)
Psychology of Self Talk

Unveiling by Shri Harivansh





01 नवंबर, 2025

मीडिया कवरेज : जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल



'जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल 2025' 20-21 दिसंबर को

हिन्दुस्तान www.livehindustan.com अपना जमशेदपुर

साहित्य, संगीत और ओटीटी के सितारों का 20 से होगा जुटान

साहित्य, पत्रकारिता, संगीत व ओटीटी के सितारे एक प्लेटफॉर्म पर नजर आएंगे- पद्म पुरस्कार प्राप्त विभूतियों और लेखकों को किया जाएगा सम्मानित

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल 20-21 दिसंबर को, जुटेंगी हस्तियां

जमशेदपुर

ये सितारे होंगे शामिल

इनसे मिलेगा एक विशेष सम्मान

नाम	पुरस्कार
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

क्या होगा खास

पद्म अलंकृत विभूतियों का होगा सम्मान

साहित्य महोत्सव में जुटेंगे हरिवंश और पंचायत वेब सीरीज वाले विधायक जी

20-21 दिसंबर को 'जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल 2025' साहित्य पत्रकारिता, संगीत और ओटीटी के सितारे उतरेंगे लौहनगरी की धरा पर

जमशेदपुर

27 नवंबर, 2025

मीडिया कवरेज : जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल

दैनिक भास्कर जमशेदपुर 27-11-2025

लिटरेचर फेस्टिवल में होगी रंगों की कार्यशाला

21 को सजेगा कला, संवाद व जनजातीय विरासत का संगम

चित्रकार मनीष पुष्कले, पद्मश्री भजू व ऋतु शर्मा बनाएंगी पेंटिंग्स

स्टाफ रिपोर्टर | जमशेदपुर

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल में कला और सृजन का रंग भी देखने को मिलेगा। आयोजन के दूसरे दिन 21 दिसंबर को डीटाल एनाक्स के क्रिस्टल हॉल में कला जगत के लिए विशेष सत्र और कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी, जिनमें देश के नामचीन कलाकार शामिल होंगे। दिन की शुरुआत एक भव्य कला-कार्यशाला से होगी, जिसका संचालन भारतभवनी के चर्चित आर्टिस्ट आकांक्षा सिंह एवं रांची की मोहतरम आर्टिस्ट पुलिन सिन्हा करेंगी। इसमें प्रतिभागियों को पहला को पारंपरिक जनजातीय कला शैली और मोहतरम की तकनीक, भावनाओं और सांस्कृतिक जड़ों समझने का अवसर मिलेगा। कार्यशाला में लगभग डेढ़ो, ब्रश तकनीक और रंगों की भाषा पर विस्तार से चर्चा होगी।

कैनवास की जीवनी पर केंद्रित होगा सत्र

चित्रकला के दूसरे सत्र में जमशेदपुर में पहली बार चित्रकार मनीष पुष्कले, चित्रचित्रकथा गौंड कलाकार पद्मश्री भजू श्याम (गोंगत) एवं सोशोडीटी की अतिथिनत सहनिदेशक ऋतु शर्मा एक ही मंच पर उपस्थित होंगे। यह सत्र "कैनवास की जीवनी" पर केंद्रित होगा, जहां कला के दर्शन, रंगों की संवेदना और भारतीय लोक-आदिवासिक के सौंदर्य पर खुल चर्चा की जाएगी। सत्र का संचालन जयपुर की प्रो. प्रभु सुमना करेंगी, जिनके मार्गदर्शन में संवाद को विशिष्ट दिशा मिलेगी। सत्रों के बाद विभिन्न महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं के लिए प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित किया जाएगा, जिसमें युवा कलाकार देश के प्रतिष्ठित पेंटरों से सीधे संवाद कर सकेंगे। आयोजन समिति के आकाश मोदी ने कहा कि यह आयोजन जमशेदपुर को कला-संस्कृति को राष्ट्रीय मंच से जोड़ने का बड़ा अवसर है। सत्र कला क्षेत्र के छात्र-छात्राओं के लिए अत्यंत लाभकारी होगा। आयोजन समिति की डॉ. जुही समर्पिता ने कहा कि जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल का यह कला-केंद्रित दिवस शहर की रचनात्मकता को नया आयाम देगा। कला, संवाद और जनजातीय विरासत, तीनों का अनोखा संगम 21 दिसंबर को क्रिस्टल हॉल में देखने को मिलेगा।

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल का आयोजन 20 दिसंबर से



जमशेदपुर। आगामी 20 और 21 दिसंबर को बिष्टुपुर स्थित होटल में आयोजित होने वाले जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल के दूसरे दिन कला से जुड़े विशेष सत्र और कार्यशालाएं आयोजित होंगी। रविवार 21 दिसंबर को सुबह 9:45 बजे "कैनवास-द्रश्य पर्सपेक्टिव" में पद्मश्री आर्टिस्ट आकांक्षा सिंह और मोहतरम आर्टिस्ट पुलिन बिहार प्रतिभागियों को पारंपरिक कला शैली के मूल सिद्धांत और तकनीकें सिखाएंगे। इसके बाद 'कैनवास की जीवनी' विषयक सत्र में समकालीन कला के जाने-माने कलाकार मनीष पुष्कले, पद्मश्री सम्मानित अंतरराष्ट्रीय गोंड कला कलाकार भजू श्याम और भारतीय रोजगार सेवा की अधिकारी एवं लेखिका ऋतु सिंह अपनी कला यात्रा, अनुभवों और कृतियों के सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण पर चर्चा करेंगी। इस सत्र का संचालन डॉ. प्रभु सुमना करेंगी। आयोजक समिति ने बताया कि कला-प्रेमियों, छात्रों और उभरते कलाकारों के लिए यह अवसर महत्वपूर्ण है, जिसमें वे न केवल कला अवधारणा परिवेदों वरिष्ठ आधुनिक कलाकारों के साथ सीधा संवाद भी स्थापित कर सकेंगे। समिति ने इच्छुक प्रतिभागियों से समय पर पंजीकरण कराने की अपील की है।

बिष्टुपुर में 20 व 21 दिसंबर को होने वाले फेस्टिवल में देशभर के कलाकार होंगे शामिल

कलाकारों को जोड़ेगा लिटरेचर फेस्टिवल



ये दिग्गज आएंगे शहर का लाइव

08 दिसंबर, 2025

मीडिया कवरेज : जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल

देश के विख्यात खोजी पत्रकार और लेखक सोपान जोशी का होगा विशेष उदबोधन



लिटरेचर फेस्टिवल में डा . दिनेश को मिलेगा विद्यादीप जल संस्कृति सम्मान





20-21 को होटल रामाडा में लिटरेचर फेस्टिवल, सोपान जोशी और डॉ दिनेश होंगे मुख्य आकर्षण

- जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल 2025: साहित्य, समाज और पर्यावरण को साझा मंच मिलेगा



फेस्टिवल डायरेक्टर दिनेश सिंह, चीफ पेट्रन सोपान जोशी और मीडिया प्रभारी।

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल में होंगी पर्यावरण और पत्रकारिता की बातें



देश के विख्यात खोजी पत्रकार और लेखक सोपान जोशी करेंगे विशेष उदबोधन



11 दिसंबर, 2025

मीडिया कवरेज : जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल में रंग भरेगा कार्टून और कैरिकेचर का जादू





जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल में शामिल होंगे राहगीर







राहगीर — मनोज कुमार सिंह — आबिद सुरती

दैनिक भास्कर जमशेदपुर 11-12-2025

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल में रंग भरेगा कार्टून और कैरिकेचर का जादू

शहर में पहली बार आयोजित हो रहे फेस्टिवल को लेकर कारोबारियों और उद्योगपतियों में दिख रहा अत्यधिक उत्साह

आबिद सुरती और मनोज सिन्हा भी मुंबई से इस उत्सव में होंगे शामिल



आबिद सुरती, मुंबई



मनोज सिन्हा, पूर्व डिप्टी



राहगीर, फेस्टिवल

29 नवंबर, 2025

मीडिया कवरेज : जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल

आयोजन. विद्यादीप फाउंडेशन की ओर से 20 व 21 दिसंबर को बिष्टुपुर में होगा जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल

पहले दिन व्यापार, सिनेमा व मीडिया पर होगी चर्चा

जमशेदपुर

लाइव रिपोर्टर @ जमशेदपुर

विद्यादीप फाउंडेशन की ओर से 20 व 21 दिसंबर को बिष्टुपुर के एक होटल में जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल का आयोजन किया जायेगा. इस जानकारी फाउंडेशन की ओर से देते सिद्धार्थ जयी कर दी गयी.

पहले दिन अगस्त 3:30 बजे

विभूतियों का होगा सम्मान

आयोजन समिति के सचिव संतोष खेतान ने बताया कि पहले दिन सायं 5.30 बजे देश के पद्मश्री सम्मान विभूतियों का सम्मानित किया जायेगा. इस दौरान राजस्थान के पद्मश्री भजनु शर्मा, पद्मश्री सुलतान अली, ओडिशा के गोंड चित्रकार पद्मश्री भज्जु श्याम, छत्तीसगढ़ से पद्मश्री जमुना टुडू, उत्तराखंड की संतली लेखिका डॉ उषाकिरण रेतान, राजस्थान की रंगकर्मी पद्मश्री बानी मुर्मू, पानभूमाद के लेखक पद्मश्री डॉ अनुज सिंह नेगी, सिक्किम की लेखिका डॉ पद्मा अर्जुन सहित अन्य पद्मश्री विभूतियों को सम्मान करने वाली पहली पद्मश्री विभूति अरुणाचल प्रदेश, अंतरराष्ट्रीय तीरंदाज पद्मश्री दीपिका कुमारी और ढोल वादक पद्मश्री पूर्णो देवी को सम्मानित किया जायेगा.

लिए चर्चित हैं. उनके जमशेदपुर के चर्चित पत्रकार मंजय सिंह चर्चा करेंगे.

लाइटर सिनेमा से ओटीटी तक का सफर : संध्या 4.30 बजे फिल्म निर्माता एवं लेखक प्रकाश झा झारखंड में फिल्म निर्माण की संभावनाओं पर प्रकाश डालेंगे. इसी सत्र में साहित्य सिनेमा से ओटीटी तक के सफर पर चर्चा होगी. इसमें पटकथा लेखक दीपक ओझा और दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म की पूर्व निदेशक डॉ भारती पोरे शामिल होंगी. इस सत्र का संचालन सामाजिक कार्यकर्ता, दिल्ली यूनिवर्सिटी के प्रो एमके पांडेय करेंगे.

होम पुस्तक विमोचन : आयोजन समिति की सदस्य डॉ संध्या सिन्हा ने बताया कि लक्ष्मण की डॉ मंजु अग्रवाल की पुस्तक साइकोलॉजी ऑफ सेल्फ टॉक व अन्य किताबों का लोकार्पण किया जायेगा. आयोजन समिति के अधिवेशन सोरेन ने बताया कि यह फेस्टिवल ज्ञान, प्रेरणा और रचनात्मकता का संगम है. फाउंडेशन के लिए पहलीबार प्रयास किया जा रहा है. इसके लिए आयोजन समिति से संपर्क किया जा सकता है.

दैनिक भास्कर जमशेदपुर 29-11-2025

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल • विद्यादीप फाउंडेशन की ओर से 20-21 दिसंबर को होटल रमाडा में होगा समारोह

व्यापार, निवेश, सिनेमा पर होगी चर्चा, पद्मश्री विभूतियों को मिलेगा सम्मान








पद्मश्री विभूतियों का होगा सम्मान; आयोजन समिति के संचालक संतोष खेतान ने बताया कि पहले दिन संध्या 5.30 बजे देश के विभिन्न पद्मश्री सम्मानितों को सम्मानित किया जायेगा. इस दौरान राजस्थान के पद्मश्री लक्ष्मण सिंह, ओडिशा के गोंड चित्रकार पद्मश्री भज्जु श्याम, छत्तीसगढ़ से पद्मश्री जमुना टुडू, उत्तराखंड की संतली लेखिका डॉ. उषाकिरण सेतान, राजस्थान की रंगकर्मी पद्मश्री बानी मुर्मू, पानभूमाद के लेखक पद्मश्री डॉ. अनुज सिंह नेगी, सिक्किम की लेखिका डॉ. पद्मा अर्जुन सहित अन्य पद्मश्री विभूतियों को सम्मान करने वाली पहली पद्मश्री विभूति अरुणाचल प्रदेश, अंतरराष्ट्रीय तीरंदाज पद्मश्री दीपिका कुमारी, अरुणाचल से पुरस्कारों से सम्मानित करने वाले पद्मश्री ढोल वादक पद्मश्री पूर्णो देवी होंगी.

लाइटर सिनेमा से ओटीटी तक

पहले दिन संध्या 4.30 बजे से फिल्मी दुनिया के सिक्का जिसमें फिल्म लेखन संवाद और सिनेमा के जाने-माने लोगों से संवाद करेंगे. वे झारखंड में सिनेमा निर्माण की संभावनाओं पर भी प्रकाश डालेंगे. इसी सत्र में साहित्य सिनेमा से ओटीटी तक बदले दौर पर दूरदर्शन पुणे पर पूर्व निदेशक डॉ. भारती पोरे चर्चा में भाग लेंगी. सत्र का संचालन सामाजिक कार्यकर्ता, दिल्ली यूनिवर्सिटी के प्रो एमके पांडेय करेंगे.

01 दिसंबर, 2025

मीडिया कवरेज : जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल



जमशेदपुर 01-12-2025

पर्यावरण, पौधरोपण, जल संरक्षण व जनभागीदारी पर रहेगा विशेष फोकस

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल में पर्यावरण और जल संरक्षण पर होगी गहन चर्चा

20-21

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल के दूसरे दिन पर्यावरण, वृक्षारोपण और जल संरक्षण पर होगी चर्चा

आकर्षण के केन्द्र 90 वर्षीय आखिद सुरमो होंगे

पर्यावरण, पौधरोपण व जल संरक्षण पर होगी चर्चा

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल में पर्यावरण, वृक्षारोपण और जल संरक्षण पर होगी गहन चर्चा

राजस्थान से आ रहे हैं पद्मश्री सुकराम दर्रा और पद्मश्री लक्ष्मण सिंह

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल 20-21 दिसंबर को, पर्यावरण, जल संरक्षण और जनभागीदारी पर केंद्रित होगा दो दिवसीय आयोजन

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल में पर्यावरण, पौधरोपण और जल संरक्षण पर होगी गहन चर्चा

राजस्थान से आ रहे हैं पद्मश्री सुकराम दर्रा और पद्मश्री लक्ष्मण सिंह

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल 20-21 दिसंबर को, पर्यावरण संरक्षण रहेगा मुख्य फोकस

03 दिसंबर, 2025

मीडिया कवरेज : जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल

दैनिक भास्कर जमशेदपुर 03-12-2025

जुटेंगे साहित्यकार • बिष्टुपुर के होटल रमाडा में 20-21 दिसंबर को पत्रकारिता और चित्रकला पर होंगी विशेष कार्यशालाएं

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल में कविता, व्यंग्य व हिंदी पर होगी ज्ञानवर्धक चर्चा



अंजू रंजन | अमर पांडेय | दामोदर खड़से | पांचाली दास | पीयूष पुष्कम | प्रेम जनमेजय | मदन मोहन दानिश | सौरभ त्रिपाठी | शशि पालार



"हिंदी का वैश्विक विस्तार और बढ़ती स्वीकार्यता" विषय पर होगी चर्चा



जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल : गजल, कविता, व्यंग्य और हिंदी की होगी धमाकेदार चर्चा



जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल: साहित्य, व्यंग्य, कविता और भाषा पर होगा मंथन

लिटरेचर फेस्टिवल 20 से, कविता, व्यंग्य व हिंदी पर होगी चर्चा

- दो दिवसीय कार्यक्रम में कई विशेष सत्र
- देशभर के साहित्यकार व कलाकार होंगे शामिल



अंजू रंजन, आईएएस | प्रेम जनमेजय, व्यंग्यकार | पांचाली दास, डायरेक्टर | डॉ. शशि पालार

मदन मोहन दानिश | दामोदर खड़से, पुणे | सौरभ त्रिपाठी, नई दिल्ली | अमर पांडेय, इंदौर | पीयूष पुष्कम

06 दिसंबर, 2025

मीडिया कवरेज : जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल

पूर्वोत्तर से लेकर दिल्ली तक, भारत के विचार मानचित्र को जोड़ता एक ऐतिहासिक आयोजन







जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल

जमशेदपुर, 5 दिसंबर :- आगामी 20 एवं 21 दिसंबर 2025 को विवेकोदय फाउंडेशन द्वारा जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल का भव्य आयोजन होटल रामाडा, बिस्टुपुर में किया जा रहा है. यह महोत्सव केवल साहित्य का उत्सव नहीं, बल्कि संवाद, संवेदना और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का आयोजक संगम होगा, जहाँ समाज, साहित्य और सृजन एक सशक्त मंच पर एकत्रित होंगे.

देश के विभिन्न क्षेत्रों से 100 से अधिक प्रतिष्ठित लेखक, विचारक, कलाकार, पद्म सम्मानित विभूतियाँ, युवा उद्यमकर्मक और कई सामाजिक संगठनों इस आयोजन में शिरकत करेंगी. दो दिवसीय इस महोत्सव में 25 से अधिक सत्र, सांस्कृतिक संध्या, पुस्तक संवाद, कविता-पाठ, बुक लॉन्च, कार्यशालाएँ एवं सम्मान समारोह आयोजित किए जाएंगे.

शंकराचार्य से वीर सावरकर तक : धर्म, राष्ट्र और साहित्य : आयोजन के दूसरे दिन संध्या 4 बजे एक महत्वपूर्ण सत्र आयोजित होगा जिसमें 'शंकराचार्य से वीर सावरकर तक' विषय पर चर्चा करेंगे दिल्ली यूनिवर्सिटी के प्रो. (रिटायर्ड फेलो) डॉ. रंजन विश्वादी. इस सत्र के संचालन पुरुषपुर जमशेदपुर के चीफ एडवाइजर डा. डी.

दर्शन की सीमाएं नहीं होती : एक महान विचार-धारा : पूर्व एवं साहित्य से लेकर वीरभद्रनाथ पीठ तक की आध्यात्मिक और दार्शनिक धारा पर प्रकाश डालेंगे देश के प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वी से आ रहे आचार्य डॉ. अजय प्रकाश. इस सत्र के संचालनपुरुषपुर रांची से पधारे लेखक डॉ. चयनिक चुनारी होंगे.

गर्व इंट इकोज : भारत के सबसे रंगीन कोने से संवाद

पूर्वोत्तर भारत की भाषाई विविधता, सांस्कृतिक रंगों और सामाजिक ताने-बाने पर चर्चा हेतु अरुणाचल प्रदेश से विख्यात लेखिका मोडुंग नोनी एवं डॉ. तापम रानी, तथा त्रिपुरा से डॉ. विलास रानी जमातिया उपस्थित रहेंगी. इस सत्र का संचालन जमशेदपुर के चीफ एडवाइजर अरुणाचल राय करेंगे.

विवादित कथोपकथन साहित्य गौरव सम्मान : आयोजन समिति के सदस्य कथन किशोर आहकार एवं आकाश मोटो ने बताया कि जमशेदपुर में साहित्यपुरुषोत्तम और आजीवन सृजनात्मक योगदान के लिए पाँच प्रतिष्ठित साहित्यकारों को 'विवादित कथोपकथन साहित्य गौरव सम्मान' प्रदान किया जाएगा. चयनित विभूतियों में डॉ. श्री. भास्कर राव, दिनेश कुमार सिंह 'दिनेश', अरविंद चिट्टोरी, अभिनवका रमणी त्रिपि एवं विवेकानंद ठाकुर का नाम शामिल है.

प्रतिभागियों के लिए विशेष सुविधाएँ : दो दिन का पंजीकरण कराने वाले प्रतिभागियों को आधिकारिक पहचान पत्र, दोपहर का भोजन, सहभागिता किट एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे.

विवादित फाउंडेशन की ओर से 20 व 21 दिसंबर को हो रहा है आयोजन

पूर्वोत्तर भारत की भाषाई विविधता, सांस्कृतिक रंगों और सामाजिक ताने-बाने पर होगी चर्चा



पूर्वोत्तर से लेकर दिल्ली तक, भारत के विचार मानचित्र को जोड़ता एक ऐतिहासिक आयोजन







13 दिसंबर, 2025
मीडिया कवरेज : जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल

लिटरेचर फेस्टिवल के लिए सीएम को न्योता



जमशेदपुर : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से भेंट कर जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल की आयोजन समिति के संदीप मुरारका एवं रोहित अग्रवाल ने उन्हें कार्यक्रम का आमंत्रण सौंपा. मुख्यमंत्री ने सहभागिता का प्रयास करने का आश्वासन देते हुए जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल की सफलता हेतु शुभकामनाएं दीं.

20 व 21 दिसंबर को बिष्टुपुर में हो रहा है आयोजन

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल के लिए मुख्यमंत्री को आमंत्रण





अख़बारों की इन समस्त कटिंग्स के संकलन हेतु मजीद अख़्तर का आभार

16 दिसंबर, 2025

मीडिया कवरेज : जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल

20-21 को होटल रामाडा में जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल 2025

- देश-विदेश की विभिन्न हस्तियां होंगी शामिल
- साहित्य, कला, पत्रकारिता और लोकसंस्कृति का संगम समेटेगा जमशेदपुर
- स्टॉल के साथ कार्यशाला, बुक फेयर व सांस्कृतिक कार्यक्रम

टाटकर मन्च ब्यूरो

जमशेदपुर। कला, कलम और विचारों के संगम का प्रतीक जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल 2025 आगामी 20 एवं 21 दिसंबर को बिस्टुपुर स्थित होटल रामाडा में भव्य रूप से आयोजित किया जाएगा। विज्ञप्ति फाउंडेशन के तत्वावधान में आयोजित इस दो दिवसीय साहित्यिक महोत्सव में देश-विदेश से आये लेखक, पत्रकार, कलाकार, प्रशासक, विचारक एवं पद्मश्री अलंकृत विभूतियां सहभागिता करेंगी।



संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते संदीप मुरारका व अन्य सदस्यगण।

महोत्सव को सांस्कृतिक विचार एक मंच में आयोजित देने वाली को संबोधित करते हुए आयोजन समिति के संयोजक संदीप मुरारका ने बताया कि यह आयोजन केवल साहित्यिक मंच नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक आंदोलन है, जहां विचार, कला और संवेदना एक साथ संवाद करेंगे। संयोजक कमल किशोर अग्रवाल ने बताया कि विगत एवं वेब सीरीज जगत से पधारने के विधायक जी पंकज झा, स्कैम 1992 के अभिनेता प्रतीक गांधी एवं पद्मश्री मिथिलेश चौधरी अभिनेत्री चौथे संस्करण में शामिल होंगे। कला जगत से प्रसिद्ध चित्रकार मनीष पुष्कले, लोकप्रिय कलाकार पद्मश्री भग्नू श्याम, जर्मनी पेंटिंग विशेषज्ञ आकांक्षा सिंह एवं मोहराव चित्रकार पुनिता कुमारी (जमशेदपुर) कैनवास और ब्रश के जादू से रूबरू कराएंगे।

आयोजन की प्रमुख विशेषताएं

- साहित्य, पत्रकारिता, कला, प्रशासन एवं लोकसंस्कृति पर केंद्रित विचार-मंथन
- पत्रकारिता एवं शिक्षाजगत पर विशेष कार्यशालाएं
- बुक फेयर एवं उपलब्धि
- साहित्यकारों का सम्मान
- एवं की विभूतियों का सम्मान समारोह
- सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल 2025: शब्द, कला और विचारों का महोत्सव 20-21 दिसंबर को

- विज्ञप्ति फाउंडेशन की ओर से बिष्टुपुर में आयोजित होगा फेस्टिवल



जहां शब्द सवाल बनेंगे और कला जवाब



लेखकों को मिलेगी ₹1-1 लाख की सम्मान राशि



सात लेखकों को मिलेंगे एक-एक लाख रुपये

लिटरेचर फेस्टिवल

जमशेदपुर, मुख्य संवाददाता।

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल के तीसरा विज्ञप्ति फाउंडेशन सात लेखकों को एक-एक लाख रुपये का पुरस्कार देगा। इनके नाम का चयन किया जा चुका है। यह घोषणा फाउंडेशन के संयोजक संदीप मुरारका ने सोमवार को की।

वे साकची स्थित श्री महालक्ष्मी मंदिर परिसर में आयोजित संवाददाता सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने बताया कि कला, कलम और विचारों के संगम जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल-2025 का आयोजन आगामी 20 एवं 21 दिसंबर को बिस्टुपुर के एक होटल में होने जा रहा है। इस साहित्यिक महोत्सव में देश भर से आए लेखक, पत्रकार, कलाकार, प्रशासक, विचारक और पद्मश्री अलंकृत विभूतियां सहभागिता करेंगी।



जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल के बारे में जानकारी देते फाउंडेशन के पदाधिकारी।

- 20 व 21 दिसंबर को बिष्टुपुर में होगा आयोजन
- तैयारी अंतिम चरण में
- चर्चा, कार्यशाला, सम्मान समारोह व सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे

संयोजक कमल किशोर अग्रवाल ने बताया कि किन्नौर दुनिया से वेब सीरीज पंचायत के विधायक जी पंकज झा (मुंबई), स्कैम 1992 के चर्चित बैंक ब्रोकर सचेता तलवार (मुंबई), उड़ता पंजाब, टेड इलिकथा, मोहल्लाअस्सी, किलर सूप के निर्देशक अभिषेक चौबे (मुंबई) से श्रोताओं को रूबरू होने का अवसर मिलेगा। कला और चित्रों की दुनिया से विख्यात चित्रकार मनीष पुष्कले (नई दिल्ली), लोक कलाकार पद्मश्री भग्नू श्याम (भोपाल), जर्मनी पेंटिंग विशेषज्ञ आकांक्षा सिंह (वाराणसी) एवं मोहराव चित्रकार पुनिता कुमारी (जमशेदपुर) कैनवास और ब्रश के जादू से रूबरू कराएंगे। संगीत एवं लोककला के क्षेत्र में चर्चित गायक साबीर (खोकर, राजस्थान) का कार्यक्रम 20 को जबकि कालबेलिया नृत्य को अंतरराष्ट्रीय कलाकार पद्मश्री गुलाबो सपेरा (जयपुर) का मंचन 21 को संध्या 7:30 बजे होगा। दोनों कार्यक्रमों में प्रवेश पत्र अनिवार्य है। आयोजन समिति के संयोजक अभिषेक अग्रवाल गोल्डी ने बताया कि राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश भी भाग लेंगे।

19 दिसंबर, 2025

मीडिया कवरेज : जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल



जमशेदपुर लिटरेचर फेस्ट में दिखेंगे देश भर के प्रख्यात चेहरे

तीन दिनी जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल का शुभारंभ कल से, साहित्य, खेल, संगीत, सिनेमा, पर्यावरण पर होंगे सत्र



प्रभात खबर

बिष्टुपुर. जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल 20 व 21 को

शहर के साहित्यकारों को मिलेगा विद्यादीप सम्मान

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल

- विद्यादीप फाउंडेशन की ओर से 21 दिसंबर को टीआर ढाई बजे आयोजित होगा कार्यक्रम

संवाददाता, जमशेदपुर

विद्यादीप फाउंडेशन की ओर से 20 और 21 दिसंबर को बिष्टुपुर के होटल रमाडा में जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल का आयोजन हो रहा है. इसमें देशभर के साहित्यकार और संगीत-कला से जुड़ी हस्तियां शिरकत करेंगी. इसमें जमशेदपुर के साहित्यकारों को सम्मानित किया जायेगा. आयोजन समिति के संदीप मुरारका ने बताया कि जमशेदपुर के साहित्यकार डॉ श्री भास्कर राव, दिनेश्वर प्रसाद सिंह दिनेश, अनिंदो पित्तोती, लक्ष्मी निधि और निर्मला ठाकुर को उनकी साहित्य सेवा के लिए विद्यादीप चक्रवृद्ध साहित्य गौरव सम्मान से सम्मानित किया जायेगा.

साथ ही जमशेदपुर में हिंदी के प्रसार में जुटी विभूतियों को विद्यादीप सम्मान प्रदान किया जायेगा. यह सम्मान हिंदी साहित्य की अनवरत सेवा के लिए वरिष्ठ कथाकार जयनंदन, पद्मश्रीवीय सेम्बा सालांडेग को डॉ जुही समर्पिता, साहित्यकारों को नियमित मंच उपलब्ध कराने के लिए तुलसी भवन के मानद मालमंत्रिव डॉ प्रमोरंजित तिवारी, देश के वरिष्ठतम साहित्यकारों को जमशेदपुर के मंच से जोड़ने में विशिष्ट भूमिका निभाने के लिए गोविंद टोदरानका, ओंकार चुनियांगोटी में हिंदी साहित्य उत्सव की परिकल्पना और समन्वयन के लिए मुरलीधर महानी, वरिष्ठ रंगकर्मी हरि मिलान, संगीत-संस्कृति के क्षेत्र में कमल किशोर अग्रवाल, साहित्यकारों को पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशन के लिए संरंध उपलब्ध कराने के लिए नरेश अग्रवाल, पुस्तक मेला आयोजित कराने के लिए टैगोर सोसायटी, डॉ सुदीप्ता चक्रा और डॉ सविनी भूषण को प्रदान किया जायेगा. यह सम्मान समारोह 21 दिसंबर को टीआर ढाई बजे उक्त होटल के क्रिस्टल हॉल में होगा. इसमें विधायक पूर्णिमा साहू और भालनाट्यम नृत्यांगना आशीषी मुखी अतिथि होंगे.

20 दिसंबर, 2025

मीडिया कवरेज : जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल में राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश का संबोधन आज



- जुगसलाई के रमाबाई अंबेडकर मैदान में 20 और 21 दिसंबर को जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल का होगा आयोजन
- हरिवंश का संबोधन, साहित्य और लोकतांत्रिक विमर्श पर केंद्रित होगा

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल आज से, पद्मश्री अलंकृत विभूतियां लेंगी भाग



नौकरी छोड़ी, सपने झेला और 'राहगीर' बन गए सुनील गुर्जर



12 न्यू उत्कर्ष मेल

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल आज से, जुटेंगी देश-विदेश की कई हस्तियां



गीत के माध्यम से लोगों से की अपने मन की बात



हिन्दुस्तान www.livehindustan.com अपना जमशेदपुर

लिटरेचर फेस्टिवल का आगाज आज, जुटेंगे जाने-माने साहित्यकार



जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल से सजी सांस्कृतिक शाम, राहगीर बोले–देश और प्रेम की बात करेगा अगला



21 दिसंबर, 2025

मीडिया कवरेज : जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल



कलम, कला व कैमरे पर संवाद

साहित्य और कला के महाकुंभ में शब्दों ने रचा उत्सव

विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष की शक्ति देता है साहित्य : हरिवंश

अभी मेरा बेस्ट आना बाकी है : राजेश जैस

MESCAB

उदित वाणी

जस्ट जमशेदपुर

12

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल में आज आप जानेंगे ब्रेकिंग न्यूज से लेकर रील्स तक की सच्चाई

■ दिन में पंचायत फेम अभिनेता पंकज झा तो रात में गुलाबो सपेरा का कालबेलिया नृत्य होगा आकर्षण

आज होंगे ये कार्यक्रम

21 दिसंबर, 2025

मीडिया कवरेज : जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल



जमशेदपुर में जुटे देशभर के प्रख्यात साहित्यकार, कलाकार, चित्रकार, पत्रकार

आठ साहित्यकार व कलाकार हुए सम्मानित, एक-एक लाख राशि दी

पद्मश्री विजेताओं को सम्मान

जमशेदपुर 21-12-2025

साहित्य ही व्यक्ति, समाज व सत्ता में बदलाव ला सकता है: हरिवंश

भाषा किसी फैक्ट्री में नहीं बनती, वह पीढ़ियों के अनुभव से विकसित होती है : सोपान जोशी

जमशेदपुर 21-12-2025

यह केवल स्टील का शहर नहीं, यहां शब्दों के शिल्पी तैयार होते हैं

साहित्य, पत्रकारिता का जमशेदपुर साहित्य महोत्सव शुरू

22 दिसंबर, 2025

मीडिया कवरेज : जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल



जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवलः पद्मश्री गुलाबो सपेरा ने 'कालबेलिया नृत्य' से बांधा समां

जमशेदपुर. विभूतीज फाउंडेशन की ओर से आयोजित जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल का रविवार को समापन हो गया. दिसंबर अलग-अलग रंग में दर्शकों ने अलग-अलग विधा पर अपने विचार रखे. वहीं, देर शाम नृत्य व संगीत की महफिल सजी. इस दौरान राजस्थान से आईं पद्मश्री सम्मान से पुरस्कृत कालबेलिया नृत्यांगना गुलाबो सपेरा ने अपनी मनमोहक प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया. कार्यक्रम की खास बात यह रही कि गुलाबो सपेरा के परिवार की तीन पीढ़ी ने मंच पर एक साथ नृत्य की प्रस्तुति दी. पेज 06 भी देखें

शब्दों से विचार तक, लिटरेचर फेस्ट ने छोड़ी छाप

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल के दूसरे दिन साहित्य और पर्यावरण का सं

लिटरेचर फेस्टिवल में
पर्यावरण संरक्षण का

22 दिसंबर, 2025

मीडिया कवरेज : जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल



कालबेलिया : एक साथ तीन पीढ़ी के नृत्य ने लोगों को किया मंत्रमुग्ध

ब्रेकिंग न्यूज से रील्स तक बेबाक चर्चा

सिनेमा से किसी का भला नहीं होता : पंकज झा

एडश्री गुलाबो सपेरा की कालबेलिया नृत्य व पंचायत फेम विधायक जी पंकज झा ने बांधा समां

सिनेमा में सब दो कौड़ी के बीमार लोग है, इन्हें थेरेपी चाहिए : पंकज झा

आज सच को सच कहना व दिखाना सबसे मुश्किल : पंकज झा

पंचायत फेम विधायक जी पंकज झा व पद्मश्री गुलाबो सपेरा ने बांधा समां

25 जनवरी, 2026

मीडिया कवरेज : जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल

उपसभापति राज्यसभा हरिवंश ने जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल की सराहना की

पुरस्कार राशि एक लाख जनकल्याण के लिए दान करने की घोषणा



उपसभापति ने की लिटरेचर फेस्टिवल की सराहना

राज्यसभा उपसभापति हरिवंश ने पेश की मिसाल

साहित्य पुरस्कार की राशि कोल्हान के बच्चों पर होगी खर्च



राष्ट्र संवाद

जमशेदपुर

उपसभापति राज्यसभा हरिवंश ने जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल की मुक्तकंठ से सराहना की



जब हॉर्डिंग्स ने कहा : यह भी साहित्य का शहर है





















सत्र-11

Journalism Masterclass: ब्रेकिंग न्यूज़ से रील्स तक रिपोर्टिंग की असल रियलिटी

वक्ता:
प्रियदर्शन,
डॉ. अंजुम शर्मा,
अनुज कुमार सिन्हा
संवाद सूत्रधार:
संजय कृष्ण
डॉ. नेहा तिवारी
संयोजक:
डॉ. अनीता शर्मा एवं डॉ. पुष्पा कुमारी



21 दिसंबर, 2025 | बैक लॉन, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 10.00 -11.45



Priyadarshan
Senior Journalist, NDTV

One of the country's most respected journalists, known for his sharp insight into contemporary politics, society, and literature.
His analytical approach and sensitive, nuanced writing have earned him a distinct and credible voice in the national media landscape.

New Delhi



Dr Anjum Sharma
Deputy Editor, India Today

A young and dynamic voice in Indian journalism, he represents new and modern thought with clarity and confidence.
An effective speaker and a skilled interviewer, he is known for sharp questioning, insightful conversations, and the ability to engage audiences effortlessly.

New Delhi



Anuj Kumar Sinha
Author | Senior Journalist (Retired), Prabhat Khabar

A widely respected voice in Hindi journalism, known for his balanced perspective, refined language, and deep engagement with social issues. Even after retirement, his continued writing and thoughtful public commentary keep him an influential and credible presence in the Hindi intellectual space.

Ranchi, Jharkhand



Sanjay Krishna
Senior Journalist, Dainik Jagran

A respected voice in Hindi journalism, known for his insightful writing on literature, culture, and society. His work reflects a deep engagement with Jharkhand's tribal heritage and cultural traditions. Recipient of prestigious literary honours, he has authored several notable books on regional culture.

Jamshedpur, Jharkhand



Dr. Neha Tiwari
Academic | Independent Journalist | Speaker | Film Scholar

Head, Department of Mass Communication, Karim City College.Former journalist with India Today, now actively mentoring young journalists in new media and film-making.
National Film Awards jury member; an engaging speaker and skilled moderator.

Jamshedpur, Jharkhand

"पत्रकारिता की असली जिम्मेदारी

Ink to Impact"

डॉ. नेहा तिवारी ने चर्चा की शुरुआत करते हुए पूछा –आज पत्रकारिता जिन चुनौतियों से घिरी है, उनका सामना कैसे किया जाए?

इस प्रश्न पर अनुज कुमार सिन्हा ने ऐतिहासिक संदर्भ देते हुए कहा –एक समय था जब 'प्रिंट सच का सबसे बड़ा माध्यम' माना जाता था। अखबार में छपा शब्द अंतिम सत्य की तरह स्वीकार किया जाता था। लेकिन आज पाठक की मानसिकता बदल चुकी है। वह सब कुछ तुरंत और सबसे पहले चाहता है। पत्रकारों में भी यह होड़ बढ़ गई है कि 'हमसे कोई आगे न निकल जाए।' इसी जल्दबाजी में कई बार बिना पर्याप्त जांच-पड़ताल के खबरें प्रकाशित हो जाती हैं, जिससे विश्वसनीयता पर आंच आती है।



शेष सामग्री पृष्ठ ... में



सत्र-12 एवं 13

सिकुड़ती नदियों की कहानी: जल-संकट और जन-भागीदारी
शब्द, समाज और सरोकार

सत्र वक्ता:
सोपान जोशी
डॉ. दिनेश कुमार मिश्र
रश्मि कात्यायन

संयोजक:
उपासना सिन्हा, ममता सिंह,
सुधा गोयल एवं इंदिरा पांडेय



21 दिसंबर, 2025 | बैक लॉन, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 11.45 - 13.30



Sopan Joshi
Journalist & Author

Known for reflective and research-driven writing on environment, culture, history, and biography. His notable works include Jal Thal Mal, Ek Tha Mohan, Bapu Ki Paati, Shiv Putra Katha: A Biography of Kumar Gandharva, and Mangifera indica: A Biography of the Mango.

New Delhi



Dinesh Kumar Mishra
Engineer | Environmentalist | River Scientist

Among the rare thinkers who see rivers as living lifelines of civilization and ecology. His writings read like autobiographies of rivers, capturing their science, struggles, and social impact. Notable works include Boya Ped Babool Ka, Bandini Mahananda, and Bagmati Ki Sadgati.

Jamshedpur, Jharkhand



Rashmi Katyayan
Senior Advocate | Researcher | Tribal Rights Expert

A leading legal thinker from Jharkhand, working on tribal rights, land laws, village self-governance, and customary systems. Notable works include Jharkhandi Hakkuqnama, Lo Bir Sendra, Jharkhand Panchayat Raj Handbook (editor), and Tribals of Jharkhand vs Modern Law (translation).

Ranchi, Jharkhand

नदियाँ केवल जल नहीं

वे सनातन चेतना की प्रवाहित परंपरा हैं; उनका संरक्षण ही हमारा धर्म है.



विवादीय फाउंडेशन के तत्वावधान में आयोजित द्विदिवसीय लिटरेचर फेस्टिवल का बारहवाँ सत्र "सिकुड़ती नदियों की कहानी: जल-संकट-जन-भागीदारी" विषय पर केंद्रित रहा. यह सत्र नदियों के सूखते अस्तित्व, उनके सांस्कृतिक-दार्शनिक महत्व और संरक्षण में समाज की भूमिका पर एक गंभीर और विचारोत्तेजक विमर्श के रूप में सामने आया.

इस सत्र में डॉ. दिनेश कुमार मिश्र, सोपान जोशी तथा रश्मि कात्यायन—तीनों वक्ताओं ने अपने-अपने दृष्टिकोण से नदियों के संकट को रेखांकित किया.

सोपान जोशी का उद्बोधनअतिथि पत्रकार एवं पर्यावरण विषयों के सजग अध्येता सोपान जोशी ने अपने उद्बोधन की शुरुआत भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में नदियों की उपस्थिति से की. उन्होंने वैदिक श्लोक "गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती..." का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय समाज में कोई भी मांगलिक कार्य नदियों के स्मरण के बिना पूर्ण नहीं माना जाता.

उन्होंने विशेष रूप से सरस्वती नदी का संदर्भ उठाते हुए कहा कि यह आश्चर्यजनक है कि एक ऐसी नदी, जो स्थूल रूप में दिखाई नहीं देती, वह भी हमारी चेतना के केंद्र में बनी हुई है. यह दर्शाता है कि नदियाँ केवल भौतिक संरचनाएँ नहीं हैं, बल्कि स्मृति, विश्वास और सभ्यता का आधार हैं.

सोपान जोशी ने कहा कि जैसे रश्मि कात्यायन ने आदिवासी समाज और उसके अधिकारों को गहराई से समझा है, वैसे ही डॉ. दिनेश कुमार मिश्र ने नदियों को समझने का उपजीवी प्रयास किया है. उन्होंने डॉ. मिश्र को "नदियों का ऋषि-अध्येता" बताते हुए कहा कि आज के समय में ऐसा समर्पण दुर्लभ है.

उन्होंने चिंता व्यक्त की कि आधुनिक समाज में नदियाँ केवल रास्ते में टिप्पणे वाली सूखी धाराओं में बदलती जा रही हैं. हम उनसे गुजरते तो हैं, लेकिन उन्हें देखने, समझने और बचाने की संवेदना खोते जा रहे हैं.

डॉ. दिनेश कुमार मिश्र का उद्बोधन सुप्रसिद्ध नदी-अध्येता डॉ. दिनेश कुमार मिश्र ने नदियों के साथ अपने दशकों लंबे अनुभव साझा किए. अपने वक्तव्य में उन्होंने भावुक स्वर में कहा कि वे पिछले पचास वर्षों से जमशेदपुर में रह रहे हैं, किंतु यह पहला अवसर है जब वे अपने ही शहर में मंच से नदियों पर बोल रहे हैं. उन्होंने कहा कि समाज अक्सर अपने बीच कार्य करने वाले लोगों को देर से पहचानता है.

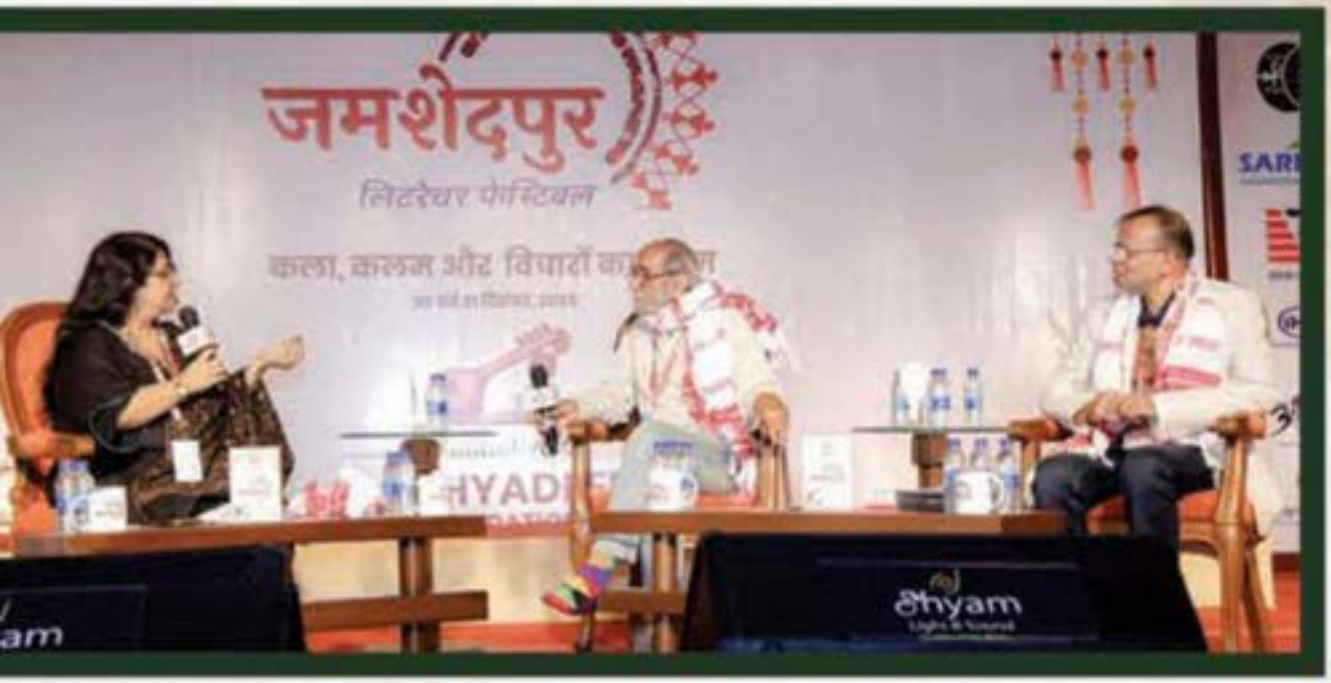
डॉ. मिश्र ने बताया कि सरस्वती नदी भले ही दृश्य रूप में न दिखाई देती हो, लेकिन वह सर्वत्र विद्यमान है—हमारी भूमि, हमारी स्मृति और हमारे प्रवाह में. उन्होंने चाणक्य के कथन का उल्लेख करते हुए कहा कि नदी का होना किसी भी सभ्यता के लिए अनिवार्य है.

उन्होंने यह भी बताया कि भारतीय परंपरा में नदियाँ केवल 'माँ' नहीं, बल्कि कहीं-कहीं 'पिता', मित्र या सहचरी के रूप में भी देखी गई हैं. यह संबंध उपयोगिता से आगे बढ़कर भावनात्मक और सांस्कृतिक स्तर तक जाता है.

शेष सामग्री पृष्ठ ... में

Adhunik

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-14

लकीरों में छुपा सच : हिंदी कार्टून की ताकत

सत्र वक्ता:
आबिद सुरती
मनोज कुमार सिन्हा
संवाद सूत्रधार:
रश्मि शर्मा
संयोजक:
डॉ. भारती कुमारी एवं विद्या तिवारी



21 दिसंबर, 2025 | बैंक लॉन, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 14.40-15.30



Aabid Surti
The Confluence of Art, Compassion, and Consciousness
A renowned cartoonist, author, painter, and environmentalist —creator of iconic comic characters "Bahadur" and "Dabbu Ji." Through his social initiative "Drop Dead Foundation," he spreads the message — "Save Every Drop of Water."

Mumbai



Manoj Kumar Sinha
Cartoonist
A renowned cartoonist whose lines vividly capture both the sharp edge of satire and the deeper truths of society. His work blends incisive humor with social realism, offering powerful commentary through minimalist yet evocative visuals.

New Delhi



Rashmi Sharma
Author
A journalism graduate and postgraduate in History, with works spanning short stories, poetry, and a travelogue. Her writings have been translated into multiple languages, and she is a recipient of the CSDS Media Fellowship and several literary honors.

Ranchi, Jharkhand

"जहाँ शब्द कम पड़ें, वहाँ कार्टून बोलते हैं."

रश्मि शर्मा: आबिद साहब, सबसे मूल प्रश्न से शुरू करते हैं—हम कार्टून क्यों बनाते हैं?

आबिद सुरती : कार्टून केवल हँसाने के लिए नहीं होते। वे हमारी आँखें खोलते हैं। एक छोटा-सा चित्र—और उसमें छुपा संदेश कई पन्नों के लेख से अधिक असर करता है। छोटी-सी माचिस की तीली जैसे बड़े धमाके की ताकत रखती है, वैसे ही कार्टून में समाज को झकझोर देने की क्षमता होती है। रश्मि शर्मा: कार्टून हमें क्या सिखाते हैं?

आबिद सुरती: कार्टून हमारी कल्पना को आकार देते हैं। वे हमें अपने मूल्यों और आदर्शों पर सोचने को मजबूर करते हैं। वे आईना दिखाते हैं—कभी हँसाकर, कभी चुभन देकर। 'देखन में छोटन लगे, घाव करे गंभीर'—कार्टून इसी उक्ति को चरितार्थ करते हैं।

रश्मि शर्मा: क्या देश की एकता और सामाजिक समरसता में भी कार्टून की भूमिका है?

आबिद सुरती: बिलकुल है। एक कार्टून बिना भाषण दिए भाईचारे का संदेश दे सकता है। कई बार जहाँ संवाद टूट जाता है, वहाँ व्यंग्य की रेखा पुल का काम करती है। एकता, समानता और बंधुत्व के भाव को कार्टून सहजता से स्थापित कर सकते हैं।

रश्मि शर्मा: आबिद सर, आप 'ड्रॉप डेड फाउंडेशन' के माध्यम से जल संरक्षण का अद्भुत कार्य कर रहे हैं। कार्टून से आगे बढ़कर समाज सेवा की यह प्रेरणा कैसे मिली?

आबिद सुरती : मैंने सोचा, अगर एक बूंद पानी रोज़ टपकता है तो साल भर में हजारों लीटर पानी बर्बाद होता है। मैंने तय किया कि हर रविवार एक घर जाकर उस लीकेज को ठीक करूँगा। कार्टून से जो कमाया, उसे समाज को लौटाना भी ज़रूरी था। अगर मेरी रेखाएँ समाज को जगाती हैं, तो मेरे हाथ भी समाज के काम आएँ—यही सोच थी। एक बूंद बचाना

शेष सामग्री पृष्ठ ... में



BOOK वाली

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-15

सांस्कृतिक धरोहरें : भारतीय साहित्य की दृष्टि में

वक्ता:
डॉ. रविदत्त बाजपेई
कायनात काजी
संवाद सूत्रधार:
संजय कृष्णा
संयोजक:
लल्लन शर्मा एवं डॉ अरुण सज्जन



21 दिसंबर, 2025 | बैंक लॉन, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 15.30-16.20



Dr. Ravi Dutt Bajpai
Author | Educationist | Thinker
A renowned author, educationist, and thinker whose writings vividly explore the deep interconnections between Indian culture, society, and spirituality. He is the author of Camille Bulcke: The Jesuit Exponent of Ramkatha, a significant scholarly work on Ramkatha studies.

Ranchi, Jharkhand



Dr. Kainaat Kazi
Solo Female Traveler | Cultural Conservationist | Author
India's first female solo traveler to cover nearly 300,000 kilometers in five years. Actively engaged in preserving and reinterpreting Indian heritage, folklore, and traditional knowledge, her writing sensitively explores culture, society, and human experiences.

New Delhi



Sanjay Krishna
Senior Journalist, Dainik Jagran
A respected voice in Hindi journalism, known for his insightful writing on literature, culture, and society. His work reflects a deep engagement with Jharkhand's tribal heritage and cultural traditions. Recipient of prestigious literary honours, he has authored several notable books on regional culture.

Jamshedpur, Jharkhand



संस्कृति: अतीत की स्मृति या जीवित चेतना?

संवाद की शुरुआत करते हुए संजय कृष्णा ने प्रश्न रखा : भारतीय साहित्य सांस्कृतिक धरोहरों को किस रूप में देखता है – अतीत की स्मृति के रूप में या जीवित परंपरा के रूप में?

डॉ. रविदत्त बाजपेयी ने उत्तर दिया : भारतीय साहित्य में संस्कृति स्थिर नहीं है। वह प्रवाहमान है। रामायण, महाभारत, लोककथाएँ, संत साहित्य – ये केवल ऐतिहासिक दस्तावेज़ नहीं, बल्कि जीवित अनुभव हैं। साहित्य धरोहर को संरक्षित भर नहीं करता, उसे हर युग में पुनर्सृजित करता है।

संरक्षण बनाम आत्मसात

संजय कृष्णा ने अगला प्रश्न उठाया : क्या हम धरोहर को केवल स्मारकों तक सीमित कर रहे हैं?

डॉ. कामना कामी ने स्पष्ट कहा : धरोहर केवल किले, महल, मंदिर या स्थापत्य नहीं है। हमारी भाषा, लोकगीत, कथाएँ, अनुष्ठान और जीवन-शैली भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं। संरक्षण का अर्थ केवल संरचना बचाना नहीं, संवेदना को जीवित रखना है।

वैश्वीकरण और सांस्कृतिक पहचान

संजय कृष्णा : तेजी से बदलते वैश्विक परिवेश में भारतीय सांस्कृतिक पहचान कैसे सुरक्षित रह सकती है?

डॉ. बाजपेयी: भारतीय संस्कृति की शक्ति उसकी बहुलता है। यहाँ विविधता ही एकता का आधार है। साहित्य इस विविधता को अभिव्यक्ति देता है, इसलिए वह हमारी सांस्कृतिक जड़ों को मज़बूत करता है। पहचान आत्मविश्वास से बचती है। जब हम अपनी संस्कृति को हीन दृष्टि से देखते हैं, तब संकट शुरू होता है। आत्मबोध ही संरक्षण का पहला कदम है।

सोलो ट्रैवल और सांस्कृतिक अनुभव

संजय कृष्णा ने एक रोचक प्रश्न रखा :डॉ. काज़ी, एक सोलो ट्रैवलर के रूप में आपकी यात्राओं ने आपके लेखन को कैसे प्रभावित किया?

शेष सामग्री पृष्ठ ... में

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-16

शंकराचार्य से वीर सावरकर तक : धर्म, राष्ट्र और साहित्य

वक्ता:
प्रो. (डॉ.) रंजन त्रिपाठी
संवाद सूत्रधार:
भवानंद झा
संयोजक:
प्रसेनजीत तिवारी



21 दिसंबर, 2025 | बैंक लॉन, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 16.20-17.20



Dr. Ranjan Tripathi
Dean, Students' Welfare,
University of Delhi
An exceptional orator who vividly bridges ideas ranging from Shankaracharya's Advaita philosophy to Savarkar's vision of nationhood. In his words, spirituality, nationalism and literature flow together as a single cultural current, awakening a deep resonance with the soul of India.

New Delhi



Bhavanand Jha
Journalist
A distinguished and seasoned journalist, currently serving as the Editor of the Dainik Bhaskar, Jamshedpur edition. Beneath his journalistic rigor lies the sensibility of a litterateur. Known for a sharp and nuanced perspective on contemporary issues, he is a sensitive observer of society and its evolving narratives. He plays a significant and thoughtful role in the city's literary, cultural, and social life, contributing with seriousness, balance, and creative insight.

New Delhi

"स्वयं को जानो भारत का भविष्य गढ़ो"



भवानंद झा : प्रोफेसर साहब, भारतीय चिंतन की धारा में आदि शंकराचार्य का स्थान क्या केवल धार्मिक है, या उन्होंने राष्ट्र की वैचारिक संरचना भी गढ़ी?

प्रो. (डॉ.) रंजन त्रिपाठी : आदि शंकराचार्य को केवल धार्मिक कहना उनके व्यक्तित्व को सीमित करना होगा. वे भारतीय बौद्धिक परंपरा के पुनर्जागरण के महान शिल्पी थे. उस समय जब भारत विभिन्न दार्शनिक मतों और वैचारिक विखंडनों से जूझ रहा था, शंकराचार्य ने अद्वैत के माध्यम से चेतना की एकता का सूत्र प्रस्तुत किया.

उन्होंने यह स्थापित किया कि सत्य एक है और वही एकत्व भारत की सांस्कृतिक आत्मा है. चार दिशाओं में चार मठों की स्थापना केवल आध्यात्मिक आयोजन नहीं थी, वह भारत की अखंड सांस्कृतिक भौगोलिकता का सशक्त घोष था. उन्होंने ज्ञान, अनुशासन और परंपरा को संस्थागत रूप देकर सनातन को स्थायित्व प्रदान किया.

अद्वैत उनके लिए मात्र दार्शनिक सिद्धांत नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आत्मबोध का आधार था — 'मैं' और 'राष्ट्र' का भेद मिटाकर एक व्यापक चेतना का अनुभव. उन्होंने केवल दर्शन नहीं दिया, दिशा दी; केवल तर्क नहीं दिया, आत्मविश्वास दिया. शंकराचार्य ने भारत को केवल समझाया नहीं, उसे स्वयं से परिचित कराया.

ज्ञानाधिकार परंपरा

भवानंद झा : शंकराचार्य की ज्ञानाधिकार परंपरा आज भी जीवित है। समकालीन संदर्भ में इसका क्या महत्व है और चारों पीठों की स्थापना को आप किस दृष्टि से देखते हैं?

शेष सामग्री पृष्ठ ... में



सत्र-17

Screen Uncut: निर्देशक और अभिनेता से बेबाक संवाद

वक्ता:
अभिषेक चौबे
पंकज झा
संवाद सूत्रधार:
डॉ. मनीष जैशल
संयोजक:
हरि मित्तल एवं अनीता सिंह



21 दिसंबर, 2025 | बैंक लॉन, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 17.20 -18.20



Abhishek Chaubey
Film Director
A filmmaker of profound sensitivity and vision –known for films like "Ishqiya," "Udta Punjab," and "Sonchiriya,"that brought a bold, realistic voice to Indian cinema.

Mumbai



Pankaj Jha
Film Actor
A powerful and versatile artist, writer and actor,renowned for his intense performances and memorable characters.
Through films, web series, and theatre,he has left a deep and lasting impact with his distinctive style.

Mumbai, Maharashtra



Dr. Manish Kumar Jaishal
HOD, Dept. of Journalism and Mass Communication, ITM University, Gwalior | Film Critic
A young and insightful media educator with deep understanding and wide experience in journalism, film studies, social media, and artificial intelligence. Author of three books focused on cinema and known for conducting interviews with several eminent film personalities.

Gwalior



"सिनेमा सिर्फ देखा नहीं, जिया जाता है."

सिनेमा: कहानी या कारोबार?

डॉ. मनीष कुमार जैसल : अभिषेक जी, आज सिनेमा कहानी से अधिक कारोबार बनता जा रहा है। क्या रचनात्मक स्वतंत्रता बाज़ार के दबाव में कमज़ोर हो रही है?

अभिषेक चौबे : सिनेमा हमेशा से बाज़ार था, बस उसका प्रभाव बढ़ा है। लेकिन सच कहूँ तो अच्छी कहानी ही टिकती है। ओपनिंग वीकेंड शोर कर सकता है, लेकिन समय के साथ वही फिल्म बचती है जिसमें ईमानदारी हो।

अभिनेता का सच

डॉ. जैसल : पंकज जी, एक अभिनेता के लिए सबसे कठिन क्षण क्या होता है – संघर्ष का दौर या सफलता का दबाव?

पंकज झा: संघर्ष आपको बनाता है, लेकिन सफलता आपको परखती है। आज के दौर में अभिनेता सिर्फ किरदार नहीं निभाता, उसे सोशल मीडिया पर भी अपनी छवि निभानी पड़ती है। असली अभिनय कैमरे के सामने कम, अपने भीतर ज़्यादा होता है।

ओटीटी और बदलता दृष्टिकोण

डॉ. जैसल: ओटीटी ने सिनेमा की भाषा और संरचना को कितना बदला है?

अभिषेक चौबे : बहुत बदला है। अब छोटे शहरों की कहानियाँ भी वैश्विक दर्शक तक पहुँच रही हैं। लेकिन चुनौती यह है कि कंटेंट की भीड़ में गुणवत्ता कैसे बचाई जाए।

पंकज झा: ओटीटी ने अभिनेता को स्पेस दिया है। अब स्टार नहीं, किरदार चलता है।

'Screen Uncut' का अर्थ

डॉ. जैसल: इस सत्र का शीर्षक 'Screen Uncut' है। आपके लिए 'Uncut' का क्या अर्थ है?

शेष सामग्री पृष्ठ ... में

GAGAN
BUILDING TOMORROW

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-18

कैनवास और ब्रश की जादुई क्लास

वक्ता:
आकांक्षा सिंह
पुनिता कुमारी
संवाद सूत्रधार:
मीरा बबली
संयोजक :
पुष्पांजलि मिश्रा और श्वेता सिंह



21 दिसंबर, 2025 | क्रिस्टल हॉल, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 10.00 - 11.20



Punita Kumari
Sohrai Artist
A distinguished practitioner of Jharkhand's traditional Sohrai folk painting, she envisions Sohrai not merely as decorative art but as a sustainable source of livelihood.
She creates Sohrai artworks on textiles such as stoles, sarees, and dupattas, while also training women disciples, thereby strengthening both heritage and economic empowerment.

Ranchi



Akanksha Singh
Young Artist (Warli Painting) | Live Art Performer
A vibrant young talent who brings fresh energy to the rare folk-tribal art of Warli, beautifully blending tradition with contemporary expression.
With participation in national and international exhibitions, her live art resonates with color, rhythm, and spiritual depth—every stroke carrying the grace of Baba Vishwanath and the soul of Indian folk heritage.

Varanasi



Pushpanjali Mishra
Educator | Writer
She has been nurturing a deep love for Hindi at Loyola School for many years. An active member of Sahyog Jamshedpur, a multilingual literary organization, she is a committed writer and continues to enrich Hindi literature through her association with various cultural and literary institutions.

Jamshedpur

"लोक कला **जीवन** रचती है"



पुष्पांजलि : आकांक्षा जी, इस पारंपरिक कला से आपका पहला परिचय कैसे हुआ?

आकांक्षा : बचपन में घर की बेडशीट पर बने चित्रों को देखा करती थी। वहीं से मन में कुछ अंकित होने लगा। शुरुआत में परिवार को लगा कि इस क्षेत्र में भविष्य नहीं है—जैसा अक्सर होता है। लेकिन जब मैंने उन्हें समझाया कि यह केवल आर्ट नहीं, बल्कि एक हज़ारों वर्ष पुरानी परंपरा है, तब उन्होंने मुझे आगे बढ़ने दिया।

पुष्पांजलि : आम भी आम धारणा यही है कि कला में भविष्य नहीं है। इस पर आप क्या कहना चाहेंगी?

आकांक्षा : लोग आर्ट को विषय की तरह देखते हैं, पर वारली एक जीवन-दृष्टि है। यह प्रकृति से जुड़ी है, दैनिक जीवन से जुड़ी है। इसका इतिहास लगभग 3000–2500 BCE तक जाता है—हालाँकि कोई लिखित दस्तावेज नहीं है। मैंने इस कला को समझने के लिए बहुत कुछ स्वयं खोजा—बूज़ुर्गों से, बाज़ारों से, अनुभव से। पद्मश्री जिव्या सोमा माशे ने 1970 में इसका दस्तावेज़ीकरण किया—इसीलिए उन्हें वारली कला का पिता कहा जाता है।

पुष्पांजलि : आपका जमशेदपुर से भी एक विशेष जुड़ाव रहा है?

आकांक्षा : हाँ! पहली बार जून 2025 में एक वारली कार्यशाला के लिए आई थी। वहीं मैंने यूनियन साउथ, आदिवासी घरों की दीवारों पर बनी चित्रकारी देखी—और तभी महसूस हुआ कि यह कला महाराष्ट्र में है, बिहार झारखंड में भी जीवित है। दूसरी बार एक कार्यशाला में आई—डिमना लेक और दलमा पहाड़ भी देखा। और तीसरी बार—आज, इस लिटरेचर फेस्टिवल में।

पुष्पांजलि : वारली कला की तकनीक के बारे में कुछ बताइए।

शेष सामग्री पृष्ठ ... में

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-19

Biography of Canvas:
जहाँ रंग बोलेंगे

सत्र वक्ता:
मनीष पुष्कले
पद्मश्री भज्जू श्याम
ऋतु शर्मा
संवाद सूत्रधार:
प्रो. प्रणु शुक्ला
संयोजक:
मीरा बबली,
पुष्पांजलि मिश्रा एवं श्वेता (अबीरा)



21 दिसंबर, 2025 | क्रिस्टल हॉल, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 11.20 - 12.30



Manish Pushkale
Contemporary Artist

A leading figure in contemporary Indian art, whose work represents India's sensitive, spiritual and intellectual consciousness on the global stage.
His paintings invite deep introspection through the language of color, symbols, and rhythm, creating a quiet dialogue between light, silence and thought.

Gwalior



Bhajju Shyam
Padma Shri | Gond Artist

A renowned Gond painter whose art vividly represents tribal life, folklore and the spirit of nature on the global canvas. His works beautifully blend tradition with contemporary expression, giving new identity and livelihood to Patangarh's artistic heritage.

Bhopal, Madhya Pradesh



Ritu Sharma (IRS)
Additional Director General, CBDT | Author | Poet | Chevening Fellow

A distinguished public administrator with a refined literary and artistic sensibility.
Former Director of the National Gallery of Modern Art, her writing reflects emotional depth, introspection, and the complexities of human experience.
Her forthcoming debut book, A Tale of Power and Promise, offers a fresh and inspiring perspective.

New Delhi



Prof. Pranu Shukla
Academic & Critic

A distinguished educator and literary critic known for her work in Dalit-Tribal discourse, language, cinema, and literature. With over 16 years of teaching experience, 18+ books, and 100+ research papers, she has guided multiple doctoral scholars and received several national and international honors.

Jaipur, Rajasthan

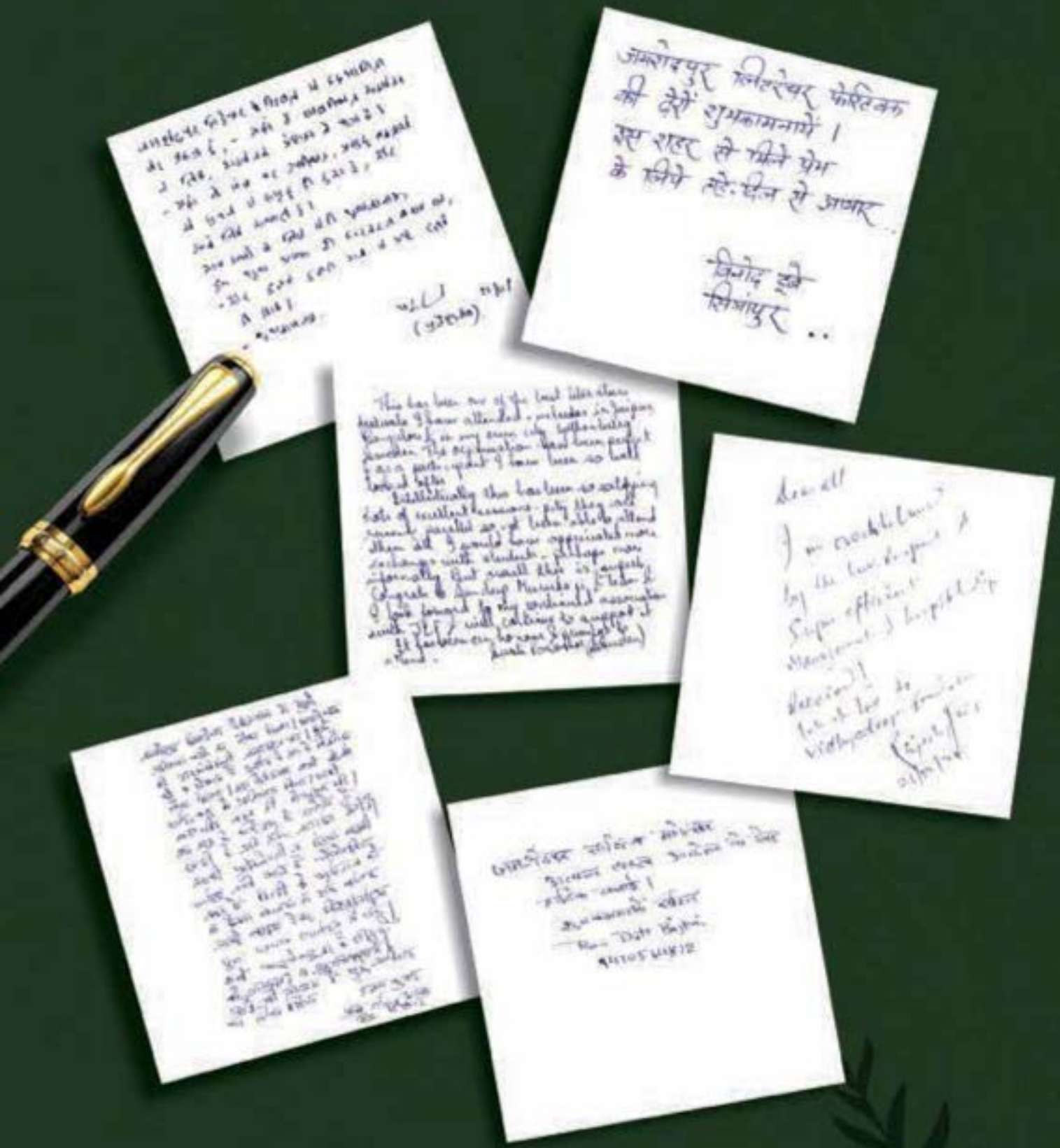
"When Colors Speak"

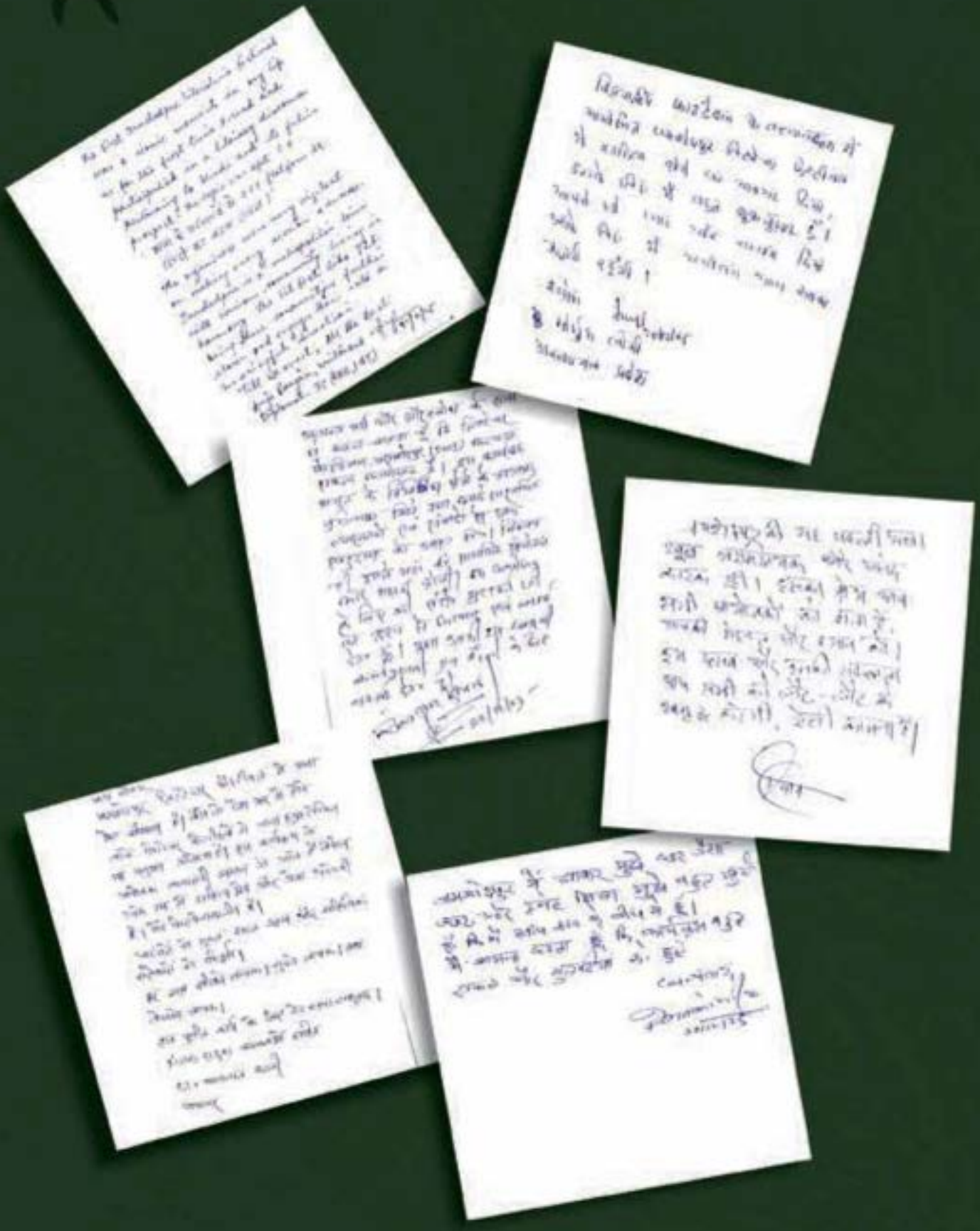
प्रो. प्रनु शुक्ला : भारतीय संस्कृति में रंग केवल सौंदर्य नहीं हैं, बल्कि लोकवाद है, परंपरा हैं और एक भावबोध की जीवित भाषा है। चाहे लोककला हो, वस्त्र हों, पर्व हों या अनुष्ठान—हर जगह रंग बोलते हैं। बस सुनने वाली दृष्टि चाहिए। रंग सदैव बोलते हैं।
राजस्थान में रंगों के विषय में कहा जाता है—"सोने की धरती जट है, पांणी ओ आसमाण,रंग-बिरंगो रस भरयो मेरो प्यारो राजस्थान।
"जब रंग बोलते हैं, तब शब्द मौन हो जाते हैं और कैनवास पर जज्बात स्वतः उतर आते हैं। रंग शब्दों में नहीं उतरते—वे आँखों से होते हुए सीधे मन में प्रवेश करते हैं।
'लाल' जब फैलता है तो धड़कनें तेज हो जाती हैं—कहीं प्रेम मुस्कुराता है, कहीं संघर्ष खड़ा हो जाता है, और संघर्ष कैसा—जिजीविषा और जीविका।

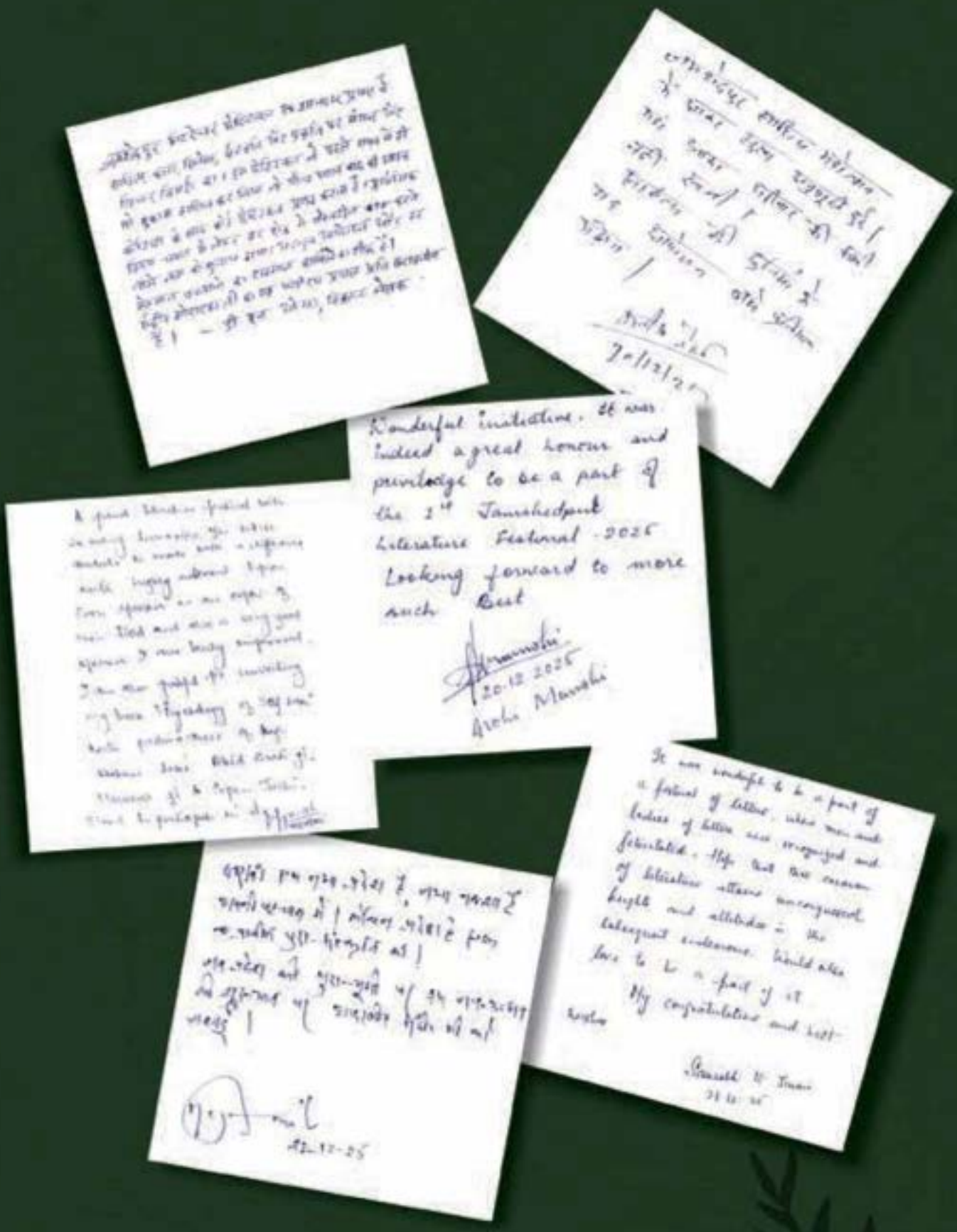
शेष सामग्री पृष्ठ ... में



कमेंट्स बुक में दर्ज अतिथियों के विचार





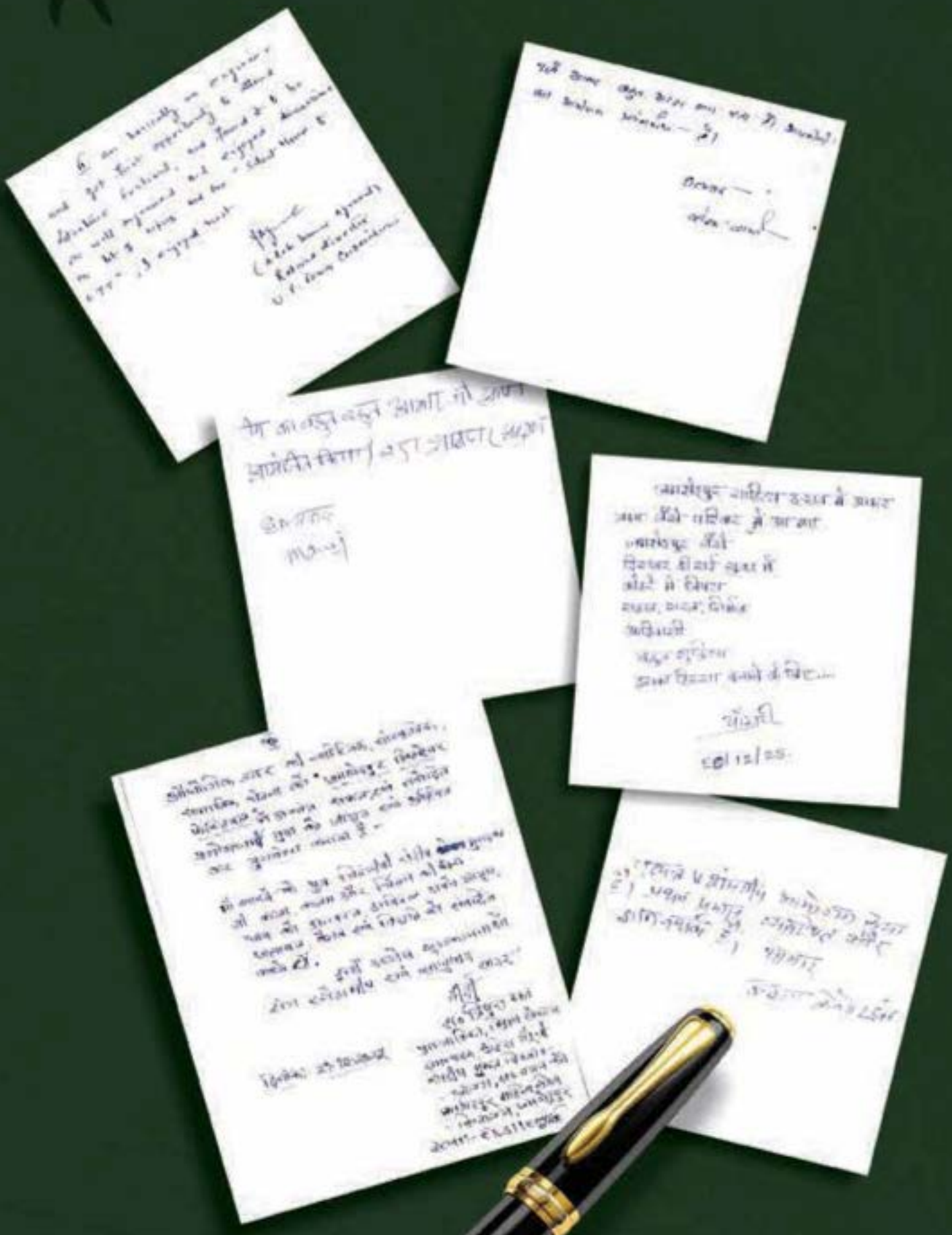


Wonderful initiative. It was indeed a great honour and privilege to be a part of the 2nd Jamshedpur Literature Festival - 2025
Looking forward to more such Fest

20.12.2025
Ajeeta Mauskhi

It was wonderful to be a part of a festival of letters where men and ladies of letters were recognized and felicitated. Hope that this encouragement of literature attracts encouragement, insight and attitude in the subsequent endeavours. Would like love to be a part of it
My congratulations and best wishes

Sharmili M. Tiwari
21.12.25



अः

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-20

गांधी जी और विनोबा : परिवार, समाज और राजनीति में सात्विकता के पथ-प्रदर्शक

वक्ता:
अव्यक्त जी
संवाद सूत्रधार:
डॉ. राकेश कुमार
संयोजक:
डॉ. अरुण कुमार सज्जन



21 दिसंबर, 2025 | क्रिस्टल हॉल, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 12.30- 13.20



Avyakt Ji
Spiritual Writer | Thinker | Philosopher of Life
A distinguished spiritual author who explores the depths of Indian philosophy with remarkable simplicity. Through his widely discussed work "Bharat Sukh", he emphasizes that true happiness is not derived from external possessions, but emerges from inner awareness, a tranquil mind, and self-realization.

Ranchi, Jharkhand



Dr. Rakesh Kumar
Author | Host – "Dear Sahityakar", an interview show on Credent TV
He is associated with teaching and literary activities in the fields of Hindi language, literature, and journalism. As a writer and media professional, he actively works to promote contemporary literary discourse through digital and television platforms.

Jaipur, Rajasthan, India

"परिवार से राष्ट्र तक सात्विकता की यात्रा"

डॉ. राकेश कुमार: जब हम सुख-दुःख, आत्म-संतोष, पवित्रता और अस्तित्व की बात करते हैं, तो इन सबके सम्मिश्रण से एक शब्द बनता है—सात्विकता। आचार्य जी, इस यांत्रिक, चकाचौंध भरे दौर में... सात्विकता की उपयुक्तता को हम किस रूप में देखें?

अव्यक्त जी: सबसे पहले आप सबके भीतर विराजमान प्रभु को प्रणाम। और यहाँ उपस्थित माताओं के भीतर जो जगदम्बा है—उसे प्रणाम। हम सबके भीतर प्रभु के दोनों रूप हैं—अर्धनारीश्वर। सात्विकता में जो कोमलता, सौम्यता, सौंदर्य, अहिंसा, क्षमा, दया, करुणा है—वह प्रायः स्त्री-तत्व के रूप में प्रकट होता है। और आज, जब हम गांधी और विनोबा को याद करते हैं—तो उनकी सात्विकता केवल विचार नहीं, जीवन का अनुशासन थी।

डॉ. राकेश कुमार: आपने कहा गांधी और विनोबा का जीवन अनुशासन था। जमशेदपुर से भी विनोबा जी का विशेष जुड़ाव रहा है—उस पर भी कुछ प्रकाश डालिए।

अव्यक्त जी: गांधी जी तीन बार जमशेदपुर आए और विनोबा जी का संयोग देखिए—वे या तो आश्रम में रहते, या यात्रारत रहते। पर जमशेदपुर में वे चार महीने रुके—स्वास्थ्य कारणों से। और यह भी संयोग है कि ठीक साठ वर्ष पहले, 19 दिसंबर 1965 को बिहपुर के गोपाल मैदान में विनोबा जी की सभा हुई थी। उस सभा में तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी भी उपस्थित थे।

उस समय यह परंपरा थी कि प्रधानमंत्री किसी बड़े निर्णय से पहले विनोबा जी से मार्गदर्शन लेते थे—और ताशकंद रवाना होने से ठीक पहले शास्त्री जी यहाँ आए।

पीयूष पुष्पम: यह प्रसंग इस नगर के सांस्कृतिक-आध्यात्मिक इतिहास को और गरिमा देता है।

अव्यक्त जी: अब मूल बात—सात्विकता। इस चर्चा से पहले मैं विनोबा जी की साम-प्रार्थना का स्मरण कराना चाहता हूँ—जिसमें सर्व-धर्म का समन्वय है। यह प्रार्थना भीतर के झगड़े और बाहर के संघर्ष—दोनों को शांत कर सकती है। "ॐ तत्सत् श्री नारायण तू, पुरुषोत्तम गुरु तू..."

शेष सामग्री पृष्ठ ... में



KENSTAR

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-21

विद्यादीप साहित्य सम्मान

अतिथिगण:
डॉ. दामोदर खड़से
डॉ. प्रेम जनमजेय
मंच संचालन:
डॉ. संध्या सिन्हा
संयोजक:
डॉ. पुष्पा कुमारी एवं आरती श्रीवास्तव



21 दिसंबर, 2025 | क्रिस्टल हॉल, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 14.40 - 15.30

साहित्य-सेवा, साधना और सृजन के प्रति आजीवन समर्पण के लिए

"विद्यादीप वयोवृद्ध साहित्य गौरव सम्मान"

- डॉ. सी. भास्कर राव
- श्री अरविंद विद्रोही
- श्री लक्ष्मी निधि
- श्री दिनेश्वर प्रसाद सिंह 'दिनेश'
- श्रीमती निर्मला ठाकुर



स्वास्थ्य कारणों से श्रीमती निर्मला ठाकुर एवं श्री दिनेश्वर प्रसाद सिंह 'दिनेश' समारोह में अनुपस्थित रहे. उनका सम्मान स्नेहपूर्वक उनके आवास पर भेजा गया.

हिंदी संस्कृति को जीवंत रखने वाली जमशेदपुर की विभूतियों को
"विद्यादीप सम्मान"



डॉ. जूही समर्पिता



श्री प्रसेनजीत तिवारी



श्री गोविंद दोदराजका



श्री जयनंदन



श्री सुखदेव महतो



श्री कमल किशोर अग्रवाल



श्री हरि मित्तल



श्री नरेश अग्रवाल

इस श्रेणी में कुल 9 पुरस्कार प्रदान किए गए.टैगोर सोसायटी, जमशेदपुर के प्रतिनिधि अनुपस्थित रहे;
अतः उनका सम्मान उनके कार्यालय को प्रेषित किया गया.

VIDHYADEEP
FOUNDATION

हिंदी साहित्य एवं नाट्य मंच के प्रति समर्पण तथा जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल के सतत समर्थन के लिए

"विद्यादीप सहयोगी सम्मान"



डॉ. रागिनी भूषण



डॉ. मुदिता चंद्रा



श्रीमती विद्या तिवारी



श्रीमती सुधा गोयल नवीन



श्रीमती अनिता सिंह



डॉ. संध्या सिन्हा

भावनाओं और संवेदनाओं से सजे

इस सम्मान समारोह की कुछ झलकियाँ



VIDHYADEEP
FOUNDATION

हिंदी साहित्य एवं नाट्य मंच के प्रति समर्पण तथा जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल के सतत समर्थन के लिए

"विद्यादीप सहयोगी सम्मान"



नन्हे शब्दों में बड़े सपने रचतीभाविका कश्यप पर

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल का स्नेह और आशीर्वाद



बरगद की छाँव में...

(सम्मान, स्मृति और कृतज्ञता का भावुक सत्र)

विनोदीय काउंडेशन के तत्वावधान में आयोजित जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल के दूसरे दिन, होटल के क्रिस्टल हॉल में आयोजित तीन घंटे का ऐसा सम्मान-सत्र आयोजित हुआ, जिसने उपस्थित हर मन को विरासत की नमी से भिगो दिया। यह सत्र केवल सम्मान का आयोजन नहीं था, बल्कि स्मृतियों के फूल पिरोने, सुकृतों को सहेजने और आशीषों से समय को सहलाने का एक भावनात्मक अनुष्ठान था।

इस सम्मान-सत्र में जमशेदपुर नगर की उन शीर्ष साहित्यिक और सांस्कृतिक विभूतियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की गई, जिनके हाथों इस नगर की साहित्यिक यश-पताका फहराई। कुछ कीर्ति-स्तंभ समय की यात्रा में ब्रह्मलीन हो चुके हैं, जिनका ऋण यह महानगर सदा वहन करता रहेगा। पद्मपूज्य श्री बच्चन पाठक 'सलिल' जैसी विभूतियों की सुगंध आज भी इस लौह नगरी की दिशाओं को महकाती है, वहीं वर्तमान लेखन के मुकुटमणि आदरणीय डॉ. नरेन्द्र कोहली ने अपने सृजन से युग को सार्थक किया।

इसी भावभूमि पर जमशेदपुर की धरा ने अपने पंचरत्नों को नमन किया—

परम पूज्या डॉ. निर्मला ठाकुर,
पूज्य डॉ. भास्कर राव,
पूज्य श्री लक्ष्मीनिधि,
पूज्य श्री दिनेश्वर प्रसाद सिंह "दिनेश",
पूज्य श्री अरविन्द बिद्रोही

आयोजकों ने श्रद्धा के निमंत्रण-कलश के साथ उनके द्वार पर आमंत्रण गीतों की भावपूर्ण पुकार भेजकर और बदले में आयोजक-मंडल आशीषों से सराबोर हो गया।

सत्र का वातावरण अत्यंत भावुक था। अंतर्मन की वंदनवारों से सुसज्जित क्रिस्टल हॉल में एक मौन प्रतीक्षा थी—कब ये आसंदियाँ ज्योतिर्मय होंगी और कब दिव्य विभूतियाँ उन पर विराजमान होंगी।

पूज्य डॉ. भास्कर राव और श्रद्धेय श्री लक्ष्मीनिधि जी व्हीलचेयर पर पधारे, वहीं श्रद्धेय श्री अरविन्द बिद्रोही जी स्वास्थ्य की चुनौती से उबरते हुए धैर्यवाणी के साथ मंच तक पहुँचे। यह क्षण केवल दृश्य नहीं, अनुभूति था।

डॉ. भास्कर राव मानो अपनी अगली पीढ़ी को अपना जीवन-मर्म सौंप रहे हों। उनकी अनुभूति का गंगाजल पूरे सभागार में छिटकता प्रतीत हुआ। कृतज्ञता उनके अधरों से बह रही थी। जिन्हें सम्मान देने मंच तक आमंत्रित किया गया था, वही भावावेश में आयोजक को सहारा देकर मंच तक ले आए—मानो किसी विशाल बरगद ने अपनी शाखाओं से आकाश की ओर उठा लिया हो। इससे बड़ा सम्मान और क्या हो सकता था।

श्रद्धेय लक्ष्मीनिधि जी ने अपने समय के असंख्य पन्नों को शब्दों में उकेरा और श्रोता उन्हें पढ़ते-पढ़ते उसी काल को गुनगुनाने लगे। श्रद्धेय अरविन्द बिद्रोही जी के भीतर आज भी उत्साह जीवित था—जिसे वे आने वाले समय के हाथों सुरक्षित सौंप देना चाहते थे। वहीं श्रद्धेया निर्मला दीदी और श्रद्धेय दिनेश भैया ने अपनी छाया से ही भरपूर आशीष बरसाए।

इस सत्र में संदीप मुरारका जी और आयोजन समिति के सदस्य निरंतर आशीष-स्नेह से महाते रहे। हृदय-कमल खिलते रहे, संकल्प पलते रहे और महानगर के बरगदों की छाँव निरंतर मिलती रही। यह सत्र जमशेदपुर की जिनी सांस्कृतिक संपदाओं से जुड़ा हुआ था—आह्लाद से भरा, अंत:उत्सव का प्रवाह लिए हुए, नैरंतर्य की पुकार करता हुआ।

यह सत्र बहुत सुंदर था—बहुत भावुक, बहुत अपना।

डॉ. यामिनी भूषण
सेवानिवृत्त उपाचार्य
पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत
कोल्हान यूनिवर्सिटी

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-22

Green Revolution 2.0 : जल, जंगल और जन–भागीदारी

वक्ता:
पद्मश्री लक्ष्मण सिंह
पद्मश्री सुंडाराम वर्मा
पद्मश्री जमुना टुडू
संवाद सूत्रधार:
डॉ. शिवओम सिंह
संयोजक:
अंशुमन भगत



21 दिसंबर, 2025 | क्रिस्टल हॉल, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 15.30 - 16.20



Jamuna Tudu
Padma Shri Awardee | Environmentalist
A remarkable Santhal woman and a pioneering environmental activist who led the movement to protect forests in Jharkhand.
She was honoured with the Padma Shri in 2019 for her courageous and impactful work in forest conservation.

Chakulia, East Singhbhum



Sundaram Verma
Padma Shri Awardee | Innovative Farmer
The pioneer of the 16-inch rainfall model, Sundaram Verma is an environmental crusader who developed a unique technique to grow greenery in arid regions using just one litre of water per plant. His sustainable farming model for low-rainfall areas has become a source of inspiration for farmers across India.

Rajasthan



Laxman Singh
Padma Shri Awardee | Water Conservationist
Known as the father of the Chauka Revolution, a leading environmentalist whose simple yet powerful rainwater-harvesting system has revived drought-prone villages. His work exemplifies how grassroots innovation can drive extraordinary and sustainable change across India's arid regions.

Rajasthan



Dr. Shivom Singh
Environmental Expert
A state-level environmental expert with strong experience in EIA, pollution control, and water and air quality, known for promoting sustainable development through clear and practical insights.

Uttar Pradesh

डॉ. शिवओम सिंह : आज हम ऐसे विषय पर एकत्र हैं, जो केवल पर्यावरण से नहीं, बल्कि हमारे अस्तित्व से जुड़ा है— जल, जंगल और जन-भागीदारी। मेरा मानना है कि जल और जंगल केवल संसाधन नहीं, बल्कि सभ्यता की नींव हैं। जब तक आम जन इससे नहीं जुड़ता, तब तक कोई भी सरकारी योजना स्थायी नहीं हो सकती। इसी विचार के साथ मैं सबसे पहले पद्मश्री लक्ष्मण सिंह जी से आग्रह करूंगा कि वे अपने अनुभव साझा करें।

पद्मश्री लक्ष्मण सिंह : धन्यवाद। मैं वर्षों से जल संरक्षण के क्षेत्र में काम कर रहा हूँ और एक बात पूरे विश्वास से कह सकता हूँ— समाधान हमारे अतीत में छिपा है। ग्रामीण भारत में सदियों से जल प्रबंधन की जो परंपराएँ रही हैं—तालाब, जोहड़, बावड़ी—वे आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं। विकास के नाम पर यदि हम प्रकृति से दूरी बना लेंगे, तो भविष्य में हमें इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।

डॉ. शिवओम सिंह : आपका संकेत स्पष्ट है कि आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन ज़रूरी है। इसी संदर्भ में मैं सुंदराम वर्मा जी से जानना चाहूँगा—जल-भागीदारी को आप कैसे देखते हैं?

पद्मश्री सुंदराम वर्मा : मेरे अनुभव में, जब तक स्थानीय समाज स्वयं जिम्मेदारी नहीं लेता, तब तक कोई भी आंदोलन सफल नहीं होता। चाहे जल संरक्षण हो या जंगलों की रक्षा—नीतियाँ ऊपर बनती हैं, लेकिन उनका जीवन नीचे, गाँव और समुदाय में होता है। जब लोगों को यह एहसास हो जाता है कि प्रकृति उनकी अपनी है, तब संरक्षण एक अभियान नहीं, जीवन-शैली बन जाता है।

डॉ. शिवओम सिंह : बहुत महत्वपूर्ण बात कही आपने। अब मैं जमुना टुडू जी से आग्रह करूंगा, जो जंगलों की रक्षा के लिए एक जीवंत संघर्ष का नाम बन चुकी हैं।

पद्मश्री जमुना टुडू : जंगल केवल पेड़ों का समूह नहीं हैं। वे जल स्रोतों की सुरक्षा, वायु की शुद्धता और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य से सीधे जुड़े हैं। आज जिस तरह अंधाधुंध कटाई हो रही है, वह केवल जंगलों को नहीं, पूरे जीवन-चक्र को नुकसान पहुँचा रही है। इसका समाधान कानून से नहीं, सामूहिक चेतना से निकलेगा।

शेष सामग्री पृष्ठ ... में



"जल, जंगल और जन तीनों का संतुलन ही भविष्य है।"

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-23

दर्शन की सीमाएँ नहीं होती : एक गहन विचार-यात्रा

वक्ता:
आचार्य डॉ अरुण प्रकाश
संवाद सूत्रधार:
डॉ. मयंक मुरारी
संयोजक:
अनीता निधि



21 दिसंबर, 2025 | क्रिस्टल हॉल, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 16.20- 17.10



Acharya Dr. Arun Prakash
Philosopher

A renowned philosopher and multilingual scholar, proficient in Sanskrit, Hindi, English, Persian, Tamil, Korean, and several other languages. His scholarship reflects a rare confluence of the profound depth of Indian philosophical thought and a truly global intellectual perspective.

New Delhi



Dr. Mayank Murari
Author

An author, thinker, and motivational speaker whose development-oriented work and writings thoughtfully connect society, governance, and the aspiration for meaningful change with sensitivity and powerful expression.

Ranchi, Jharkhand

"BOOKS INFORM EXPERIENCE TRANSFORMS."



डॉ. मयंक मुरारी : आज जब हम "दर्शन की सीमाएँ" की बात करते हैं, तो सबसे पहले यह जानना आवश्यक हो जाता है कि भारतीय और पाश्चात्य दर्शन में मूलभूत अंतर कहाँ है। आप इस भिन्नता को कैसे देखते हैं?

आचार्य डॉ. अरुण प्रकाश: बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है। पाश्चात्य चिंतन मुख्यतः मन पर केंद्रित रहा है, जबकि भारतीय दर्शन सत्य की खोज में निरंतर सक्रिय रहा है। इसी कारण दोनों की परिभाषाएँ और उनकी प्रक्रियाएँ अलग-अलग हैं। भारतीय दर्शन प्रश्न करता है– मैं कौन हूँ? सत्य क्या है? जबकि पाश्चात्य दर्शन अधिकतर विश्लेषणात्मक और बौद्धिक सीमाओं में बँधा रहा।

डॉ. मयंक मुरारी: आपका संकेत इस ओर है कि भारतीय दर्शन केवल विचार नहीं, बल्कि अनुभव की यात्रा है?

आचार्य डॉ. अरुण प्रकाश: बिल्कुल। भारतीय चिंतन में दर्शन जीवन से कटकर नहीं, जीवन के भीतर उतरकर विकसित होता है। दुर्भाग्यवश, वामपंथी विचारधाराओं ने नानक और कबीर जैसे संतों को भी एक सीमित और विकृत दृष्टि से प्रस्तुत किया है, जबकि वे भारतीय आत्मिक परंपरा के प्रतिनिधि थे।

डॉ. मयंक मुरारी: मैं आपकी बात से पूर्णतः सहमत हूँ। ऐसे एकांगी चिंतन समाज में नकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हैं। भारतीय दार्शनिक परंपरा हमें अपनी आंतरिक सच्चाइयों, कमजोरियों और अहंकार को पहचान-पहचान कर देखने के लिए प्रेरित करती है। यह सतही जानकारी से ऊपर उठने की यात्रा है।

आचार्य डॉ. अरुण प्रकाश : हाँ, और यही दर्शन की असली शक्ति है। हमारा दर्शन हमें वर्तमान में जीने, अपने अस्तित्व के नैतिकता को समझने और उससे जुड़े रहने की प्रेरणा देता है। ज्ञान केवल पुस्तकों से नहीं आता—वह चिंतन, मनन और अनुभव से प्राप्त होता है। **डॉ. मयंक मुरारी:** और शायद इसी कारण ध्यान भारतीय दर्शन का केंद्रीय तत्व बन जाता है।

आचार्य डॉ. अरुण प्रकाश : बिल्कुल। ध्यान के बिना जीवन के रहस्यों और उसकी संपूर्णता को समझना संभव नहीं। ध्यान ही वह द्वार है, जहाँ से दर्शन अनुभूति में बदलता है।



संकलन : श्रीमती रंजना पाण्डेय

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



सत्र-24

जब लगेगा ग़ज़ल–कविता का तड़का :

तब बनेगा माहौल

सत्र वक्ता:
मदन मोहन 'दानिश'
अंबर पांडेय
संवाद सूत्रधार:
पीयूष पुष्पम
संयोजक:
रीना सिन्हा एवं उपासना सिन्हा



21 दिसंबर, 2025 | क्रिस्टल हॉल, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 17.10-18.00



Madan Mohan 'Danish'
Ghazal Poet | Writer
A compelling voice in the contemporary ghazal landscape, he weaves delicacy, spirituality, and modern sensibilities into his poetry.His celebrated lines –**"Ye hasil hai meri khamoshiyon ka,ki patthar aajmane lag gaye."** His verses leave behind a pause, a calm, and a lingering resonance in every mehfil.

Gwalior, Madhya Pradesh



Ambar Pandey
Poet
A distinguished poet, critic, and thinker, whose works bring depth, experimentation, and a strong inner voice to contemporary Hindi poetry. His writings thoughtfully engage with society and culture, contributing significantly to modern literary discourse and inspiring new creative perspectives.

Indore, Madhya Pradesh



Piyush Pushpam
Founder: Rachayita - The Creator
Assistant Professor at Hansraj College, University of Delhi. Actively engaged in promoting literature, art, and culture at the grassroots, he has organized literary festivals across India for the past five years. He is currently pursuing research in the Hindi Department, University of Delhi.

New Delhi



"शब्द बहे, लय चली और माहौल बन गया"

पीयूष पुष्पम : आज का यह सत्र अपने नाम की तरह ही कुछ अलग है–ग़ज़ल-कविता का तड़का। अक्सर कहा जाता है कि ग़ज़ल एक जटिल विधा है–आप इसे कैसे परिभाषित करेंगे?

मदन मोहन 'दानिश' : देखिए, ग़ज़ल को लेकर बहुत-सी भ्रांतियाँ हैं। सच तो यह है कि ग़ज़ल भी अन्य पद्य-विधाओं की तरह एक मात्रिक छांदस विधा है। यहाँ भी छंद की कसौटी मात्राएँ ही हैं। यह मान लेना कि कठिन शब्दों से ही ग़ज़ल महान बनती है–सरासर ग़लत है। यदि बात जन–जन तक पहुँचानी है, तो भाषा भी जन–जन की होनी चाहिए।

पीयूष पुष्पम : तो क्या ग़ज़ल किसी विशेष भाषा की मोहताज नहीं?

मदन मोहन 'दानिश' : बिल्कुल नहीं! ग़ज़ल किसी भाषागत विवाद में नहीं बँधती। ग़ज़ल, ग़ज़ल है–यह पद्य की एक शैली है, जो किसी भी भारतीय भाषा में कही जा सकती है।

पीयूष पुष्पम : श्रोताओं से भी कुछ प्रश्न आ रहे हैं। पूनम शर्मा "रूमेलिन" जी का सवाल है–ग़ज़ल में मात्रा-पतन को कैसे देखा जाए?

मदन मोहन 'दानिश' : बहुत अच्छा प्रश्न है। मैं मानता हूँ कि लय सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। प्रवाह बनाए रखने के लिए मात्रा का घट-बढ़ कई बार दोष नहीं, बल्कि गुण बन जाता है। कबीर की पंक्ति याद कीजिए–"कबीरा खड़ा बाज़ार में लिए लुकाठी हाथ" यहाँ छंद की गेयता का सम्मान करते हुए 'कबीर' भी 'कबीरा' हो जाते हैं। जब श्रोता रचना के साथ बहने लगता है, तभी कविता अपनी पूर्णता पाती है।

पीयूष पुष्पम : अंबर जी, आप इस दृष्टिकोण को कैसे देखते हैं?अंबर पांडेय: मैं पूरी तरह सहमत हूँ। मात्रा घटाने-बढ़ाने की परंपरा बहुत प्राचीन है। छंद-मुक्त कविता भावप्रधान या बौद्धिक हो सकती है, किंतु छंदबद्ध रचना सीधे हृदय को छूती है। मंच पर जब ऐसी रचनाएँ पढ़ी जाती हैं, तो श्रोता तालियों की ध्वनि के साथ स्वयं उस लय का हिस्सा बन जाते हैं।

पीयूष पुष्पम : दानिश साहब एक ग़ज़ल हो जाए।

शेष सामग्री पृष्ठ ... में

रचयिता

जमशेदपुर
लिटरेचर फेस्टिवल



पद्मश्री गुलाबो सपेरा का मोहक
कालबेलिया नृत्य

सम्मानित अतिथि :
श्री बन्ना गुप्ता, पूर्व मंत्री, झारखंड सरकार
श्री लक्ष्मण टुडू, पूर्व विधायक, घाटशिला
श्री पीयूष पांडेय IPS, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, पूर्वी सिंहभूम
श्री डी. बी. सुंदर रामम, VP CS, टाटा स्टील
श्री रमेश अग्रवाला, समाजसेवी
श्री विजय आनंद मूनका, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष, एफजेसीसीआई, रांची

संयोजक:
हरि मित्तल एवं कमल किशोर अग्रवाल



21 दिसंबर, 2025 | बैंक लॉन, होटल रमाडा, जमशेदपुर | 19.30 -22.00


Shyam
Shyam
































जमशदपुर
जनता, जलवायु और विचारों का संगम



















अतिथियों के कैरिकेचर : मनोज कुमार सिन्हा का कलात्मक कमाल





ज्ञान का आदान-प्रदान : पुस्तकों के साथ


























लिटरेचर फेस्टिवल



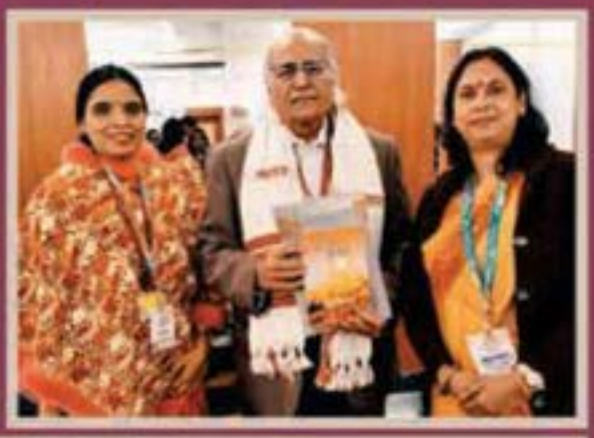















जमशेदपुर
बदलता भारत, बदलती मीडिया कहानी






JAMSHEDPUR LITERATURE
DHYADEEP

प्रायोजक : उत्सव के मौन सूत्रधार



B. L. Mittal



Naresh Agarwal



Vishal Kumar Agarwalla



Punit Kauntia



Abhishek Bhalotia



Santosh Khetan



Alok Choudhary



Mahesh Agarwal


Manoj Agarwal


Pankaj Patel


CA Bikash Agarwal


Rakesh Giri


Rohit Agarwal


Kishan Sonthalia


Bablu and Yash Agarwal


Nitin Bhalotia 'Chintu'


Vishal Tiwari

From the Facebook Walls – JLF 2025

Amnber Pandey's post



Prasenjit Tiwary's post





Anjum Sharma's post



Anju Keshaw's post

Upasna Sinha's post



Kaynat Kazi's post



Savita Singh Meera's post



Arun Prakāśa
24 Dec 2025 ·

"नानक और कबीर भारतीय संस्कृति व आध्यात्मिक परंपरा के प्रखर बिंदुओं, प्रतीकों के आलोचक या विरोधी नहीं हैं...बल्कि वह इन प्रतीकों और उनकी पवित्रता को लेकर कहीं अधिक सजग हैं। ...see more



134 16 comments

134 5

Kashni Sharma's post



Manoj Kumar Sinha's post



Harivansh's post



Anuman Bhagat's post



Somesh Soren
19 Dec 2025 ·

आज जमशेदपुर के रमाडा होटल में आयोजित लिटरेचर फेस्टिवल में कला, कलम और विचारों के संगम कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर मिला।

इस अवसर पर बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों और विचारकों की उल्लेखनीय सहभागिता रही। संवाद, रचनात्मकता और वैचारिक आदान-प्रदान से भरपूर यह आयोजन साहित्य और संस्कृति को नई दिशा देने वाला सिद्ध हुआ।



215 4 comments

215 4 11

Arun Prakāśa
24 Dec 2025 ·

"नानक और कबीर भारतीय संस्कृति व आध्यात्मिक परंपरा के प्रशस्त बिंदुओं, प्रतीकों के आलोचक या विरोधी नहीं हैं...बल्कि वह इन प्रतीकों और उनकी पवित्रता को लेकर कहीं अधिक सजग हैं।

नानक कंधे पर जनेऊ पहनने से मना कर देते हैं, क्योंकि उन्होंने भीतर की ज्योति, ज्ञान को जनेऊ मानकर धारण किया है.... काहया ब्रह्मा मन है धोती, ज्ञान जनेऊ ध्यान कुबायती....नानक ने जनेऊ को ऐसे धारण किया है कि वह कभी अपवित्र न हो, वह उसके उतर जाने के भय से मुक्त हो गए हैं....कबीर बाहरी उपक्रम को इसलिए अबांग कर रहे हैं क्योंकि वह समझते हैं कि साधुता को कोई चीन्ह ले तो वह संदिग्ध हो जाती है। जब परंपरा के प्रतीकों पर ही आघात हो रहे हों तो, बिना प्रतिक्रिया के, उन्हें आभ्यंतर में सहेज लेना ही हमारे संस्कृति की प्रविधि है।"

होटल रमाडा में 20-21 दिसम्बर को आयोजित जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल में मेरे संवाद के कुछ अंश। संवाद सत्र के सूत्रधार डॉ. मयंक मुरारी जी थे, जोकि भारतीय परंपरा के गहन अध्येता और लेखक हैं।

इस सम्यक आयोजन के लिए विद्यादीप फाउंडेशन और श्री Sandeep Murarka जी के दल को बहुत बधाई। जमशेदपुर ने जिस आत्मीयता से इस विचार संगम की मेजबानी की वह प्रशंसनीय है।

Jamshedpur Literature Festival



134 16 comments

134 5

Shyam Kumar
19 Dec 2025 ·

आज अचानक मारवाड़ महोत्सव की याद आ गयी, याद आया एक व्यक्ति पिछले 30 वर्षों से अलग अलग जोनर से जुड़कर अपने आपको इस तरह स्थापित करता है कि खुद को भी रश्क हो जाए। लेकिन मुझे इस व्यक्ति से एक सम्मानजनक प्यार है या यूं कहें कि बस। शुरुआत एक पुस्तकालय से और आज जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल का आयोजन। इस...see more



14 2 comments

14 2 5



बोलती तस्वीरें




















DECEM




जमशेदपुर














EMBER 20 21 - 2025
































जमशेदपुर




JAMSHEDPUR LITERATURE








फेस्टिवल




DECEMBER 20th 21st- 2025




















DECEMBER




DECE


























































































जमशेदपर
























KENSTAR


JAMS




















शेदपुर



































एक आत्मीय मुलाकात

कहते हैं—जीवन में कोई भी मिलन आकस्मिक नहीं होता। कौन, कब, कहाँ और कैसे हमारे कब से जुड़ेगा—यह सब मानो विधाता की अदृश्य लेखनी में पहले से अंकित होता है। शायद पूर्व जन्मों के अधूरे संवाद, अधूरे स्नेह और अधूरे ऋण ही इस जन्म में आत्मीय संबंधों का रूप धर लेते हैं; या फिर नियति स्वयं तय करती है कि किससे हमारा हृदय कब और कितनी गहराई तक जुड़ेगा। यह अनुभूति मैं वर्षों से अपने भीतर सँजोए हुए थी, किंतु इस बार जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल ने मेरी इस धारणा को और भी सुदृढ़ कर दिया।



लिटरेचर फेस्टिवल से ठीक पहले संदीप मुद्गलका जी ने सहज भाव से कहा—"तीन पुस्तकों का लोकार्पण होना है, उनमें एक विनोद दुबे जी की पुस्तक 'कसौटी' भी है।" न कसौटी मैंने पढ़ी थी, न ही विनोद दुबे जी के साहित्य से मेरा कोई प्रत्यक्ष परिचय था। बस इतना जानती थी कि वे सिंगापुर के प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। व्यस्तताओं के कारण मुंबई तक आने का समय भी नहीं मिला और जब महोत्सव सिर पर आ पहुँचा, तब सोचा—चलो, उनके विषय में दो-चार पंक्तियाँ ही सही, लिख ली जाएँ।

मंच पर मुझे मात्र दो मिनट मिले थे। उन्हीं क्षणों में मैंने कहा—"विनोद दुबे सिंगापुर के प्रतिष्ठित, पुरस्कृत साहित्यिक हस्ताक्षर हैं, जिनकी कविताएँ सीधे युवा पीढ़ी के हृदय से संवाद करती हैं। जीवन-रूपी जहाज़ के इस कप्तान ने अनेक देशों की यात्राएँ की हैं और हर भूभाग में अपनी विशिष्ट पहचान निर्मित की है। जहाँ-जहाँ वे गए, वहाँ की संस्कृति में भारतीयता का सुगंधित स्पर्श जोड़ते चले गए। जिस कसौटी की खोज में वे देश-विदेश भटके, वह तो स्वयं उनकी भारतीय चेतना में रची-बसी थी।

"यही था मेरा परिचय—संक्षिप्त, पर भावपूर्ण। मंच से उतरते समय मेरे हाथों में उनकी अभी-अभी लोकार्पित पुस्तक 'कसौटी' थी और उनकी आँखों में कृतज्ञता का उजास। सामने सोफे पर मेरे पति डॉ. अंजनी किशोर सहाय के साथ ही विनोद दुबे जी बैठे थे। बातचीत के दौरान अंजनी जी ने सहजता से बताया कि हमारा बेटा सिंगापुर में बर्क्ले बैंक में कार्यरत है। संवाद की डोर अपने आप खुलती चली गई। मेरा परिचय भी हुआ, किंतु औपचारिकता के बिना—जैसे आत्माएँ ही संवाद कर रही हों।

दो दिवसीय साहित्य महोत्सव के अंतिम सत्र के बाद जब हम घर लौटने को हुए, तो विनोद जी से फिर सामना हुआ। बड़े ही बेबाक अंदाज़ में मुस्कराकर बोले—

"अच्छा, आप ही हैं इनकी पत्नी, जिनकी ये पीठ पीछे भी इतनी प्रशंसा करते हैं... ऐसे पति बहुत कम होते हैं।" क्षण भर में ठहाकों की गूँज फैल गई, और एक तसवीर उस आत्मीय क्षण को सहेजने के लिए खिंच गई। चलते-चलते मैंने यूँ ही कह दिया—"अगर कल सुबह आप जमशेदपुर में हों, तो हमारे डी.बी.एम.एस. कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन अवश्य आइएगा, हम क्रिसमस मना रहे हैं।" मेरे लिए यह एक सहज निमंत्रण था, किंतु जब विनोद जी ने सहर्ष स्वीकार किया, तो प्राचार्या डॉ. जूही समर्पिता की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा।

अगली सुबह डॉ. अंजनी उन्हें होटल से लेकर आए। ठीक 11 बजे कॉलेज के प्रेक्षागृह में छात्रों की करतल-ध्वनि के बीच उनका स्वागत हुआ। क्रिसमस के उल्लास में डायरेक्टर संस्कृति की प्रतीक डी.बी.एम.एस. कॉलेज के मंच पर सजी—और उस दृश्य के साक्षी बने विनोद दुबे। अपने स्वागत भाषण में मैंने उनके साहित्यिक परिचय के साथ-साथ उनके उदार और विनम्र व्यक्तित्व का भी उल्लेख किया और बिखरी शाम की घटना सुनाकर छात्रों को मनुष्यता का एक जीवंत उदाहरण दिया। उत्तर में कवि विनोद दुबे ने हमारे दाम्पत्य स्नेह को देखकर शहरीर की प्रसिद्ध कविता सुनाई—

"वह भी एक गाँव से आई थी और हम भी किसी गाँव से आए थे इस रुखे स्टील के शहर ने हम दोनों को अपनाया था. वहीं किसी कोने में उसने एक किचन सजाया था ,मैंने कुछ किताबें सजाई थीं एक चुक शेल्फ लगाया था. वहीं कहीं पर गद्दा डाल के हम दोनों सो जाते थे ,चांद को देखते-देखते हम बाहों में सो जाते थे. तब भी दुनिया में दर्द बहुत था ,मुद्दे अखबार में थे ,पर हम दोनों को क्या मतलब हम दोनों तो प्यार में थे"

सभागार तालियों से गूँज उठा। सारा मंत्रमुग्ध थे, और मैं—संकोच से लाल होती हुई। इसके बाद उन्होंने बी.एड. के छात्र-छात्राओं के लिए एक स्वरचित कविता सुनाई—

मैं तुम्हारा टीचर हूं भूल गए तुम? ए फॉर एप्पल से लेकर फुल स्टाप कौमा तक, कबीर और तुलसी से लेकर अल्का बीटा गामा तक, मैं ही तुम्हारे साथ हूं,... तुम्हें याद है या फिर से याद दिलाऊं? उन भूली बिसरी यादों को कान पकड़कर फिर से गिनवाऊं? जिसकी छड़ी से कांपा करते थेतुम ,तुम्हारे बचपन का पहला डर हूं मैं ,अनुशासन का जिसने पाठ पढ़ाया तुम्हारा वही पी टी वाला सर हूं मैं. तुम्हारी मासूमियत को जिसने पहचाना तुम्हारे भीतर का लाज शर्म हूं मैं तुम्हें प्रेम और करुणा का अर्थ समझाया वही हिंदी वाली मैडम हूं मैं. जिसने तुम्हारी आंखों को ख्वाब दिखाए कुछ कर गुजरने का इंकलाब हूं मैं कठिन सवाल तुम्हें कान पकड़कर हल करवाया, तुम्हारा वही गणित वाला माठ साहब हूं मैं

अतिथि के निर्माता शिक्षकों की भूमिका को रेखांकित करती, अत्यंत संवेदनशील और प्रेरक यह कविता शिक्षकों और छात्रों के हृदय में गहरे उतर गई।

विदा के समय मैंने अपनी संपादित पुस्तक 'मानस के स्त्री पात्र' (जिसका संपादन डॉ. अरुण सज्जन और मैंने किया था) उन्हें भेंट की। अनायास ही मेरी कलम ने लिखा "अपने साहित्यकार पुत्र के लिए।" —जूही समर्पिता

अतिथि देवो भव—इस भावना से मैं उन्हें कॉलेज गेट तक छोड़ने आई। वहीं उन्होंने मेरे चरण स्पर्श किए और सिंगापुर आने का स्नेहिल निमंत्रण दिया। मैं अभिभूत थी—पहली ही भेंट में कोई इतनी आत्मीयता से कैसे जुड़ सकता है? मैं ही नहीं, मेरे अंतर्मुखी स्वभाव के पति अंजनी भी इस 'पुत्र' से ऐसा अपनापन महसूस कर रहे थे कि उन्हें अपनी कार में बिठा डिमना घुमाने ले गए। चार-पाँच घंटे जमशेदपुर के दर्शनीय स्थल और सड़कों पर दोनों के बीच ऐतिहासिक संवाद चलता रहा।

विनोद जी पहली बार लौह नगरी आए थे और टाटा स्टील के वरिष्ठ पदाधिकारी डॉ. अंजनी बड़े गर्व से उन्हें अपना शहर घुमा रहे थे... जब ट्रेन का समय पूछा गया, तो पता चला कि गाड़ी टाटानगर से नहीं, राँची से पकड़नी है। आनन-फानन में संदीप मुद्गलका जी ने व्यवस्था करवाई। सौभाग्य से भारतीय रेल ने भी साथ दिया—ट्रेन मिल गई। संतोष पर पहुँचकर विनोद दुबे जी का संदेश आया, मानो वह आश्वस्ति कि यह मिलन क्षणिक नहीं, बल्कि किसी गहरे, अदृश्य सूत्र से बँधा हुआ है। और तब मुझे फिर विश्वास हो गया—जीवन में कोई भी मुलाकात यूँ ही नहीं होती।

डॉ. जूही समर्पिता
प्राचार्या : डी.बी.एम.एस. कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन
संस्थापक : बहुभाषीय संस्था सहयोग
संरक्षक : संस्कार भारती, जमशेदपुर

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल

बीस दिसम्बर की ठंडी सुबह कुछ और ठंडी हो गई जब कुहरे की धुंधली ओट में छिपे सूरज ने बाहर आने से इनकार कर दिया और सर-सर बहती सर्द हवाओं ने रही सही कसर पूरी कर दी... लगातीं लोहरम में एक चुनौती दी हो... "इस ठंड में बाहर आओ तो जानें?"

पर वो दिन आम दिन न था... उस दिन मैं गलमोहर सी जोश की ....उजाला था हौसलों का और रौशनी थी संकल्प की ... और इसी के साथ हम सब निकल पड़े अपने-अपने घरों से एक ऐसी मंजिल की ओर जहाँ किसी भी सर्द बहाने की कोई गुंजाइश न थी...जहाँ कोहरे को झुठलाता हुआ जगमगा रहा था साहित्य का सूरज... जहाँ उजाला था सुंदर विचारों का और जहाँ खिलने वाले थे विभिन्न विचारों के सुंदर फूल...

होटल हमाडा के प्रांगण में सज चुका था एक ऐसा मंच जो गवाह बनने वाला था देश भर से आए, साहित्य, कला और विचार के लोगों के संगम का और जिसमें शामिल होने वाले थे जमशेदपुर के साहित्यकार, नाट्यकर्मी, कलाकारों और समाज बुद्धिजीवी...

देखते ही देखते यह जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल नाम का महोत्सव प्रारंभ हुआ। इस उत्सव के एक के बाद एक संपन्न होते विभिन्न सत्र यूँ आज पढ़ रहे थे जैसे किसी अनबूझे अनजाने रहस्य की परत दर परत खुलती जा रही हो। एक से बढ़कर एक प्रस्तर रखा, अपने अपने क्षेत्रों के जानकार और महारथी, कला के उपासक, संगीत पारखी और मंजे हुए कलाकार... मंच पर जब अपने ज्ञान और विद्वता की पकावीध कैला रहे थे तो सचमुच ऐसा लग रहा था कि हमारे सामने एक अथाह सागर हो और उसके समक्ष हम कुछ नहीं बस रेत के एक कण मात्र हैं। सोपान जोशी, रानेश जैश, मनीष पुष्कले, डॉक्टर अंजुम शर्मा, प्रियदर्शन जी, योगकेश शुक्ल, बाबुता कोहली, हरिवंश जी, दामोदर खड़से, अंजू रंजन, स्वाति पराशर, शहगीर, रानेश जैश, मोरधूम लोयी, रविता बाजपेयी, आकांक्षा सिंह, अव्यक्त जी, मन्जू श्याम जी, पूर्णिमा साहू, लक्ष्मण सिंह, जमुना टुडू, मदन मोहन दानिश, अन्वर पांडेय, अभिषेक चौबे, पंकज झा, मुलाबो सपेरा ... ये कुछ ऐसे नाम थे जो इस दो दिवसीय लिटरेचर फेस्टिवल में हमारे रुबरु हुए ... जहाँ इनमें से कुछ अतिथियों के बारे में हमने देख-सुन रखा था वहीं कुछ लोगों के बारे में जानने और उन्हें सुनने का इस फेस्टिवल के माध्यम से मौका मिला...

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल की खासियत रही कि इसमें हर रुचि के दर्शकों के लिए कुछ न कुछ था... साहित्य, मीडिया, अध्यात्म, धर्म, पर्यावरण, चित्रकला, नाट्यकला, संगीत और नृत्य, इस उत्सव में इन दो दिनों में हर विषय को न सिर्फ छुआ बल्कि उसपर महत्वपूर्ण जानकारी भी साझा की।

सुनधुर सरस्वती वंदना और उद्घाटन सत्र हो या चाहे वो एथश्री से सम्मानित कलाकारों को स्मृति चिह्न प्रदान करना हो, पुस्तक अलंकरण हो या अलग अलग विषयों पर उसके जानकारों द्वारा सहज चर्चा , इस लिटरेचर फेस्टिवल का हर सत्र अपने आप में अनूठा और सुनने-सीखने लायक था।

संदीप मुरारका जी की परिकल्पना को ठोस धरातल पर उतारने में सही भूमिका निभाई विद्यादीप फाउंडेशन ने और इस स्वप्न को साकार किया नूही सनवीता, मुदिता चंद्रा और शानिजी भूषण जैसी कुशल, अनुभवी और मेहनती व्यवस्थापिकों ने। इस महोत्सव में जमशेदपुर साहित्य और कला प्रेमियों ने व्यवस्था और विभिन्न सत्रों का संयोजन में बढ़चढ़ कर सहयोग किया और हाथ बँटाया और इस अभूतपूर्व आयोजन के साक्षी बने।

इन सबके बावजूद भी यह स्वीकारना ही पड़ेगा कि संदीप मुरारका जी के भागीरथी प्रयास के आगे हमलोग नतमस्तक हैं... इतने बड़े आयोजन की तैयारी, व्यवस्था, और सुचारु रुप से कार्यान्वन कोई साधारण बात नहीं। देश भर के प्रख्यात लोगों को आमंत्रित करना और एक साथ एक मंच पर लाना कोई आसान काम नहीं।



इस साहित्य उत्सव में सिर्फ देखने सुनने का ही मौका नहीं था बल्कि वहाँ मिलने-मिलाने और खाने-पीने का भी समुचित प्रबंध था... चाय , कॉफी, मैगी, केक, लिट्टी, पावभाजी, चिप्स के काउंटर सुबह से शाम तक सजे थे और इसके अलावा दोपहर के भोजन का भी उत्तम प्रबंध था।

मैं सभी साहित्यकार बंधु बांधवों और बहनों को इस महोत्सव की सफलता की बधाई देती हूँ और आगे भी ऐसे आयोजन होने की शुभकामना प्रेषित करती हूँ। कुछ लोग जो इस लिटरेचर फेस्टिवल में नहीं उपस्थित हुए उन्होंने निःसंदेह ही राष्ट्रीय स्तर के विख्यात लोगों से मिलने और सीखने का एक अच्छा अवसर खो दिया।

कुल मिलाकर वर्ष 2025 जाते जाते हम जमशेदपुर वासियों की झोली में लिटरेचर फेस्टिवल के रुप में एक ऐसी सौगात दे गया जिसे साल दर साल याद किया जाएगा...

डीना सिन्हा 'सलोनी'
साहित्यकार
कोषाध्यक्ष: अखिल भारतीय साहित्य परिषद
सह सचिव: नवपल्लव साहित्यिक संस्था



संघर्ष से शिखर तक

पद्मश्री गुलाबो सपेरा की प्रेरणादायक जीवन गाथा



कालबेलिया नृत्य को दिलाई वैश्विक पहचान

कालबेलिया नृत्य को विश्व मंच तक पहुंचाने वाली पद्मश्री सम्मानित लोकनृत्य कलाकार गुलाबो सपेरा का जीवन संघर्ष, साहस और परंपरा को नई पहचान देने की अद्भुत गाथा है. गुलाबो, एक ऐसे समाज में जन्मी, जहां बेटियों को नाचने की अनुमति नहीं थी, लेकिन उन्होंने न केवल रूढ़ियों को तोड़ा बल्कि 'कालबेलिया नृत्य' को वैश्विक पहचान दिलाई. जनडोदपुर लिटरेचर फेस्टिवल में भाग लेने पहुंची पद्मश्री गुलाबो सपेरा से अन्नी अमृता की खास बातचीत

अन्नी अमृता : गुलाबो जी, आपका जनडोदपुर में स्वागत है. आपका जीवन एक मिसाल है. कृपया अपने बारे में, अपने जीवन के संघर्ष की यात्रा के बारे में बताएं...

गुलाबो सपेरा--मेरा जन्म जयपुर के पास कालबेलिया समाज में हुआ. बचपन से ही मेरा जीवन संघर्षों से घिरा रहा. दो साल की उम्र से ही मैं सपेरा परंपरा से जुड़ गई. पिता सांपों को बचाने का काम करते थे. समाज की कुरीतियों के चलते मुझे नवजात अवस्था में जमीन में गाड़ दिया गया था, लेकिन मां और मौसी की मदद से चंद घंटे बाद मेरी जान बचाई जा सकी. यह मेरा पहला जीवनदान था.

अन्नी अमृता--इस बात ने दिल को हिलाकर रख दिया कि आपको नवजात अवस्था में जमीन में गाड़ा गया. आधुनिक युग में भी ऐसी भयावह घटनाएं घटित हुईं, शायद कई लोग तो जानते भी नहीं होंगे. जब मां और मौसी ने बचाया, तब आगे का जीवन ऐसे निर्दयी समाज में कैसे व्यतीत हुआ? कैसे आपने कालबेलिया नृत्य को अलग पहचान दी?

गुलाबो सपेरा---समाज के डर और जुर्माने के कारण पिता मुझे अपने साथ रखने लगे ताकि कोई मुझे नुकसान न पहुंचा सके. सांपों के बच्चों को दूध पिलाने और उनके साथ रहते-रहते मैंने सांपों की चाल और लय को देखा, समझा और वहीं से नृत्य की प्रेरणा मिली. इस प्रकार सांप ही मेरे गुरु हैं. समाज की बंदिशों के कारण मैं घर और जंगल में छुपकर नाचती थी. उस समय बेटियों का नृत्य करना हमारे समाज में स्वीकार्य नहीं था और कालबेलिया नृत्य केवल पुरुषों द्वारा, महिला वेश में किया जाता था. सिर्फ पिता ही नहीं बल्कि मेरी मां और मौसी ने भी मेरा बहुत साथ दिया. मेरी मां घर पर पर्दे लगा देती थी ताकि मेरे नृत्य को समाज का कोई देख न सके. मां मुझे जंगल लेकर जाती थी, जहां मैं नृत्य का अभ्यास करती थी. इस तरह छुप छुपकर किए गए अभ्यास से मेरी प्रतिभा निखारने लगी.

पहला मंच और सामाजिक बहिष्कार

अन्नी अमृता---पहली बार कब आपको मंच मिला?

गुलाबो सपेरा---साल 1981 में महज सात वर्ष की उम्र में मुझे राजस्थान के नागौर 'पुष्कर मेले' में पहली बार मंच मिला. यह मेरे जीवन का निर्णायक मोड़ था. इसके बाद समाज ने मुझे बाहर कर दिया, लेकिन राजस्थान पर्यटन विभाग ने मेरा बहुत साथ दिया. विभाग के कुछ अधिकारियों ने इस तरह मेरा साथ दिया जिसे ताउम्र नहीं भूला जा सकता. आगे चलकर मुझे अमेरिका सहित कई देशों में प्रस्तुति देने का अवसर मिला. महारानी गायत्री देवी और पर्यटन विभाग के संरक्षण ने मेरे करियर को नई दिशा दी.

समाज के व्यवहार से मुझे बहुत चोट पहुंचती थी. कभी कभी बहुत निराश हो जाती थी, मगर मेरे माता-पिता हमेशा कहते थे कि आगे बढ़ो, आगे देखो, पीछे मुड़कर न देखो, जब आगे बढ़ो तब किसी भी चीज की परवाह न करो.

समाज ने जब स्वीकारा और दिया सम्मान

अन्नी अमृता--क्या समाज का व्यवहार एक के साथ बदला? इंटरनेट और अन्य स्रोतों से मुझे जानकारी मिली है कि आप अपने समाज की सरपंच पहली महिला थीं? यह कैसे संभव हो पाया?

गुलाबो सपेरा--अपनी कला के प्रदर्शन के लिए जब मैं अमेरिका गई और वापस लौटी, तब समाज के लोग दिल्ली आकर मुझे समाज में वापस लाने का आग्रह करने लगे. मैंने समाज की गलत परंपराओं को स्वीकार करने से इनकार कर दिया. इसके बावजूद मुझे समाज का सरपंच चुना गया, शर्त यह थी कि बेटियों की हत्या जैसी कुप्रथाएं बंद हों. इसके बाद कालबेलिया समाज में बेटियों को मारने की प्रथा पर रोक लगी.

पिछले कुछ दशकों में काफी बदलाव आ चुका है. आज मेरे समाज की लड़कियों को आगे बढ़ती देखती हूं, तो बहुत खुशी होती है.

नई पीढ़ी के लिए रास्ता

अन्नी अमृता--आप अपने समाज के लिए प्रेरणास्रोत बनीं और समाज ने भी अंततः आपको स्वीकार कर लिया. यह सफर आसान नहीं था. यह हम सबके लिए भी बहुत प्रेरणादायी कहानी है. आपसे बातें करके बहुत हिम्मत मिल रही है. जिस साफगोई और ईमानदारी से आप अपने जीवन की परतें खोल रही हैं, वह एकदम दिल में उतर रही है. पूछना चाहती हूं कि हमारे देश में जहां अक्सर शादी के बाद एक महिला को अपनी महत्वाकांक्षा से समझौता करना पड़ता है, आपका सफर कैसा रहा? शादी के बाद क्या रुकावटें आईं?

गुलाबो सपेरा---मेरी 14 वर्ष की उम्र में ही शादी हो गई, लेकिन मैंने नृत्य नहीं छोड़ा. अपने माता-पिता की बात को याद रखा कि पीछे नहीं देखना है, आगे बढ़ते जाना है. मैंने अपनी बेटियों को पढ़ाया, जो उस समय के समाज में एक क्रांतिकारी कदम था. मेरी बेटी रासली पूनम सपेरा पढ़-लिखकर फ्रांस गई, फिल्मों में काम किया और कालबेलिया नृत्य को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत किया. मेरी बड़ी बेटी हमारे समाज की पहली बेटी बनी जिसने शिक्षा ग्रहण की.

पद्मश्री और कलाकारों की पीड़ा

अन्नी अमृता---आप अक्सर कलाकारों के हक की आवाज उठाती हैं. साथ ही आप अपने समुदाय की समस्याओं को लेकर मुखर हैं. आखिर वे कौन कौन सी समस्याएं हैं?

गुलाबो सपेरा- साल 2016 में मुझे भारत सरकार ने पद्मश्री से सम्मानित किया. लेकिन मैं देखती हूं कि कलाकारों की कद्र अक्सर केवल मंच तक सीमित रहती है. मेरा सवाल है कि "नृत्य की एक उम्र होती है, उसके बाद कलाकार का क्या?" मैं चाहती हूं कि सरकार कलाकारों के लिए जमीन, घर, इलाज और सामाजिक सुरक्षा जैसी सुविधाएं

सुनिश्चित करे. विदेशों में कलाकारों को "भारत की बेटियां" कहा जाता है, लेकिन अपने देश में उनके बुढ़ापे की कोई व्यवस्था नहीं.

हमलोग कालबेलिया जाति के नाम संप्रदाय से हैं. परंपरा के अनुसार हमारे यहां शव को जमीन में दफनाते हैं, लेकिन राजस्थान में यह समुदाय जमीन की कमी से जूझ रहा है. इस मुद्दे को लेकर मैं लगातार आवाज उठा रही हूं, क्या हमें इतना भी हक नहीं कि मरने के बाद परंपरा के अनुसार जमीन मिल सके. अक्सर शव दफनाने को लेकर विवाद होता है जो हमें काफी तकलीफ देता है.

आस्था

अन्नी अमृता---ईश्वर को मानती हैं?

गुलाबो सपेरा---मैं चामुंडा माता की भक्त हूं, जयपुर के जंगल में स्थित समाज के मंदिर से मेरी गहरी आस्था जुड़ी है. मैंने ही यह मंदिर बनवाया है. जंगल से खास लगाव है. मंदिर के आस पास की हरियाली में ही मन बसता है.

कालबेलिया घराना और भविष्य

अन्नी अमृता---आपने कालबेलिया नृत्य को एक नई पहचान दी. इसके विकास के लिए आपके द्वारा कौन-कौन से कार्य किए जा रहे हैं?

गुलाबो सपेरा--आज पुष्कर में 'कालबेलिया स्कूल' बन चुका है और यह नृत्य एक स्थापित घराना बन गया है. अब हमारा समाज आगे बढ़ रहा है और हर घर में 'गुलाबो' जैसी बेटियां हों, ऐसा लोग सोचते हैं.

'मारने वाला भी ऊपरवाला और बचाने वाला भी ऊपरवाला है'. लेकिन संघर्ष, साहस और आत्मविश्वास इंसान को इतिहास रचने की ताकत देते हैं.

अन्नी अमृता--आपकी कहानी न सिर्फ कालबेलिया समाज बल्कि पूरे देश की बेटियों के लिए प्रेरणा है. आपके नृत्य के कपड़े अलग डिजाइन के होते हैं और खासकर काले रंग के होते हैं. क्या काले रंग से खास लगाव है?

गुलाबो सपेरा(हंसते हुए) ---अपने नृत्य प्रदर्शन के लिए खुद ही ड्रेस डिजाइन करती थी. काला रंग मुझे बहुत पसंद है. सांपों के साथ नृत्य करने की वजह से काला रंग मेरे दिमाग में छपा हुआ है.हालांकि पिता कहते कि काला रंग हमारे यहां नहीं पहना जाता, लेकिन मैं काले रंग में ही कुछ दूसरे रंगों की डिजाइन मिलाकर कुछ ऐसा डिजाइन करती कि पिता की बात भी रह जाए और मेरी इच्छा भी पूरी हो. मेरी सोच थी कि कालबेलिया नृत्य की एक अलग पोशाक हो, जो इसकी पहचान बने.

मील का पत्थर

लिटरेचर फेस्टिवल

"आइए हम देना सीखें" यह सूत्रवाक्य उस जन-सीख समर्पित प्राणवन्त जिनीविधा से सार्थ किया जो व्याप्त है जमशेदपुर के समीरण में, व्याप्त है भावों के अंकुरण में, अभिषिक्त है अभिव्यक्ति के आवरण में, रंजित है कण-कण आकर्षण में और दीप्त है इतिहास के आभरण में।



हाँ यह जिनीविधा उसी संदीप मुहारका में मूर्त हुई, जो शिवसंकल्प साकार है, जो निर्विकल्प होता हुआ भी सकल्प है, बिना किसी सन्दर्भ के भी सन्दर्भ है। जो बालरवि की अरुणिमा भी है, दिनमान की प्रखरता भी है और सूर्य-घड़ी का अर्घ्य भी।

जो अनुरागी देहरी पर ज्ञानदा हरसिंगार भी है और कर्तव्य-पथ पर खिलता गुलाब भी। जो नाम भी करता है, मनुहार भी करता है। जो यथार्थ की वनिता से आदर्श के फूल चुनकर अपने सिद्धांत के धागे में इतनी सुघड़ता से पिरोता है कि हर फूल पंखुरी-पंखुरी अपने रंगरूप में अपना सौरभ साँस-साँस बाटता है।

विद्यादीप फाउन्डेशन उपाध्य संदीप मुहारका ने जिस उत्सव का सपना देखा था वह महोत्सव हो गया, अनुष्ठान बनकर तीर्थ में नहला गया और महाकुम्भ रच गया।

प्राय: इतिहास साहित्य के विशाल प्रासाद खड़े करता है, किन्तु इस उत्सव ने इतिहास के सुदृढ़ आधार स्तम्भ तैयार किये हैं। यह लिटरेचर फेस्टिवल सम्पूर्ण झारखण्ड के वैभवी साहित्य-उत्सव का आधार-भूमि बन गया।

जमशेदपुर इन्द्र ऋषि साहित्य-उत्सव में उत्कृष्ट चिन्तकों, विचारकों, पत्रकारों, अध्येताओं और शास्त्र-वेत्ताओं ने जहाँ सत्य की अनुभूति बटवाई—जल-जंगल-जमीन, गीता-ज्ञान, शंकराचार्य से वीरसावरकर तक, सिकुड़ती नदियों की कहानी, लकीरों का सच जैसे विषयों पर केन्द्रित वार्ताओं ने भारतीय मनीषा की संस्कृति का पुनर्विलोकन करवाकर शिव संकल्प अभिलक्षित किया—वहीं वहली, सोहराय जैसी आर्ट ने सौन्दर्य सृजित कर सत्यं शिवं सुन्दरम् को साकार उपस्थित किया। उससे सच्चिदानंद की यात्रा सहज हो गई।

संदीप ने जमशेदपुर को खूब दिया—अपने सपने, अपना पुरुषार्थ, अपना अनुराग; अपना वैभव, अपना सौहार्द और सबसे बढ़कर अपना आत्मापन।

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल में कला, कलम और विचारों की त्रिवेणी में हमने आकण्ठ डूबकर यही सीखा—

चलो हम भी अपने देश को, अपने जमशेदपुर को कुछ दें, कुछ भी दें।

जो अपना है उसमें से दें। आदर्श कदम दर कदम आगे बढ़ायें।

उत्सव से सीखा है हमने—हम भी तो कुछ देना सीखें।

जय भारत | जय हिंद

रागिनी भूषण

सत्र 2 का शेष भाग :

संदर्भ काटकर वायरल होना: डिजिटल मीडिया की चुनौती

संजय मिश्र : डिजिटल स्पेस में इंटरव्यू या वक्तव्य को बिना संदर्भ काटकर वायरल कर दिया जाता है। यह प्रवृत्ति मीडिया के लिए कितनी खतरनाक है?

डॉ. अंजुम शर्मा : निश्चित रूप से यह सही नहीं है। किसी बात को आधा-अधूरा पेश करना धोखा के साथ अन्याय है। डिजिटल स्पेस का उपयोग कई लोग अपने एजेंडे के अनुसार कर रहे हैं—कौन-सा अंश निकालूँ कि मेरे व्यूज बढ़ जाएँ, यही प्राथमिकता बन गई है।

अब पूरे संदर्भ सहित बात रखने की नहीं, बल्कि संदर्भ हटाकर बात कहने की है। क्योंकि चिंता इस बात की है कि मेरे कॉलोअर्स बढ़ें, मेरे व्यूज आएँ। इससे क्वालिटी जर्नलिज़्म प्रभावित होता है। छवि बनाने और बिगाड़ने की ताकत डिजिटल स्पेस के हाथ में आ गई है, इसलिए लोग अब बेहद सतर्क होकर बोलने लगे हैं।

पहले यह सत्ता रिपोर्टर के माध्यम से होता था—आज यह सीधे जनता तक पहुँचता है। इसलिए यह चुनौती नई नहीं है, लेकिन उसका असर अब कहीं अधिक व्यापक है।

'संगत' और 100 साहित्यकारों के इंटरव्यू का अनुभव

संजय मिश्र : आपने 'संगत' में 100 से अधिक साहित्यकारों के इंटरव्यू किए। आपका तरीका—छोटा इंट्रो, कम बोलना और ज्यादा सुनना—काफी अलग है। यह अनुभव कैसा रहा?

डॉ. अंजुम शर्मा : शुरुआत में मैंने भी लंबा इंट्रो दिया था, लेकिन जल्दी समझ में आ गया कि इंटरव्यू में सेंटर में नहीं, मेरा गेस्ट है। एंकर का काम खुद को हावी करना नहीं, बल्कि बातचीत को सही दिशा देना है।

मैं चाहता था कि दर्शक मुझे नहीं, मेरे मेहमान को सुनें। इंटरव्यूअर को कम बोलना चाहिए। डेढ़ घंटे का समय दोबारा नहीं मिलता—इसलिए उसका अधिकतम उपयोग ज़रूरी है।

यदि आपके भीतर पद, पैसा या किसी लाभ की लालसा है, तो आप कठिन सवाल नहीं पूछ सकते। लेकिन अगर भीतर कोई चाह नहीं है, तो आप निडर होकर सवाल कर सकते हैं। सामने वाले को कन्फर्ट ज़ोन में लाने के लिए तैयारी ज़रूरी है—उसे यह भरोसा देना कि आपने उसे पढ़ा है, समझा है।

मेरे इंटरव्यू में पहले एक घंटा व्यक्ति, उसके जीवन और लेखन पर केंद्रित रहता था। जब वह सहज हो जाता, तब कई बार बिना पूछे ही वह बातें सामने आ जातीं, जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक लेखक ने कैमरे पर अपनी पत्नी से माफ़ी माँग ली—मैंने सवाल तक नहीं पूछा था।

मेरा ध्येय रचना को जानना नहीं, रचनाकार को जानना था। किताब में क्या लिखा है—वह पाठक पढ़ सकता है। लेकिन किताब के पीछे की कथा, लेखक का मन—यह संवाद से ही सामने आता है।

यदि आप सुनना नहीं जानते, तो आप इंटरव्यूअर नहीं बन सकते। जितना अच्छा आप सुनेंगे, उतना ही अच्छा प्रश्न और उत्तर सामने आएगा।

इंटेरोगेशन नहीं इंटरव्यू : सवाल की मंशा और सीमा रेखा

संजय मिश्र : 'संगत' में आपकी बातचीत का अंदाज़ अलग है। उसमें इंटेरोगेशन नहीं दिखता, आक्रामकता नहीं दिखती—जबकि आज यह शैली प्रचलित है। पुरुषोत्तम अग्रवाल जी वाला प्रसंग विवादों और वायरल कंटेंट के केंद्र में रहा। ऐसी स्थितियों में आप खुद को कितना सहज पाते हैं? आपका उद्देश्य पैसा नहीं रहता होगा?

डॉ. अंजुम शर्मा : जैसा मैंने पहले कहा—सवाल पूछने की असली कसौटी आपकी मंशा है। आपको सामने वाले से कुछ चाहिए या नहीं?

अगर पद, धन, कृपा या लाभ की चाह नहीं है—तो आप सवाल कर पाएँगे।

दूसरी बात, इंटेरोगेशन और इंटरव्यू के बीच एक सीमा रेखा खींचनी पड़ती है—कि आप सामने वाले की प्राइवेट टेरिटरी में तो नहीं घुस रहे। अगर वह खुद अपने निजी जीवन में जगह दे भी रहा है, तब भी आप उसका अनुचित लाभ न उठाएँ। "मेरे सामने व्यक्ति नहीं, एक पूरा युग बैठा था" – बॉडी लैंग्वेज का पाठ.....

मैं एक उदाहरण दूँ। नाना लीजिए रामदरश जी का इंटरव्यू। उनका देहांत 102 वर्ष की आयु में हुआ। जब मैंने उनसे बातचीत की, वे लगभग 100 के थे। वे कम सुनते थे। ऐसे में आपकी बॉडी लैंग्वेज बदलती है।

आप 100 वर्ष के व्यक्ति के सामने तनकर नहीं बैठ सकते। आपके सामने सिर्फ व्यक्ति नहीं, एक पूरा युग बैठा है—जिसने आज़ादी देखी, आज़ादी के पहले और बाद के दशक देखे, तमाम सरकारें बनते-बिगड़ते देखीं, आंदोलनों का दौर देखा।

लेकिन आप बहुत झुक भी नहीं सकते—क्योंकि तब लगेगा आप इंटरव्यू करने नहीं, बस श्रद्धा जताने आए हैं।

तो आपको दोनों साध रखना पड़ता है— आदरभाव भी और साहित्यिक पत्रकारिता का साहस भी।

एक जगह उन्होंने बातचीत में यह कह दिया कि पत्नी की पढ़ाई—BA, MA तक तो हुई, पीएचडी में एडमिशन हुआ, लेकिन उन्होंने पत्नी को पढ़ने दिया। वह बात मुझे भीतर तक खटक गई। मन में था—अगर पत्नी की जगह भाई/बेटा होता तो शायद यह न होता। पर मैं सौ वर्षीय व्यक्ति से यह बात कैसे कहूँ?

फिर एक क्षण आया। उन्होंने कहा—"मेरी पत्नी ने मेरा बहुत साथ दिया... हर जन्म में वही मेरी पत्नी बने।

"हम करीब बैठे थे, मैं उनके पैर के पास हाथ रखकर बोला—"अगले जन्म में मिलें तो पीएचडी करवा दीजिएगा।

"मैंने अपनी बात भी कह दी, अशादब भी नहीं हुआ। यह वही मशीन कला है—जिसमें सवाल भी हो जाता है और मर्यादा भी नहीं टूटती। "समस्या सामने वाले को नहीं, देखने वालों को होती है" बहुत बार लोग कहते हैं—"आप इंटेरोगेट कर रहे हैं।" पर सच यह है कि जिससे सवाल किए जा रहे हैं, उसे समस्या नहीं है। समस्या अक्सर देखने वालों को होती है। यह मेरी समस्या नहीं है—यह समझना होगा।

एक लेखक ने मुझे कॉफी हाउस में बुलाकर कोर्ट केस की धमकी भी दी। मैंने कहा—कर दीजिए। क्योंकि इंटरव्यू के बाद मैंने पूछा था—"यह हिस्सा कट कर दूँ?" और तब आपने मना नहीं किया था। उसी समय रोकना था। डिलीट के बाद यह तर्क नहीं चलता।

हाँ—अगर इंटरव्यू के बाद कोई कहे कि "यह मुँह से निकल गया, हटा दीजिए"—और वह व्यक्ति की गरिमा, फैमिली, या अनावश्यक क्षति से जुड़ा हो—तो मैं हटा भी देता हूँ। क्योंकि मेरा उद्देश्य किसी की छवि गिराना नहीं—रचनाकार को सामने लाना है।

इंटेरोगेशन बनाम इंटरव्यू: भाषा, टोन और मंशा

इंटेरोगेशन और इंटरव्यू के बीच फर्क बहुत बारीक है।

आप खराब से खराब बात भी सलीके से कह सकते हैं—और सही से सही बात भी बदतमीज़ी में कहकर उसका वजन मिटा सकते हैं। यह निर्भर करता है: आपकी मंशा, आपकी भाषा और आपका टोन...

आप सामने वाले को इतना उत्तेजित कर सकते हैं कि वह थप्पड़ मार दे। और टीवी पर यह हो भी रहा है। एंकर चिल्लाते हैं, क्योंकि उनके पास तर्क नहीं होता। यदि आपके पास तर्क है—आप चिल्लाएँगे नहीं। आप आराम से अपनी बात रखेंगे।

जंगल में शेर की चाल धीमी होती है, पर प्रभाव ऐसा कि बाकी जानवर हट जाते हैं— बस यही फर्क है।

रैपिड फायर

संजय मिश्र : अब आपके लिए रैपिड फायर—मैं हिंदी के पुराने बड़े नाम दहूँगा। आप देना एक सवाल पूछिए जो वायरल भी हो, हिंदी को समृद्ध भी करे, और लगे कि 'संगत' में यह सवाल अंजुम ही पूछते हैं। शुरुआत मुंशी प्रेमचंद से।

डॉ. अंजुम शर्मा : मंशा बताइए, किस तरह का सवाल चाहते हैं?

संजय मिश्र : आज का युवा साहित्य में अपनी जगह बनाना चाहता है। आप एक-एक ऐसा प्रश्न पूछिए जो बहसें भी खोले और पाठक को बाँध भी ले।

*मुंशी प्रेमचंद

डॉ. अंजुम शर्मा : "नौकरों से इतना प्रेम क्यों? आपने यह नौकर जानबूझकर रखीं, या किसी से प्रभावित होकर?"

*महादेवी वर्मा

डॉ. अंजुम शर्मा : "इतनी बड़ी लेखिका होकर भी आपको वैसा सम्मान क्यों नहीं मिला? क्या इसका कारण आपका 'लेखिका' होना है? अगर आप पुरुष लेखक होतीं, तो क्या यह बदल जाता?"

*राजेंद्र यादव

डॉ. अंजुम शर्मा : "महिलाओं की उपस्थिति आपके इर्द-गिर्द इतनी पसंद क्यों है?"

*निर्मल वर्मा

डॉ. अंजुम शर्मा : "दुख की भाषा होती है—तो क्या सुख की भी भाषा होती है?"

*सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

डॉ. अंजुम शर्मा : "कविता साधना कैसे साधी जाती है? कविता 'साथी' कैसे बनती है?"

*मोहन राकेश

डॉ. अंजुम शर्मा : "आपकी तिकड़ी में सबसे 'चटमारा' लेखक कौन था?"

*कमलेश्वर

डॉ. अंजुम शर्मा : "क्या बाकी दो लेखकों से आपको कभी ईर्ष्या हुई?"

*चंद्रधर शर्मा गुलेरी

डॉ. अंजुम शर्मा : "क्या पल रहा था उस एक जब आपने साबित कर दिया कि एक ही कहानी लिखकर भी कोई 'कहानीकार' हो सकता है?"

राजनीति और साहित्य: नेपाली–दिनकर एक मंच पर

संजय मिश्र : अगर एक तरफ नेपाली हों और दूसरी तरफ दिनकर—तो राजनीति और साहित्य के रिश्ते पर क्या सवाल करेंगे?

डॉ. अंजुम शर्मा : "कितनी खुंटर बात होगी कि राजनीति साहित्य को संभाले और साहित्य राजनीति को।" मैं पूछूँगा—साहित्य का राजनीति में हस्तक्षेप होना चाहिए या नहीं?

नेपाली से—"समरथा नेहरू से है या दिनकर से?"

दिनकर से—"राजनेताओं से दोस्ती हो, फिर भी क्या उनकी आलोचना संभव है?"

और अगर आमने-सामने दो हों—तो मैं नागवर सिंह-रामेंद्र यादव या नागवर सिंह-ज्ञानरंजन को बैठाकर बातचीत करना चाहूँगा। बाबा नागार्जुन और नरेंद्र कोहली

संजय मिश्र : मानिए बाबा नागार्जुन और नरेंद्र कोहली साथ बैठे हों, आप क्या पूछेंगे?

डॉ. अंजुम शर्मा : यह इस पर निर्भर करेगा कि कौन दाएँ बैठा है, कौन बाएँ।

संजय मिश्र : आपको पता है कोहली जी हमारे जमशेदपुर से थे, मान लीजिये वे दाएँ बैठे हैं, बाबा बाएँ—अब?

डॉ. अंजुम शर्मा : कोहली जी से पूछूँगा—"आप बाएँ जाकर बैठना क्यों पसंद नहीं करते?" और बाबा से पूछूँगा—"आप दाएँ जाकर क्यों नहीं बैठना पसंद करते?"

(हँसी और तालियों के बीच रैपिड फायर जीवंत हो उठा)

क्या साहित्यिक पन्ने वापस लौटेंगे?

संजय मिश्र : आपके इंडिया टुडे ज्वाइन करने के बाद साहित्य पन्ना फिर शुरू हुआ। क्या इसे हम "लौट के बुद्धू घर को आए" मानें? क्या पत्रिकाओं/अखबारों में साहित्यिक कोना लौटेगा?

डॉ. अंजुम शर्मा : यह सवाल हमें पहले खुद से पूछना चाहिए—क्या मैं पत्रिका/अखबार खरीदने में दिलचस्पी रखता हूँ? और खरीदता हूँ तो क्या मैं साहित्य पढ़ता हूँ? और अगर मैं पढ़ता हूँ—तो कितने प्रतिशत लोग पढ़ते हैं?

आज सर्कुलेशन गिरा है, लोग डिजिटल पर शिफ्ट हुए। पर अब एक नया बदलाव भी है—दुनिया की बड़ी वेबसाइट्स का क्लिक-रेट गिर रहा है। लोग वेबसाइट पर जाकर पढ़ना कम कर रहे हैं, क्योंकि ए.आई. आपको जानकारी स्रोत सहित दे देता है। वेबसाइट लीपे खिसक गई—पहले ए.आई. ऊपर आ गया। ऐसे में साहित्य का कंटेंट लोगों तक पहुँचाना कठिन है। वीडियो पलाइट तो वायरल हो सकता है, लेकिन पढ़ने की आदत... वह घट रही है।

और 300 रुपये की पत्रिका? कितने लोग खरीदेंगे? विज्ञापन कहाँ से आएगा? साहित्य के नाम पर विज्ञापन देने को कोई तैयार नहीं, लेकिन साहित्य उत्सव कराने को तैयार है—क्योंकि अब यह विजिबिलिटी और सत्ता के प्रतीक बनते जा रहे हैं। यह बात मैं पूरे सम्मान के साथ कह रहा हूँ।

आज देश का कोई शहर खाली नहीं—शिमला, जमशेदपुर, रांची, अलंग, अरुणाचल, झाँसी, गोरखपुर, बैंगलुरु, भोपाल, इंदौर, जयपुर, देहरादून, धर्मशाला, लद्दाख, इंटानगर—हर जगह फेस्टिवल हैं।

यह सब किसी न किसी रूप में शहर की "ब्रांडिंग" भी है।

पर पत्रिकाओं के लिए विज्ञापन नहीं है, सीडर्स गायब हैं—तो धर्मयुग/दिनमान वाला दौर वापस नहीं आएगा। 2010 वाला दौर भी नहीं लौटेगा।

हाँ, जो स्पेस है—उसे बचाकर रखना होगा। क्योंकि पढ़ना "आर्थिक मूल्य" से नहीं, "मानवीय मूल्य" से तय होता है।

अगर आपकी नीयत समाज में किताबों के प्रति जागरूकता है, तो आप घाटा उठाकर भी साहित्य का पन्ना निकालेंगे। यदि नीयत सिर्फ 1 लाख के विज्ञापन की है—तो स्पेस घटता ही जाएगा।

इसीलिए मैं आभारी हूँ कि इंडिया टुडे के संपादक सौरभ द्विवेदी और इयान संपादक अरुण पुरी ने स्पेस दिया—और साहित्य पन्ना फिर शुरू हुआ। साहित्य वार्षिकी में एक भी विज्ञापन नहीं—फिर भी यह निकल रही है। बस थोड़ा काम अपने लिए भी करना चाहिए—इतना ही।

पत्रकार बनाम कंटेंट क्रिएटर : महीन रेखा, बड़ी जिम्मेदारी

संजय मिश्र : एक पत्रकार साथी ने सवाल पूछा है—आज बहुत से पत्रकार खुद को "कंटेंट क्रिएटर" कहते हैं। क्या दोनों के बीच कोई महीन रेखा है, या दोनों एक ही चीज हैं?

डॉ. अंजुम शर्मा : कंटेंट क्रिएटर की चर्चा आज देश कर रहे हैं—यूट्यूब और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर एक "नई इकोनॉमी" बनी है। हाल में संसद, राज्यसभा में भी यह बात उठी कि कंटेंट क्रिएटर्स की इकोनॉमी को संरक्षण मिलना चाहिए—उसे दबाने या कंट्रोल करने के बजाय उसे समझदारी से बढ़ावा दिया जाए।

लेकिन असल सवाल यह है कि—कंटेंट क्रिएटर पत्रकार है? या पत्रकार कंटेंट क्रिएटर? इनके बीच एक महीन रेखा है। मैं अक्सर एक पुराने विचार को याद करता हूँ—कि

किसी भी माध्यम के लिए फीडबैक जरूरी है। टीवी में फीडबैक तुरंत नहीं मिलता, लेकिन सोशल मीडिया फीडबैक देता है। यह सुविधा अच्छी भी है और खतरनाक भी। क्योंकि इसी लाइक्स-फीडबैक के दम पर हम अपने आसपास इको-चैम्बर बना लेते हैं—ऐसा कमरा, जहाँ अपनी ही आवाज़ लौट-लौट कर हमारे पास आती रहे। हम वही सुनना चाहते हैं जो हमें अच्छा लगे; आलोचना हमें असहज करती है।

अब वर्क समस्निए—कंटेंट क्रिएटर का लक्ष्य: Engagement और Visibility वाली मेरा कंटेंट कितना दिखे, कितने व्यूज आएँ, कितनी चर्चा बने। पत्रकार का लक्ष्य: Public Information की जवाबदेहीवाली जो मैं दिखा रहा हूँ—क्या वह सत्य है? क्या वह जाँच योग्य है?

कंटेंट क्रिएटर की प्राथमिकता: लोग पसंद करेंगे या नहीं

पत्रकार की प्राथमिकता: जो दिखा रहा हूँ, वह सही है या नहीं—पसंद-नापसंद इसमें नहीं होना चाहिए।

कंटेंट क्रिएटर की फ्लेक्सिबिलिटी बहुत होती है—आज साहित्यकार का इंटरव्यू लिया, व्यूज नहीं आए—कल सेलिब्रिटी का इंटरव्यू कर लिया। पत्रकार ऐसा नहीं कर सकता। पत्रकार को एविडेंस चाहिए, सत्यापन चाहिए। कंटेंट क्रिएटर के लिए फॉर्मल ट्रेनिंग अनिवार्य नहीं—मोबाइल से भी काम चल सकता है। लेकिन पत्रकारिता में आपको लगातार "ट्रेंड" होना पड़ता है, क्योंकि आप सच की रिपोर्टिंग की दिशा में बढ़ते हैं।

आज चुनौती यह भी है कि लोग "रिपोर्ट" कम और "सपोर्ट" ज्यादा करने लगे हैं—जबकि रिपोर्टर का काम रिपोर्ट करना है, सपोर्ट करना नहीं। इसलिए कहूँगा—देखाई इतनी गड़बड़ा गई है कि समझना मुश्किल हो गया है कि दूध में पानी कितना है और पानी में दूध कितना।

स्टूडेंट के लिए मार्गदर्शन: समस्या को मीडिया से उठाएँ, "ट्रोलर" नहीं "आलोचक" बनें

संजय मिश्र : मिथिलेश से प्रशांत राज जी का सवाल है—एक स्टूडेंट होने के नाते, अगर कोई अपने आसपास की समस्याओं को मीडिया के जरिए हल कराना चाहे, तो शुरुआत कैसे करे?

डॉ. अंजुम शर्मा : आपने "मीडिया" कहा है, तो इसमें सोशल मीडिया और परंपरागत मीडिया—दोनों आते हैं। सबसे पहले, समस्याओं को निर्मोह भाव से उठाइए—यह मत सोचिए कि बात पहुँचेगी या नहीं।

सवाल उठाना ही यह साबित करता है कि आप समस्या के प्रति सजग हैं। सवाल नहीं उठाएँगे, तो समस्या हल भी नहीं होगी।

सवाल उठाना ही यह साबित करता है कि आप समस्या के प्रति सजग हैं। सवाल नहीं उठाएँगे, तो समस्या हल भी नहीं होगी। लेकिन सिर्फ उठाइए नहीं—ऑर्गेनिक तरीके से उठाइए। जिसे समस्या है, उसके पास जाइए, उससे बात कीजिए, तथ्यों के साथ वीडियो/ऑडियो/लिखित रूप में अपनी बात रखें। उसे अपने प्लेटफॉर्म पर साझा करें, ईमेल/वीडियो के जरिए स्थानीय कार्यालयों तक पहुँचाएँ। यह समय "दिखावे" का समय बनता जा रहा है—और जब काम कम हो, दिखावा ज्यादा हो, तो इससे खतरनाक समय कुछ नहीं।

यह ट्रोलिंग का समय भी है, लेकिन आपको ट्रोलर नहीं बनना—आपको आलोचक बनना है। ट्रोलिंग नकारात्मक होती है, आलोचना सकारात्मक उद्देश्य के साथ होती है। लोकल समस्या राष्ट्रीय स्तर तक तभी जाएगी, जब उसका असर व्यापक हित में होगा। लेकिन सोशल मीडिया वह माध्यम है, जो आपकी बात स्थानीय से भागे तक पहुँचा सकता है। समस्या एक दिन में नहीं सुलझती। पुरानी समस्या है, तो समय लगेगा—पर उठेगी, तो हल की ओर बढ़ेगी।

झारखंड के साहित्यकार और 'संगत': प्रतिनिधित्व पर प्रश्न

संजय मिश्र : यह बातचीत बहुत अच्छी रही। एक प्रश्न जयानन्दन जी का है—झारखंड का कोई साहित्यकार 'संगत' में क्यों नहीं दिखा? और अगर अवसर हो, तो जमशेदपुर/झारखंड के साहित्यकारों पर मंथन दीजिए।

डॉ. अंजुम शर्मा : झारखंड से 'संगत' में लोग आए—रांची के प्रोफेसर रवि भूषण, सीता वर्मा—दोनों का इंटरव्यू हुआ। इसके अलावा दुमका की निर्मला पुतुल से बातचीत हुई। समय के चलते कुछ लोगों से बातचीत नहीं हो पाई—हमने महुआ माजी से प्रयास किया, रमणिका जी से बातचीत चाही, पर संभव नहीं हो सका। एक वरिष्ठ लेखक (लगभग 80 वर्ष) जिनकी 30-40 किताबें हैं, उनसे भी स्वास्थ्य कारणों से बातचीत नहीं हो पाई।

कुल मिलाकर झारखंड से छह लोगों को शामिल करने की कोशिश रही।

संजय मिश्र : बहुत-बहुत शुक्रिया, अंजुम जी। हम जमशेदपुर के लोगों को 'संगत' में देखना चाहते हैं। अब आप गाय से हटकर वाय पर काम कर रहे हैं—उसकी प्रस्तुतियाँ भी हों।

डॉ. अंजुम शर्मा : मैं बता दूँ—'संगत' की ऑफ-कैमरा बातचीत पर एक किताब आने वाली है, जो कंट्रोवर्शियल हो सकती है। परमिशन लेकर उस पर काम चल रहा है।

अंत में बस इतना कहूँगा—हर चीज पर सवाल कीजिए। जीवन में कोई भी चीज सवालों के घेरे से बाहर नहीं है। कुछ भी अंतिम सत्य नहीं। सवाल उठाना, संदेह करना, और बोलना—मनुष्य होने की पहली निशानियाँ हैं। अगर आप ये तीनों नहीं कर पा रहे, तो या तो आप जीना नहीं सीख पाए, या आपने सब कुछ "नॉर्मल" मान लिया है।

खराब से खराब बात भी अच्छे ढंग से कही जा सकती है—उसके लिए स्वर ऊँचा करने की जरूरत नहीं। खूब पढ़िए, खूब सुनिए—हर तरह का पढ़िए, हर तरह का सुनिए। दाएँ को भी पढ़िए, बाएँ को भी पढ़िए—तब अपना फैसला दीजिए। क्योंकि वाद-विवाद के बिना संवाद पैदा नहीं होता। सवाल करिए—और खूब पढ़िए। बस इतना ही।

"बदलता भारत, बदलती मीडिया कहानी" विषय पर डॉ. अंजुम शर्मा और संजय मिश्र के बीच हुई यह गंभीर और विचारोत्तेजक वार्ता वर्तमान मीडिया-परिदृश्य की चुनौतियों और संभावनाओं को स्पष्ट करती है। आज जब डिजिटल स्पेस जन-जन तक पहुँच चुका है, तब आवश्यकता इस बात की भी है कि इस मंच का उपयोग जिम्मेदारी, सत्यापन और सार्वजनिक हित के साथ किया जाए—तभी हम नव भारत की समावेशी और जागरूक कल्पना को साकार कर सकते हैं।

डॉ. नूपुर अन्विता मिंज
अतिथि
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय
जमशेदपुर, झारखंड



सत्र 3 का शेष भाग :

1898 में हरिश्चंद्र सखाराम भाटवडेकर (सावे दादा) ने 'द रेसलर' और 'मंकी एंड रिंगमास्टर' जैसी लघु फिल्में बनाईं.

1912 में पहली फीचर फिल्म 'सती सावित्री' बनने लगी, पर तकनीकी विफलताओं के कारण यह ऐतिहासिक प्रयास अधूरा रह गया.

'आलम आरा' से भारतीय सिनेमा में टॉकीज युग की शुरुआत हुई. कोलकाता के टालीगंज में बी. एन. सरकार द्वारा स्थापित न्यू थिएटर्स ने स्टूडियो युग को नई पहचान दी. देवकी बोस और नितिन बोस के योगदान से भारतीय सिनेमा में पहली बार विद्युत ध्वनिलेखी की अवधारणा आई और 'चंडीदास' जैसी फिल्में सृजित हुईं.हिमांशु राय और देविका रानी द्वारा स्थापित बॉम्बे टॉकीज ने भारतीय सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय दृष्टि दी. 'अछूत कन्या' ने कहानी, पोशाक और गीतों की प्रस्तुति में नए मानक स्थापित किए. फिल्म 'महल' और उसका गीत 'आएगा आनेवाला' (लता मंगेशकर की आवाज में) रेडियो इतिहास का मील का पत्थर बना, जिसके बाद गायकों के नाम भी प्रसारण में शामिल होने लगे.

इसके बाद सिनेमा में स्टार सिस्टम का उदय हुआ और कंटेंट से अधिक सितारों पर आधारित फिल्में बनने लगीं. 'मदर इंडिया', 'गंगा जमुना', 'दीवार' और 'शान लासन' जैसी फिल्मों में माँ एक केंद्रीय पात्र के रूप में उभरकर सामने आईं—सामाजिक प्रस्तुति और भाषा समय के साथ बदलती गईं.

डी. एन. ओझा जी ने यह भी रेखांकित किया कि आज AI और ChatGPT लेखन को सुविधा प्रदान कर सकते हैं, भाषा को शुद्ध कर सकते हैं, परंतु समाज, समय और संवेदना की सच्ची छाप केवल एक रचनात्मक लेखक ही दे सकता है.

रंगमंच, कलाकार और ओटीटी का बदलता दौरप्रसिद्ध अभिनेता राजेश जैस ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि थिएटर आत्म-पहचान और आत्म-निर्भरता का सबसे सशक्त माध्यम है. NSD (नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा) में प्रशिक्षण के दौरान अभिनय के साथ-साथ प्रकाश, निर्देशन, मेकअप और स्क्रिप्ट की समझ विकसित होती है, जो कलाकार को हर परिस्थिति में टिके रहने की क्षमता देती है.

उन्होंने दूरदर्शन, धारावाहिकों, फिल्मों और ओटीटी तक के अपने सफ़र को साझा किया. कोविड के बाद ओटीटी प्लेटफॉर्म ने नई विकेंद्रीकरण प्रणाली, कंटेंट की स्वतंत्रता और छोटे फिल्मकारों को बड़ा मंच प्रदान किया. 'पंचायत' और 'निर्जरपुर' जैसे शो इस माध्यम की विविधता को दर्शाते हैं.

राजेश जैस ने स्पष्ट किया कि तकनीक रचनाकार का स्थान नहीं ले सकती, बल्कि उसकी कल्पना को रूप देने का माध्यम बनती है. रंगमंच कभी समाप्त नहीं होगा, क्योंकि वही सिनेमा और ओटीटी की जड़ है.

झारखंड में सिनेमा और रंगमंच की संभावनाएँअपने वक्तव्य में राजेश जैस ने झारखंड में फिल्मों और रंगमंच के व्यापक स्कोप पर विशेष जोर दिया. उन्होंने कहा कि झारखंड प्राकृतिक सौंदर्य, विविध भौगोलिक संरचनाओं और सांस्कृतिक बहुलता से भरपूर राज्य है. यहाँ जंगल, पहाड़, जलप्रपात, नदियाँ, औद्योगिक नगर और समृद्ध जनजातीय जीवन—सब कुछ मौजूद है, जो किसी भी फिल्मकार के लिए एक समग्र दृश्य-कैनवास जैसा है.

उन्होंने यह भी कहा कि तकनीक ने आज फिल्म निर्माण को पहले से कहीं अधिक सुलभ बना दिया है. डिजिटल कैमरे, मोबाइल फिल्ममेकिंग, लिंक साउंड और पोस्ट-प्रोडक्शन टूल्स के कारण झारखंड जैसे राज्य में कम लागत में उच्च गुणवत्ता का सिनेमा बनाया जा सकता है. यहाँ प्रतिभाशाली युवा कलाकारों, इंजीनियरों और लेखकों की कोई कमी नहीं है.

राजेश जैस के अनुसार यदि स्थानीय कहानियों, जनजातीय जीवन, सामाजिक यथार्थ और समकालीन मुद्दों को केंद्र में रखकर फिल्में और वेब-सीरीज़ बनाई जाएँ, तो यह राज्य को राष्ट्रीय पहचान देने के साथ-साथ स्थानीय युवाओं के लिए रोज़गार और रचनात्मक अवसर भी पैदा करेगा.

ओटीटी प्लेटफॉर्म के कारण अब यह आवश्यक नहीं रह गया है कि हर कलाकार या फिल्मकार को मुंबई जाना ही पड़े—अपनी ज़मीन पर रहकर भी वैश्विक दर्शकों तक पहुँचा जा सकता है.

उन्होंने सुझाव दिया कि राज्य सरकार, विश्वविद्यालयों और सांस्कृतिक संस्थानों को मिलकर फिल्म पॉलिसी, प्रशिक्षण कार्यशालाएँ और स्थानीय प्रोडक्शन सपोर्ट सिस्टम विकसित करना चाहिए, ताकि झारखंड एक सशक्त वैकल्पिक फिल्म हब के रूप में उभर सके.

कार्यक्रम के अंत में श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर दिए गए और वक्ताओं को स्मृति-चिह्न भेंट कर उनके बहुमूल्य समय और विचारों के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया गया. इस सत्र में जहाँ डी. एन. ओझा जी ने भारतीय सिनेमा के इतिहास के अनछुए पहलुओं से परिचित कराया, वहीं राजेश जैस ने रंगमंच, सिनेमा, ओटीटी और झारखंड की रचनात्मक संभावनाओं पर गहन और प्रेरक दृष्टि प्रस्तुत की.

डॉ. शालिनी प्रसाद
सहायक प्राध्यापक
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
जमशेदपुर महिला विश्वविद्यालय



सत्र 5 का विस्तार.....

संवाद, साहित्य और लोकतंत्र

पहले मैं इतने सुंदर ढंग से सुव्यवस्थित, विविध आयामों के तहत आयोजित और मेरी स्मृति में शायद अपने ढंग का यह पहला साहित्य उत्सव जमशेदपुर में, उसके लिए मैं संदीप भूतोड़िया जी का जितना आभार व्यक्त करूँ वो कम होगा।

आज जब मैं आपके बीच यहाँ खड़ा हूँ, तो खड़ा होने में जिन दो लोगों से जीवन में बहुत ताकत, समझ और काम करने की प्रेरणा मिली, उनके दो प्रतीक के रूप में दो व्यक्ति यहाँ मौजूद हैं। मैं आबिद सुहैल जी को सबसे पहले नमस्कार करना चाहूँगा। उन्हें शायद स्मरण हो या न हो, वो तब बहुत युवा होते थे और हम भी युवा होते थे जब वो दब्बू जी का कार्टून बनाकर धर्मयुग में आया करते थे। तो पत्रकारिता की बुनियाद डॉक्टर धर्मवीर भारती जी के साथ काम करने की प्रेरणा, समझ और काम करने की संस्कृति जो उन्होंने डाली, वो एक वजह है जिसकी वजह से आज मैं आपके सामने यहाँ हूँ।

दूसरा वैयक्तिक रूप से चीजों को समझने में, मैं अगर कहूँ तो बहुत लंबा सा इकरार होगा। मुझ जैसे अनगढ़ आदमी को भी आज आपके सामने मिलने का, बात करने का मौका मिला, उसमें प्रभाष जी का बहुत बड़ा योगदान है। हमारे सोपान जी उनके प्रतिनिधि के रूप में हैं। जब वो लोटी-बाड़ी, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और आज पर जो बहुत-बहुत चर्चित और बहुत ही समृद्ध पुस्तक उन्होंने लिखी है, इन सब चीजों पर वो बात कर रहे थे, तो मुझे याद आया कि झारखंड नहीं अविभाजित बिहार में पत्रकारिता के लिए अनेक अवसर होने के बावजूद भी हमने झारखंड में, अविभाजित बिहार में पत्रकारिता करना तय किया, वो भी एक बंद प्राय अखबार में जहाँ काम करने वालों को निम्न रूप में

सत्र 5 का विस्तार.....

संवाद, साहित्य और लोकतंत्र

उसको खड़ा किया उनमें से संजय एक हमारे मित्र थे जो यहाँ आपके सामने थे, अभी आपके साथ मौजूद हैं वो। उस वक्त इन्हीं तर्कों ने प्रेरित किया और बड़े लंबे समय तक हम लोगों ने झारखंड या आदिवासी संस्कृति ही कैसे दुनिया की मुक्ति का रास्ता बन सकती है, इस पर हमारे रामदयाल मुंडा जी होते थे, अनेक ऐसे लोगों ने बहुत वास्तविक उस पर सामग्री लिखी। जिसमें ने.सी. कुमारप्पा से लेकर के और हमारे धीरेंद्र मजूमदार से लेकर अनेक ऐसे लोगों को, इन्हीं लोगों की बात को बहुत प्रामाणिक ढंग से हमारे आदरणीय प्रलाद जी कहा करते थे और यहीं रहने, कान करने के पीछे उनकी बड़ी प्रेरणा हमें रही हर अवसर पर।

आज मैं जब यहाँ आपके सामने मौजूद हूँ, तो उन दोनों लोग जिनका मैंने स्मरण किया, उनके दो प्रतिनिधि के रूप में सामने मैं आज आप दोनों को देख रहा हूँ। मैंने जीवन में साहित्य से क्या सीखा? मैं मूलतः बहुत ही शुष्क विषय का विद्यार्थी रहा अर्थशास्त्र का, पर साहित्य ही संवेदना देता है, साहित्य ही सरोकार देता है, साहित्य ही सामूहिकता, जो आदिवासी समाज की सबसे बड़ी ताकत है समूह में रहना-जीना। जब आज दुनिया आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, इस टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट के दौर में वाट्सएप से तो करोड़ों लोग जुड़े हैं, लेकिन जो एलीनेशन, अलगाव आज है शायद इसके पहले समाज में कभी नहीं रहा। उस सामूहिकता को समझने की ताकत, आत्मबल, उदासी और अकेलेपन के क्षणों में कहीं से आपको ताकत मिलती है, वो साहित्य ही ताकत देता है, समझ देता है, विपरीत परिस्थितियों में भी खड़ा रहने के लिए आपको प्रेरणा देता है।

मैं रास्ते में आते हुए सोच रहा था कि साहित्य से हमने क्या सीखा? तो सबसे पहले मैं आपको बताऊं बहुत वर्षों पहले और जिस अखबार में मैं यहाँ काम करता था उसमें लंबा हम लोगों ने दुनिया की उन महाग्रंथ किताबों के बारे में नए ढंग से चर्चा की और मैं खुद लिखता था उस पर, जिन किताबों ने दुनिया को पग-पग पर लड़ें प्रेरणा, आत्मबल और संकल्प दिया, उनमें से एक किताब का मैं उल्लेख करूँगा। जिस लेखक के घर पर पिछले दिनों मुझे खाने का मौका मिला ऑस्ट्रिया विएना में, 'मैन्स सर्च फॉर मीनिंग' (Man's Search for Meaning) ये फ्रैंकल की किताब, जिस व्यक्ति को परिवार के साथ उस दौर में नाज़ी कैंप में रखा गया, परिवार के सारे लोग नहीं रहे, वो व्यक्ति कैसे उन्हीं विपरीत परिस्थितियों में भी आत्मबल उन्होंने बनाए रखा, वह जीवित रहे, उसके बाद उन्होंने किताब लिखी, शायद दुनिया में करोड़ों बिकने वाली किताबों में से वह एक किताब है।

हमारे यहाँ आदरणीय प्रलाद जी ने वह काम सौंपा था, चंद्रशेखर जी की 'जेल डायरी' का दो हिस्सों में संपादन हम लोग पढ़ रहे थे। उसमें लंबा प्रकरण है जब जेल की तलाई में उन्हें पटियाला में रखा गया। दो ही लोगों को तलाई में रखा गया था, जॉर्ज फर्नांडिस और चंद्रशेखर। जब कोई आसार नहीं थे कि आपातकाल खत्म होगा, तब वो स्वाभिमान, वो ताकत अकेले रहने की कहाँ से मिली? उसमें लंबा प्रकरण और लंबे ढंग से वो दोस्तोवस्की से लेकर फ्रैंकल का, अपने देश के साहित्यकारों का और तो और उन्होंने लिखा है कि हमें जीवन में जिन सबसे अधिक प्रेरित करने वाले लोगों में जो लोग रहे, उनमें बंकिम चंद्र बाबू रहे हैं, उनका 'आनंद मठ' रहा है, जिसने हर पल पर बड़ प्रेरणा दी।

इसी तरह हमने बहुत बाद में फुचिक, चेकोस्लोवाकिया के रहने वाले फुचिक, उनकी 'जेल डायरी' से पुस्तक, 'फांसी के तख्ते से' उसका हिंदी में अनुवाद है, एक-एक शब्द उसके जिस रूप में प्रेरित करते हैं। और अभी हाल में मैं पाकिस्तान के एक व्यक्ति, जिनके पिता वहाँ की राजनीति में बड़े कद के व्यक्ति थे, पंजाब के गवर्नर हुआ करते थे, उनको लोगों ने जो वहाँ आतंक में लगे लोग थे उन्होंने मार डाला और उनके बेटे का अपहरण किया-शहबाज़ तासीर। पाँच वर्षों तक किस रूप में कैद में रखा और किस तरह की यातनाएँ दीं, वो यातनाएँ जिसकी कल्पना आप नहीं कर सकते, शायद पढ़ने के दौरान पढ़ने में भी आपको झिझक हो। उन यातनाओं के बीच भी उस व्यक्ति को कहाँ से आत्मबल और ताकत मिलती रही, किस तरह से जहाँ जगह मिलती किस रूप में चीजें लिखीं और कैसे भाग निकले, वह अद्भुत किताब है- 'A Memoir of Faith, Family, and Five Years in Terrorist Captivity'।

इस तरह अनेक किताबें, बचपन में जब हमने अपने समाज को समझने की कोशिश की जहाँ मैं पल बढ़ और चीजों को समझने की कोशिश कर रहा था उस समाज को, तो हमें सोशियोलॉजी की पुस्तकों से नहीं, हमें इकोनॉमिक्स की पुस्तकों से नहीं, जिसका मैं विद्यार्थी था, बल्कि रेणु के 'मैला आंचल' से समझ मिली तत्कालीन समाज के बनक की। शिवप्रसाद जी का 'अलग-अलग वैतरणी', राही मासूम रज़ा का 'आधा गाँव', श्रीलाल शुक्ल की वो क्लासिक बुक है 'राग दरबारी'। हमारा समाज कैसे रहता, जीता और काम करता, उसकी असलियत और हकीकत क्या है, ऐसी अनेक किताबें जिन्होंने मैं कहूँ कि हमें वो शायद एक सोशियोलॉजिस्ट हमारे समाज के बारे में लिखता तो वो हमें उतनी सूचना, वह समृद्धि समझ की नहीं मिली जो इन पुस्तकों से मिली।

फिर इतिहास पढ़ने की रुचि रही तो ये पता चला कि दुनिया के परिवर्तन में साहित्य की क्या भूमिका रही है। और और तो और गदलब रूस से लेकर फ्रांस से लेकर, अभी पिछले दिनों मैं इतिहास की पुस्तक पढ़ रहा था तो लुई 16वें को जब जेल में डिटेन किया गया फ्रांस क्रांति के दौरान, तो वहाँ जो पुस्तकें उन्होंने देखीं रूसो और वोल्टेयर की तो कहा कि इन दो लोगों ने फ्रांस को नष्ट कर दिया। ये लेखकीय क्षमता है, ये ताकत है।

इसी तरह बहुत लोग स्टालिन को अपने-अपने अलग ढंग से देखते हैं, पर रूस क्रांति के पीछे, उसके पहले के दौर की बात है, शायद गोर्की के घर पर एक आयोजन था जिसमें वहाँ के बड़े लेखक मौजूद थे। उस वक्त स्टालिन ने कहा कि "हमारे जो लेखक हैं, ये 'Engineers of Human Souls' हैं।" असल बदलने का काम, आपके मन को बदलने का काम, शासन आपको एक आचार संहिता के तहत काम करने की प्रेरणा दे सकता है, एक कानून दे सकता है। लेकिन वो कानून जो गांधी जी कहा करते थे कि अंततः अगर हम अपने जीवन में जिस चीज बदलाव को देखना चाहते हैं नहीं उतारेंगे वो बदलाव हो नहीं सकता, वो बदलने की क्षमता साहित्य ही देता है। इसीलिए शायद बहुत पहले पी.बी. शेली ने 200 साल पहले लगभग कहा कि "Poets are unacknowledged legislators of the world." उनको हमने चुना नहीं है लेकिन वो बिना चुने समाज के असल रहनुमा और प्रवक्ता हैं।

भारत में भी आप जानते हैं कि 1857 की क्रांति के बाद में बहुत बाद में एक अंग्रेज अफसर हुए 'ड्रेक'। तो जितने उस वक्त लोकगीत कमोबेश होते थे क्योंकि हमारे यहाँ वाचक परंपरा में इतनी समृद्ध चीजें हैं।

अभी मैं नागालैंड गया। नागालैंड में हमें कोहिमा के पास 100 किलोमीटर दूर एक गाँव में दो ले गए पास की पहाड़ी पर लगभग 400 स्टेप्स ऊपर। वहाँ गाँव के लोगों ने 1830 से लेकर के और 1870 तक एक गाँव के लोगों ने उस अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ संघर्ष किया, वो 'अनएक्नॉलेज्ड' (unacknowledged) है। जो हम कहते हैं कि भारत में भारत का इतिहास लिखा नहीं गया, उसकी हकीकत नहीं वहाँ देखने को मिली कि ऐसी चीजों का कहीं वर्णन नहीं मिला।

उसी रूप में बहुत वर्षों पहले जो मेरी बड़ी कंपटेट एक किताब रही 'खगर नागा', जिसका अनुवाद अमृत राय ने किया। अद्भुत अनुवाद है। दो अंग्रेजी में 'फाइव ग्लोरियस ब्रदर्स' (Five Glorious Brothers), अमेरिका के एक नॉवलिस्ट थे उन्होंने लिखा था, उनकी बड़ी बहुचर्चित किताब थी, अद्भुत किताब है मेरी दृष्टि में। उसमें ऐसे ही लोगों का उल्लेख है

कि कैसे उन्होंने अपने स्वाभिमान से उस रोमन सत्ता को रोक रखा, उसके लिए कुर्बानी दे दी। वैसे प्रसंग देश में हमारे भरे हुए हैं और उस साहित्य को हमने एक जगह किया नहीं। खुद झारखंड में भरे हुए हैं पर हमने एक जगह उसको एकत्र नहीं किया, जो साहित्य हमें ताकत दे सके।

और पुस्तकों की ताकत आज कम लोग जानते हैं। एक इंजीनियर ये ब्रिटेन में लगभग 1860-70 के आसपास रहे होंगे, स्मृति के आधार पर मैं कहता हूँ, पेशे से इंजीनियर। पर उस व्यक्ति ने देखा कि हमारा समाज, हमारी शिक्षण संस्थाएं जिस तरह के बच्चों को पैदा कर रही हैं, ये बच्चे भविष्य नहीं गढ़ सकते। जिस तरह से दुनिया बदल रही है, इस बदलती दुनिया में वो अपनी जगह नहीं बना सकते। उस व्यक्ति ने लेख लिखना असबाबों में शुरू किया और उस लेख का कंपाइलेशन (compilation) जो निकला 'एजुकेशन: इंटेलेक्चुअल, मोरल एंड फिजिकल' (Education: Intellectual, Moral and Physical), जो दुनिया में इंडस्ट्रियल रिवोल्यूशन (Industrial Revolution) का आधार बना। उस किताब के बाद यूरोप से लेकर के अमेरिका से लेकर जापान में जो क्रांति हुई जिसके आधार पर इंडस्ट्रियल रिवोल्यूशन सफल हुआ। पूरे पाठ्यक्रम बदल गए। पाठ्यक्रम जो हमें भविष्य के लिए तैयार नहीं कर सकता, जो आने वाली चुनौतियों के बारे में समझ नहीं दे सकता, उसकी क्या उपयोगिता?

और वो साहित्य... साहित्य का एक प्रसंग और आपको मैं बताऊँ, मैं विल ड्यूरेंट (Will Durant) की अद्भुत किताब है, वो 15-20 लेखकों का एक संकलन है, उसका शीर्षक मैं भूल रहा हूँ। उसमें उन्होंने एक घटना का उल्लेख किया है एक चैप्टर में 'द टेन पीक्स ऑफ ह्यूमन प्रोग्रेस' (The Ten Peaks of Human Progress), 'मानव प्रगति की दस चोटियां' क्या हैं। उसमें पहली चोटी वो बताते हैं कि पुस्तकों की ताकत क्या है।

लिखा है कि 1794 में एक युवा फ्रेंच एरिस्टोक्रेट (Aristocrat), जो आदमी समृद्ध था फ्रांस का पर फ्रांस की क्रांति का पक्षधर था, उसका हिस्सेदार था। पर जब वो क्रांति अपने ही संतानों को खाने लगी तो इनके खिलाफ भी क्रांतिकारियों ने फांसी का हुक्म जारी किया। वो आदमी भूमिगत रहे, भाग गए, घर अपने उस... जब वो गोपनीय ढंग से छुपकर रह रहे थे, तो पेरिस के बाहर एक घर के ऊपर एक छोटा सा जिसे हम अपने यहाँ कहते हैं जैसे चारा-वारा रखने का कुछ घर होता है, एक कमरा जिसमें कोई हवा नहीं, रोशनदान नहीं, वैसे कमरे में वो छुपे हुए थे।

वहाँ रहकर उन्होंने एक किताब छोटी सी लिखी। वो किताब थी जिसका फ्रेंच में [नाम] था 'द स्केच ऑफ द टैबलू ऑफ द प्रोग्रेस ऑफ ह्यूमन स्पिरिट' (A Sketch of a Tableau of the Progress of the Human Spirit)। उस आदमी को यकीन था कि आने वाले 100 वर्षों में दुनिया इतनी बदल जाएगी कि हम इन सारी चीजों से छोटी-छोटी निकल आएंगे और मानव सभ्यता एक नए पीक (peak) पर होगी। जिस आदमी के पल-पल सारे की तरह मौत साथ थी, उस आदमी ने लिखकर कहा 'हमें यकीन है'।

फिर हुआ क्या उस आदमी का? वो अपना सिक्रेट पॉकेट में रखकर के और अगली सुबह वो जानते हैं कि हमें बहुत पुलिस तलाश रही है, वो जाकर के एक जगह, एक होटलनुमा जगह में छुपकर के सो गए। लोगों ने उन्हें.... पुलिस वालों ने पकड़ लिया। जब पकड़ा तो उस व्यक्ति ने जहर की शीशी अपने साथ रखी थी, वो पी ली। पर वो किताब रही। हमारे विल ड्यूरेंट जाने-माने दुनिया के इतिहासकार, जिनकी कई श्रृंखलाएं हैं, शायद आठ या दस श्रृंखलाओं की एक 'ह्यूमन सिविलाइजेशन' पर पुस्तक है, उनकी अलग-अलग लेखों के संकलन में ये दर्ज है। कि वो शायद पहला व्यक्ति था जिसने किताब लिखकर अपनी आस्था व्यक्त की मौत को साथ जीते।

ये पुस्तकों की ताकत रही है जो हर्बर्ट स्पेंसर (Herbert Spencer) का मैंने आपको उल्लेख किया। मुझे इसी रूप में अब एक और अंतिम किताब की चर्चा करके मैं अपनी बात खत्म करूँगा। आज दुनिया में जिस पुस्तक को लेकर, खास तौर से अमेरिका में, मैं कहूँ कि एक तरह से वहाँ के बौद्धिक वर्ग में, वहाँ के शासन करने वाले के वर्ग में, वहाँ पर जो सोचने-समझने वाले लोग हैं, उनमें जिस तरह का चिंतन, जिस तरह का सेल्फ-इंट्रोस्पेक्शन, जिस तरह की बहस चल रही है, उसमें भारत के लिए भी बहुत संदेश छुपा हुआ है।

जिस व्यक्ति ने उस किताब के बारे में थ्रिल लिखा, अभी 2025 में वह किताब आई है, डैंग बैंग की किताब है। डैंग बैंग-आप मत समझिएगा, ही वाज़ बॉर्न इन चाइना (उनका जन्म चीन में हुआ था), लेकिन कनाडाई नागरिक, चीन के ओरिजिन के। अभी वो स्टैनफोर्ड में किसी उनके इंस्टीट्यूट से जुड़कर रिसर्च कर रहे हैं। वो किताब है- 'चाइनाज क्वेस्ट टू इंजीनियर द फ्यूचर' (China's Quest to Engineer the Future)।

सिर्फ 45 वर्षों में, सिर्फ 45 वर्षों में दुनिया में आर्थिक विकास का इतिहास अगर आप देखेंगे, तो 100-125 वर्ष लगे होंगे ब्रिटेन को दुनिया का वो एम्पायर बनने में नहीं सूर्यास्त नहीं होता था। अमेरिका को भी लगभग इतने वर्ष लग गए होंगे, 80-100 वर्ष। पर 45 वर्षों में कोई दूसरा नज़ीर नहीं मिलता जिसमें एक मुल्क ने यह डेसिशन पाई हो।

75 से 80 तक, बल्कि उसके बाद तक कई पैमाने पर आर्थिक प्रगति के, भारत बहुत आगे था। 14 के बाद हमने अनेक चीज़ें की हैं और फिनटेक से लेकर काइनेटिक्स टेक्नोलॉजी से लेकर बाकी चीज़ों में हम बहुत आगे बढ़ गए, दुनिया की हथेली कर रहे हैं। पर हम पीछे किस रूप में टेक्नोलॉजी के छूट गए, क्योंकि हमने 70 के दशक से कोशिश नहीं की।

और आज वही मूल विषय है कि 21वीं सदी की ताकत कोई कैसे 45 वर्षों में मुल्क बन गया, उस मुल्क की कार्य-संस्कृति क्या है? और जो मुल्क दुनिया में सबसे आगे था, उसकी कार्य-संस्कृति क्या रही? मैं सिर्फ एक उदाहरण आपको बताकर अपनी बात खत्म करूँगा। उसमें दो उदाहरण देते हैं कि चीन में बीजिंग से लेकर और आपके शंघाई तक, 2008 में तय हुआ लगभग 1300 किलोमीटर का हम हाई-स्पीड ट्रेन बनाएँगे। उसी वक्त कैलिफोर्निया से लेकर लॉस एंजिल्स तक शायद, कैलिफोर्निया गवर्नर ने तय किया कि हमारे यहाँ भी हम इन्हीं 1300 किलोमीटर के लगभग, दोनों की दूरी वही, हम हाई-स्पीड ट्रेल बनाएँगे।

चीन ने 2008 में तय किया, 11 में पूरा किया। यूएस में आज तक वह चल रहा है, अब प्रोजेक्शन है 30 से 32 के बीच वो पूरा हो शायद पहला केज पूरा हो। एक ने टोटल कॉस्ट का इनवॉल्वमेंट उस वक्त, मैं स्मृति से कह रहा हूँ शायद 36 बिलियन तय किया, उस पर पूरा कर लिया। दूसरे के यहाँ शायद 136 बिलियन का अभी तक हो चुका है कि अब 136 बिलियन या 126 बिलियन उस पर कॉस्ट लगेगा। यानी कॉस्ट एस्केलेशन क्या हुआ। यानी वर्क कल्चर में।

आपने देखा 14 के बाद, मैंने देखा एक जगह हमारे नौजूदा प्रधानमंत्री जी एक प्रोजेक्ट का उद्घाटन कर रहे थे, तो बताया गया उसमें कि 52 में इसकी नींव हमने डाली थी। तो ये वर्क कल्चर से लेकर बाकी चीज़ों में किस तरह का काम एक मुल्क ने अपनाया और किस तरह की संस्कृति उस मुल्क ने अपनाई, जिसने 45 वर्षों में हाईवे से लेकर इंफ्रास्ट्रक्चर से लेकर इंजीनियरिंग में... अब तो वो 'डिजाइनर बेबी' की बात हो रही है, अब दुनिया में वहाँ खड़े हुए हैं।

इस जियोपॉलिटिक्स में अगर दुनिया की आप ताकत नहीं बन सकते शोध में, इनोवेशन में, रिसर्च में, जो आज आपके यहाँ स्टार्टअप्स लगभग 2 लाख हो चुके हैं जिसमें 100-200 से अधिक शायद यूनिकॉर्न हैं। यह कल्पर हमने अगर 70 से शुरू किया होता या पहले से किया होता जब हम उस मुल्क से बहुत आगे थे, तो शायद हम और बहुत (आगे) होते।

तो एक पुस्तक का ये योगदान हो सकता है। हमारे यहाँ जिन लोगों ने दादाभाई नौरोजी से लेकर और हमारे महाराष्ट्र के वे पर जो बिहार में पैदा हुए वे जिन्होंने 'भारत लूट कथा' लिखी थी, जिसका हम लोगों ने जब अखबार में वे तो बहुत दिनों बाद उसको सीरियलाइज़ किया, सखाराम देउस्कर। उन दो किताबों ने किस तरह भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका अदा की कि पूरे देश में एक इंट्रोस्पेक्शन शुरू हुआ कि क्यों नहीं हम आबाद हों।

उसी तरह का सैल्फ-इंट्रोस्पेक्शन इस किताब ने पैदा किया है वहाँ पर। और जब इस किताब का रिव्यू मैंने पढ़ा, हालाँकि रिव्यू पढ़ने के पहले मैंने इस किताब को मँगाया था, लगभग तीन महीने पहले आई थी, पर 'इंडियन एक्सप्रेस' में इसका रिव्यू जब मैं पढ़ रहा था, तो रिव्युअर ने लिखा कि इसमें भारत के लोगों के लिए भी बड़ा संदेश है। हमें समझना होगा और उस समझने की ताकत, भविष्य बनाने की ताकत भी पुस्तकें ही और साहित्य ही देता है। ये साहित्य की ताकत है।

उस साहित्य को लेकर आपने इतने समृद्ध पहलुओं से, अलग-अलग पहलुओं से, अध्यात्म से लेकर हर पीढ़ी पर इतना सुंदर आयोजन किया। मुझे आज जनसोदपुर में आपके बीच होने का मौका दिया, इसके लिए मैं व्यक्तिगत तौर पर आप सबका आभार प्रकट करता हूँ।

बहुत-बहुत धन्यवाद।



संकलन: **डॉ. प्रियंका सिंह**
सहायक प्राध्यापिका,
जनसोदपुर कॉ-ऑपरेटिव कॉलेज, जनसोदपुर

सत्र 6 का शेष भाग :

आवश्यक है, न कि जबरन शुद्धता थोपना।

भाषा, प्रतिष्ठा और मानसिकता

संवाद आगे बढ़ा तो डॉ. खाड़से ने भाषा के सामाजिक पक्ष पर बात रखी। उन्होंने कहा कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं होती—वह समाज की प्रतिष्ठा और मानसिकता से भी जुड़ी होती है।

अंग्रेज़ी बोलने वाले अक्सर स्वयं को श्रेष्ठ मान लेते हैं, और जो अंग्रेज़ी नहीं बोल पाते, वे भी उसी भ्रम में जीते हैं। जितना अधिक हम हिंदी का प्रयोग करेंगे, उतना ही हिंदी का विकास होगा।

अभिव्यक्ति, मर्यादा और नई पीढ़ी

सत्र में शील-अश्लीलता के प्रश्न पर भी गंभीर चर्चा हुई। डॉ. खाड़से ने कहा कि शब्दों का अर्थ संदर्भ के अनुसार बदलता है, लेकिन जानबूझकर अश्लीलता परोसना न भाषा के हित में है, न समाज के।

उन्होंने नई पीढ़ी पर भरोसा जताते हुए कहा कि आज की युवा पीढ़ी अधिक सशक्त, सजग और प्रतिबद्ध है—और यही हिंदी के उज्ज्वल भविष्य का संकेत है।

OTT, अनुवाद और आत्ममंथन

श्रीमती अंजु रंजन :पहले दूरदर्शन के सीमित विकल्प थे, लेकिन आज OTT ने अभिव्यक्ति के अनेक मंच खोल दिए हैं।

लेकिन चिंता का विषय यह है कि OTT पर प्रयुक्त हिंदी अक्सर अनुवादित और त्रुटिपूर्ण होती है, जिसमें गंभीर सुधार की आवश्यकता है।

उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा—"अगर हम अपने लेखन की तुलना जयशंकर प्रसाद जैसे साहित्यकारों की कृतियों से करें, तो आत्ममंथन अपने आप शुरू हो जाता है।

"और फिर उन्होंने वह वाक्य कहा, जो पूरे सत्र की सबसे चर्चित पंक्तियों में शामिल हो गया—"दो सौ पुस्तकें पढ़कर ही दो अच्छी पुस्तकें लिखी जा सकती हैं।"

बच्चे, मोबाइल और हमारी जिम्मेदारी

बच्चों के भविष्य पर बोलते हुए श्रीमती रंजन ने कहा—मोबाइल और OTT हमने बच्चों को दिए हैं, इनलिए वे क्या देखें—इसका चयन भी हमारी जिम्मेदारी है।

उन्होंने अपने फिजी प्रवास का उल्लेख करते हुए बताया कि वहाँ "हिंदी का बढ़ता दायरा, गुणवत्ता और चुनौतियाँ" विषय पर आयोजित सम्मेलन में विदेशी विद्वानों ने हिंदी के वैश्विक प्रसार की मुक्तकंठ से सराहना की।

बॉलीवुड और सोशल मीडिया ने हिंदी को विश्व के अनेक देशों तक पहुँचाया है।

हिंदी : सहज, वैज्ञानिक और वैश्विक

हिंदी की प्रकृति पर बात करते हुए श्रीमती अंजु रंजन ने कहा—हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है—यही उसका सौंदर्य और वैज्ञानिकता है। उन्होंने गर्व के साथ कहा कि गीता का अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है और जब वे विदेशी बहुओं को हिंदी बोलते देखती हैं, तो उन्हें अत्यंत गर्व और प्रसन्नता होती है।

निर्मिटिया मजदूरों के योगदान को भी उन्होंने हिंदी के वैश्विक विस्तार में अत्यंत महत्वपूर्ण बताया।

सत्र के अंत में यह स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आया कि हिंदी का दायरा निरंतर बढ़ रहा है—चाहे वह सरकारी कार्यालय हों, प्रतियोगी परीक्षाएँ हों या OTT और सोशल मीडिया जैसे नए मंच। यदि हिंदी को जनभाषा के रूप में सरकारी और सामाजिक तंत्र में खुलकर स्थान मिले, तो अधिकाधिक लोग उससे जुड़ेंगे और यही जुड़ाव हिंदी को और अधिक सशक्त, जीवंत और व्यापक बनाएगा।



संकलन: **आरती श्रीवास्तव**
रचनाकार
बहुभाषीय संस्था सहयोग

सत्र 7 का शेष भाग :

अकादमिक दृष्टि और वैश्विक अनुभव

प्रो. स्वाति पराडकर ने कहा कि भाषा के बहुभाषिक स्वरूप, वैश्विक संदर्भ और साहित्यिक संवाद की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि किस प्रकार विभिन्न भाषाओं के सहअस्तित्व से साहित्य अधिक समृद्ध और व्यापक बनता है।

प्रो. स्वाति पराडकर ने अपने वक्तव्य में भाषा को केवल संवाद का माध्यम मानने से आगे ले जाकर उसे सामाजिक प्रतिष्ठा और मानसिकता से गहराई से जुड़ा तथ्य बताया। उन्होंने कहा कि अंग्रेज़ी बोलने वाले स्वयं को श्रेष्ठ समझने लगते हैं और जो अंग्रेज़ी नहीं बोल पाते, वे भी उसी भ्रम में जीते हैं। यह मानसिकता भाषा को नहीं, बल्कि समाज को कमजोर करती है।

उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि जितना अधिक हम हिंदी का प्रयोग करेंगे, उतना ही हिंदी

सत्र 8 का शेष भाग :

का विकास होगा।

भाषा सदैव विवाद का कारण रही है, लेकिन उसे विवाद नहीं, धरोहर के रूप में सहेजना आवश्यक है। किसी भी देश में प्रवेश करते ही सबसे पहले वहाँ की भाषा उसकी पहचान बनती है—उसके बाद वेशभूषा और संस्कृति आती है।

प्रो. पराशर ने यह भी रेखांकित किया कि अंग्रेज़ी और फ्रेंच जैसी भाषाएँ ऐतिहासिक रूप से पूरी दुनिया पर थोपी गईं हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि अंग्रेज़ी हमारी मूल भाषा नहीं है। इसके बावजूद, बोलचाल की भाषा समय और परिस्थितियों के अनुसार निरंतर बदलती रहती है। इसका प्रभाव फ़िल्मों के गीतों में भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जहाँ शब्दावली और भावबोध के साथ-साथ समाज का मानस भी बदलता दिखाई देता है।

उन्होंने यह प्रश्न उठाया कि—ऐसे समय में हम अपनी भाषा की प्रकृति को सुरक्षित रखते हुए, उसे आने वाली पीढ़ी को कविता और साहित्य की धरोहर के रूप में कैसे सौंपें—इस पर गंभीर विचार की आवश्यकता है।

आलोचना से पहले आत्ममंथन जरूरी

प्रो. स्वाति पराशर ने कवियों की आलोचना पर भी संतुलित दृष्टि रखते हुए कहा कि किसी रचना की आलोचना करने से पहले थोड़ा ठहरकर सोचना चाहिए। रचनाकार अपनी कविता में शब्दों को कोरे काग़ज़ पर पिरोता है—यह एक गहन सृजनात्मक प्रक्रिया है।

उन्होंने एक सटीक उपमा देते हुए कहा—"स्वामी कैनवास पर पेंटिंग बनाने के लिए बहुत सोचना पड़ता है, लेकिन उसमें कमी निकालने के लिए उतना नहीं।

"उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि आज प्रयुक्त हिंदी प्रायः अनुवादित और त्रुटिपूर्ण हो जाती है, जिसमें सुधार की आवश्यकता है। यदि हम अपने लेखन की तुलना जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जैसे साहित्यकारों की कृतियों से करें, तो आत्ममंथन अनिवार्य हो जाता है।

इसलिए हम क्या लिखते हैं—इसका चयन भी हमारी जिम्मेदारी है। हिंदी का वैश्विक परिदृश्य अपने विदेश प्रवास का उल्लेख करते हुए प्रो. पराशर ने बताया कि वहाँ आयोजित "हिंदी का बढ़ता दायरा, गुणवत्ता और चुनौतियाँ" विषयक सम्मेलन में विदेशी विद्वानों ने हिंदी के वैश्विक प्रसार और प्रभाव की मुक्तकंठ से सराहना की।

हिंदी का सौंदर्य और सहजता

संवाद सूत्रधार वैभव मणि त्रिपाठी ने हिंदी की वैज्ञानिक और सहज प्रकृति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा जाता है—यही उसका सौंदर्य है।

यह सत्र केवल कविता या भाषा तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, साहित्यिक लोकतंत्र और समकालीन भाषा-बोध जैसे गहन प्रश्नों को सामने रखा।

"बोलचाल की भाषा में कविता" विषय पर यह संवाद श्रोताओं के लिए एक ऐसा अनुभव बन गया, जिसने भाषा को नियमों से नहीं, संवेदना से समझने का आग्रह किया।

संकलन : **हेमलता कुजाती**
सहायक प्राध्यापक
ए.बी.एन. कॉलेज
जमशेदपुर, झारखंड



सांस्कृतिक आंदोलन है. अब समय आ गया है कि गीता खासी में गूँजे, बोडो में बहे, मिज़ो में मुखरित हो—केवल प्रचार नहीं.

उन्होंने स्पष्ट किया कि "पूर्वोत्तर गीता ज्ञान यात्रा" एक शांति की यात्रा है, ज्ञान की प्यासी का प्रयास है और आत्मा की आवाज़ है, जिसमें अनुवादकों को पूर्ण सम्मान और सहयोग प्रदान किया जाएगा.

उन्होंने कहा—इस यात्रा में जुड़ने वाले अनुवादकों को हमारी ओर से सम्मानजनक मानदेय, तकनीकी सहयोग, संस्कृत विशेषज्ञों का मार्गदर्शन, भाषा-संपादन, प्रूफरीडिंग और डिज़ाइन टीम का सहयोग मिलेगा.

श्रीमद्भगवद्गीता का अनुवाद 'अनुवादक' के स्वयं के नाम से प्रकाशित किया जाएगा तथा वह डिजिटल और ऑडियो फॉर्मेट में भी उपलब्ध कराया जाएगा.

उन्होंने पूर्वोत्तर की जिन भाषाओं के लिए अनुवादकों की आवश्यकता है, उनका उल्लेख करते हुए कहा—बोडो, मेतई, खासी, गारो, मिज़ो, आओ, अंगामी, भूटिया, लेपचा, कोकबोरोक तथा अन्य प्रमुख स्थानीय जनजातीय भाषाएँ.

इसी क्रम में जनजातीय चेतना, सांस्कृतिक गरिमा और जड़ों की आवाज़ को शब्द देने वाले लेखक संदीप भूतोड़िया ने जानकारी देते हुए बताया कि इस ऐतिहासिक यात्रा की पहली ठोस कड़ी अरुणाचल प्रदेश से जुड़ चुकी है.

उन्होंने कहा कि डॉ. तादाम रुती जी, सहायक प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, रानगिंग महाविद्यालय, रोइंगमुख, सिंदू जिला, यापुम पासे (अरुणाचल प्रदेश) ने श्रीमद्भगवद्गीता (गीता प्रेस, गोरखपुर - कोड 502) के गालो भाषा में प्रथम अनुवादक के रूप में अपनी स्वीकृति प्रदान की है.

उन्होंने इसे केवल अनुवाद नहीं, बल्कि आत्मा से आत्मा का संवाद बताते हुए कहा—"यह वह क्षण है, जब गीता के श्लोक गालो भाषा की धरती पर अपने अर्थ खोलेंगे. यह कार्य प्रत्यारोपण नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण का एक अमूल्य सोपान है.

"इस ऐतिहासिक पहल के अंतर्गत विवादीप फाउंडेशन की ओर से ₹40,000/- (पाँच हज़ार रुपये मात्र) का मानदेय निर्धारित किया गया है,

यह अनुवाद डॉ. तादाम रुती जी के नाम से ही प्रकाशित किया जाएगा, तथा कार्यारंभ के रूप में ₹10,000/- (दस हज़ार रुपये) की अग्रिम राशि उन्हें निर्गत की जा चुकी है.

अपने संबोधन के समापन में प्रो. (डॉ.) रंजन कुमार त्रिपाठी ने उपस्थित श्रोताओं, विद्वानों और भाषाविदों से आह्वान करते हुए कहा—तो आइए—'पूर्वोत्तर गीता ज्ञान यात्रा' से जुड़िए. अब लिपियाँ जागेंगी. अब आत्मा बोलेगी—अपनी भाषा में, अपनी गीता में.

संकलन : **सुधा गोयल 'नवीन'**



सत्र 9 का शेष भाग :

बस, वही वाक्य मेरे लिए प्रेरणा बन गया. मुझे लगा कि यदि गीता मेरी भाषा में होगी, तो मेरी जनजाति भी उसे अपने हृदय से जोड़ पाएगी.

जयप्रकाश राय : आपकी आस्था की दृष्टि भी काफी अलग और गहरी प्रतीत होती है.

डॉ. तादाम रुची : हमलोग सूर्य और चंद्र की पूजा ऐतिहासिक रूप से करते हैं. हमारा कोई एक विशेष भगवान नहीं है. नदियों, पर्वतों, वृक्षों, इन सबमें हम ईश्वर को देखते हैं. हमारे लिए प्रकृति ही सबसे बड़ा धर्मग्रंथ है.

जयप्रकाश राय : डॉ. तादाम, एक संवेदनशील प्रश्न पूछना चाहूँगा. अक्सर पूर्वोत्तर के लोगों से यह पूछा जाता है—"क्या आप चीनी हैं?" या "क्या आप जापानी हैं?" ऐसे सवाल आपको कैसा महसूस कराते हैं?

डॉ. तादाम रुची : मैं समझता हूँ कि यह अज्ञान भौगोलिक कारणों से होता है. लेकिन सच कहूँ तो कभी-कभी यह सवाल दिल को चोट पहुँचा देता है. अपने ही देश में बार-बार यह बताना पड़े कि "हम भारतीय हैं"—यह पीड़ा देता है.हमारी भाषा, संस्कृति और आस्था भारतीय ही हैं, बस हमारा चेहरा आपसे थोड़ा अलग हो सकता है.

जयप्रकाश राय : तो इस तरह के संवाद क्यों ज़रूरी हैं?

डॉ. तादाम रुची : क्योंकि संवाद से ही दूरियाँ मिटती हैं. जब लोग हमारी बातें सुनते हैं, तो वे हमें नक्शे पर नहीं, मन से भी समझने लगते हैं.

जयप्रकाश राय : मोजुम जी, इतनी भाषाई विविधता के बीच अरुणाचल या पूर्वोत्तर के आदिवासी समुदाय खुद को कैसे जोड़कर रखता है?

मोजुम लोयी : अरुणाचल में लगभग 26 जनजातियाँ, 100 से अधिक उपजनजातियाँ और लगभग 150 भाषाएँ या बोलियाँ प्रचलित हैं. स्वाभाविक है कि सभी एक-दूसरे की भाषा नहीं समझते. इसी कारण वहाँ 'अरुणाचली हिंदी' का विकास हुआ—एक ऐसी संपर्क भाषा जिसमें लिंगभेद नहीं है.

जयप्रकाश राय : लेकिन लेखन में तो भाषा की शुद्धता की चुनौती रहती होगी?

मोजुम लोयी : हाँ, बिल्कुल! बोलचाल में सहजता से सकती है, लेकिन जब हम लिखते हैं, तब व्याकरण की शुद्धता पर विशेष ध्यान देना होता है. मैं मानती हूँ कि हमें अपनी कहानी स्वयं लिखनी चाहिए. इसी दृष्टि से मैंने "भोजपुरी और गालो भाषा के आख्यानिक गीतों का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध भी किया है.

जयप्रकाश राय : आज की यह बातचीत स्पष्ट करती है कि पूर्वोत्तर केवल एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं, बल्कि विचार, संवेदना और संस्कृति की एक समृद्ध भूमि है.

मोजुम लोयी : हाँ, और यह जरूरी है कि भारत के बाकी हिस्से हमें केवल नक्शे पर नहीं, संवेदना के स्तर पर भी समझें.

डॉ. तादाम रुची : जब संवाद होता है, तभी दूरियाँ मिटती हैं.आज का यह मंच उसी संवाद का एक सुंदर उदाहरण है.

यह सत्र केवल विचारों का आदान-प्रदान नहीं था, बल्कि पहचान, आस्था, प्रकृति और आत्मसम्मान पर केंद्रित एक अत्यंत संवेदनशील और आत्मीय संवाद बन गया.



संकलन : **डॉ. रागिनी भूषण**
सेवानिवृत्त उपाचार्य
पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत
कोलहान यूनिवर्सिटी

सत्र 11 का शेष भाग :

उन्होंने आगे कहा – असबार में पहले स्थान पर खबर छप जाना पर्याप्त नहीं है। यदि वह तथ्यहीन सिद्ध हो जाए तो समाज का विश्वास टूट जाता है। लेकिन यदि आप सत्य पर टिके हैं, तो भले ही देर से सही, समाज अंततः आपके साथ खड़ा होता है।

ब्रेकिंग न्यूज़' का असली अर्थ

संजय कृष्णा ने सोशल मीडिया पर वायरल होने वाली अपुष्ट खबरों का उदाहरण देते हुए प्रश्न किया – क्या हर वायरल सूचना को ब्रेकिंग न्यूज़ मान लेना चाहिए?

इस पर प्रियदर्शन ने तीखे शब्दों में कहा –आज 'ब्रेकिंग न्यूज़' का अर्थ तलवार बदल गया है। वास्तविक ब्रेकिंग वही है जो सत्यापित हो और जिसकी सूचना देने के लिए नियमित बुलेटिन रोक जाए। लेकिन आज बिना पुष्टि के भी 'ब्रेकिंग' चला दी जाती है। यह खबर का नहीं, खबर की गंभीरता का 'नष्ट जाना' है।

उन्होंने भारतीय पत्रकारिता के इतिहास का उल्लेख करते हुए कहा –हिंदुस्तान की पत्रकारिता ने जेलों में आँख खोली है। 1875 की आवाजकाल ने मीडिया को यह सिखाया कि उसका दायित्व सत्ता से प्रश्न करना है। 1991 के उदारीकरण के बाद मीडिया के स्वरूप में बड़ा बदलाव आया। विज्ञापन और कॉरपोरेट प्रभाव बढ़ा। फिर धीरे धीरे 'चौथा स्तंभ' की अवधारणा पर नए विमर्श शुरू हुए। इन सबके बीच पत्रकारिता की आत्मा को बचाए रखना सबसे बड़ी चुनौती है।

रील्स और तत्कालिकता का संकट

रील्स और शॉर्ट वीडियो के बढ़ते प्रभाव पर चर्चा करते हुए प्रियदर्शन ने कहा – रील्स में संदर्भ गायब हो जाता है। खबर का आगे-पीछे का पूरा परिदृश्य नहीं दिखाता। हमारा अटेंशन स्पेन घटकर कुछ ही मिनटों का रह गया है। जल्दी देने की होड़ में गहराई और सत्यापन पीछे छूट जाता है।

उन्होंने चेताया कि यह केवल पत्रकार की नहीं, पाठक-दर्शक की भी जिम्मेदारी है –"आपको फेक्ट-चेक की आदत डालनी होगी।"

विश्वसनीयता का प्रश्न

डॉ. गेहा तिवारी ने पत्रकारिता की साख में आई गिरावट पर प्रश्न उठाया।

डॉ. अंजुल शर्मा ने स्पष्ट किया –ब्रेकिंग न्यूज़ सत्यापन के बाद ही होनी चाहिए। लेकिन आज सोशल मीडिया, पोर्टल और विभिन्न मंचों से बिना पुष्टि के सूचनाएँ प्रसारित हो जाती हैं। इससे विश्वसनीयता कम होती है। रिपोर्टर को 'सपोर्टर' नहीं बनना चाहिए। निष्पक्षता और प्रक्रिया से ही साख बनती है।

आर्थिक दबाव और समझौते

इस संदर्भ में अनुज कुमार सिन्हा ने मीडिया के व्यावसायीकरण पर चिंता व्यक्त की –आज विज्ञापन और आर्थिक दबाव वास्तविकता है। जितना विज्ञापन अधिक, उतना प्रभाव अधिक। ऐसे में पत्रकार को विवेकपूर्ण संतुलन बनाना पड़ता है। लेकिन अंततः पत्रकार की असली पूँजी उसकी विश्वसनीयता है।

न्यूज़ पोर्टल और स्पीड बनाम सत्य

डॉ. गेहा तिवारी : आज हमारी न्यूज़ पोर्टल सक्रिय हैं। स्पीड इतनी तेज है कि खबर पहले डालने की होड़ लगी है। ऐसे में सत्यापन कहाँ खड़ा है?

डॉ. अंजुल शर्मा : डिजिटल स्पेस में सबसे बड़ी चुनौती यही है – पहले बताना सही। पहले होना आसान है, सही होना कठिन। न्यूज़ पोर्टल्स ने लोकतंत्रीकरण तो किया है, लेकिन संपादकीय फिल्टर कमजोर हुआ है।

अनुज कुमार सिन्हा : पहले खबर छपती थी तो पीछे पूरा डेस्क होता था। अब कई पोर्टल एक कमरे से चल रहे हैं। 'सोर्स: सोशल मीडिया' लिख देना पत्रकारिता नहीं है।

प्रियदर्शन : स्पीड पत्रकारिता की शत्रु नहीं है। लेकिन स्पीड अगर विवेक को निगल जाए, तब संकट है। डिजिटल माध्यम नया है, लेकिन नैतिकता पुरानी ही रहेगी।

Influencer के द्वारा न्यूज़ और व्यूज का खेल

संजय कृष्णा : आज Influencer पत्रकारिता कर रहे हैं। व्यूज के मर्चेन्डाइज़ न्यूज पोस्ट की जाने लगी है। इस ट्रेंड को आप कैसे देखते हैं?

प्रियदर्शन : पत्रकार और Influencer में मूल फर्क है – पत्रकार जवाबदेह होता है। Influencer एल्गोरिदम के प्रति जवाबदेह है, समाज के प्रति नहीं।

डॉ. अंजुम शर्मा : समस्या तब होती है जब 'Opinion' को 'News' की तरह बेचा जाता है। News तथ्य है, View व्याख्या है। दोनों का मिश्रण खतरनाक है।

अनुज कुमार सिन्हा : आज कई लोग कैमरा और माइक लेकर खुद को पत्रकार घोषित कर देते हैं। लेकिन पत्रकारिता डिग्री से नहीं, अनुशासन से आती है।

डॉ. नेहा तिवारी : तो क्या मीडिया संस्थानों को Influencer मॉडल से सीखना चाहिए या दूरी बनानी चाहिए?

प्रियदर्शन : सीखिए उनकी पहुँच से, लेकिन अपनाइए अपनी विश्वसनीयता।

24x7 न्यूज चैनल और TRP का दबाव

संजय कृष्णा: 24 घंटे वाले चैनलों में कंटेंट की भूख रहती है। क्या इसी कारण भड़काऊ डिबेट्स बढ़ी हैं?

डॉ. अंजुम शर्मा : TRP एक वास्तविकता है। लेकिन TRP के लिए शोर पैदा करना पत्रकारिता नहीं है।

प्रियदर्शन : टीवी स्टूडियो कई बार 'कोर्टरूम' या 'इलेक्शन वार रूम' बन जाता है जहाँ एंकर जज भी है और वकील भी। यह खतरनाक प्रवृत्ति है।

अनुज कुमार सिन्हा : पहले बहस मुद्दे पर होती थी, अब व्यक्ति पर होती है। आवाज़ ऊँची हो गई है, तर्क हल्के हो गए हैं।

डॉ. नेहा तिवारी : क्या दर्शक भी इस शोर के लिए जिम्मेदार हैं?

प्रियदर्शन : दर्शक वही देखता है जो उसे दिखाया जाता है। लेकिन अंततः जानकारी दोनों तरफ से आनी होगी।

अख़बारों के बढ़ते पन्ने, घटती बिक्री

संजय कृष्णा : अख़बारों के पन्ने बढ़ रहे हैं, लेकिन बिक्री घट रही है। यह विरोधाभास क्यों?

अनुज कुमार सिन्हा : पन्ने विज्ञापन के कारण बढ़ते हैं, पाठक के कारण नहीं। पाठक की आदत बदल गई है। मोबाइल उसका नया अख़बार है।

प्रियदर्शन : लेकिन यह भी सच है कि संकट के समय लोग अब भी अख़बार की ओर लौटते हैं। विश्वसनीयता की जड़ अभी भी प्रिंट में गहरी है।

डॉ. अंजुम शर्मा : भविष्य 'मल्टी-प्लेटफॉर्म' का है। प्रिंट, डिजिटल और वीडियो – सबका समन्वय ही टिकाऊ मॉडल है।

मूल प्रश्न : पत्रकारिता का नैतिक आधार

संजय कृष्णा : इतने दबावों के बीच पत्रकार निष्पक्ष कैसे रहे?

प्रियदर्शन : खूब पढ़िए। तथ्य के साथ खड़े होइए।

डॉ. अंजुम शर्मा : सवाल करना मत छोड़िए। भाषा पर काम कीजिए।

अनुज कुमार सिन्हा : धैर्य रखिए। सन्दर्भ बताइए। व्यावहारिक बनिए। सत्य का विश्लेषण कीजिए।

डॉ. नेहा तिवारी : क्या पत्रकारिता का भविष्य सुरक्षित है?

प्रियदर्शन : जब तक सच बोलने की जरूरत है, पत्रकारिता ज़िंदा रहेगी।

युवा पत्रकारों के नाम संदेश

प्रियदर्शन : सिर्फ हेडलाइन मत चुनिए, इतिहास पढ़िए। सिर्फ ट्रेंड मत देखिए, दस्तावेज़ देखिए। तथ्य आपकी ढाल भी हैं और आपकी तलवार भी। पत्रकार वही है जो भीड़ की दिशा नहीं, सच की दिशा में खड़ा हो। तेज़ मत बनिए, महत्त बनिए।

डॉ. अंजुम शर्मा : सवाल करना बंद किया तो पत्रकारिता खत्म। हर सूचना पर 'क्यों' पूछिए, हर बयान पर 'कैसे' पूछिए। भाषा आपकी पहचान है – शब्दों को धार दीजिए। पत्रकारिता स्टूडियो की चमक नहीं, अंधेरे में दिया जलाने का साहस है। आपका काम ट्रेंड बनाना नहीं, सच को सामने लाना है।

अनुज कुमार सिन्हा : खबर को सतह पर मत छोड़िए – उसकी जड़ तक जाइए। संदर्भ के बिना खबर अधूरी है। धैर्य रखिए – सच्चाई जल्दी नहीं मिलती। व्यावहारिक बनिए, लेकिन मूल्यों से समझौता मत कीजिए। लोगों से मिलिए, उनकी आँखों में देखिए – वहीं असली रिपोर्टिंग है। याद रखिए, पत्रकार की सबसे बड़ी पूँजी उसका विश्वास है – एक बार खो गया तो फिर नहीं लौटता।

यह सत्र मीडिया के बदलते स्वरूप, बाज़ार के दबाव, डिजिटल स्पीड, TRP की होड़, Influencer संस्कृति और विश्वसनीयता के संकट पर एक ईमानदार बहस थी। यहाँ आलोचना भी थी, आत्मस्वीकृति भी – और सबसे बढ़कर यह भरोसा भी कि पत्रकारिता की असली ताकत अब भी सत्य, अध्ययन और नैतिक साहस में है। प्रिंट से डिजिटल, न्यूज़ ब्रुलेटिन से रील्स तक की यात्रा में पत्रकारिता की आत्मा – सत्य, निष्पक्षता और सामाजिक उत्तरदायित्व – केंद्र में रही।

वक्ताओं ने स्पष्ट किया कि माध्यम बदल सकते हैं, तकनीक बदल सकती है, लेकिन पत्रकारिता की विश्वसनीयता का आधार अब भी वही है – ईमानदारी, अध्ययन, धैर्य और साहस।

संकलन : **इंदिरा पांडे**
साहित्यकार
मथुरा, उत्तरप्रदेश



सत्र 12 एवं 13 का शेष भाग :

सूखती नदियाँ और सामाजिक जिम्मेदारी डॉ. मिश्र ने वर्तमान समय में नदियों के सूखने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पूजा-अर्चना तक सीमित आस्था पर्याप्त नहीं है. अवैध बालू उत्खनन, नदियों के किनारे अनियंत्रित निर्माण, व्यवसायीकरण और बाँधों के नाम पर प्राकृतिक प्रवाह में हस्तक्षेप—इन सबने नदियों को संकट में डाल दिया है.

उन्होंने स्पष्ट कहा कि बालू नदियों का प्राण है. यदि बालू नहीं बचेगी, तो नदियाँ सूखेंगी ही. इंजीनियरिंग परियोजनाओं के नाम पर नदियों के सामने दीवारें खड़ी कर देना दीर्घकालिक नुकसान है.

कोसी नदी : बाढ़ और अनुभव

कोसी नदी के संदर्भ में डॉ. मिश्र ने अपने प्रत्यक्ष अनुभव साझा किए. उन्होंने बताया कि कोसी को उसकी अनियंत्रित धारा और तीव्र वेग के कारण 'दासस्सी नदी' कहा गया. 1984 की विनाशकारी बाढ़ में 105 गाँवों के जलमग्न होने का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि इन घटनाओं ने उन्हें नदियों को समझने की दिशा में प्रेरित किया. बाद के वर्षों में बाँधों के निर्माण से स्थिति में सुधार हुआ है और अब बाढ़ का भय काफी हद तक नियंत्रित है.

रश्मि कात्यायन का उद्बोधन

वरिष्ठ अधिवक्ता, शोधकर्ता और आदिवासी अधिकार विशेषज्ञ रश्मि कात्यायन ने अपने वक्तव्य में कहा कि नदियाँ आदिवासी समाज की जीवनरेखा हैं. जल, जंगल और जमीन—तीनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं. नदियों का सूखना केवल पर्यावरणीय संकट नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक विघटन का संकेत है.

उन्होंने ग्राम-स्वराज, पारंपरिक सामुदायिक शासन और भूमि कानूनों के संदर्भ में कहा कि जब तक स्थानीय समुदायों को नदियों के संरक्षण की प्रक्रिया में सहभागी नहीं बनाया जाएगा, तब तक कोई भी प्रयास स्थायी नहीं हो सकता.

जन–भागीदारी का संदेश

अपने समापन वक्तव्य में डॉ. दिनेश कुमार मिश्र ने कहा कि नदियों की सुरक्षा केवल सरकार के भरोसे नहीं छोड़ी जा सकती. नागरिकों को भी संगठित होकर आगे आना होगा. नदी-तटों से बालू की चोरी पर रोक, गंदगी फैलाने वालों के लिए दंड और सामूहिक स्वच्छता अभियानों की आवश्यकता है. उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति विशेषज्ञ नहीं हो सकता, लेकिन संवेदनशील नागरिक हर कोई बन सकता है.

यह सत्र केवल पर्यावरणीय चर्चा नहीं था, बल्कि समस्या, स्मृति और सामूहिक उत्तरदायित्व पर केंद्रित एक गहन और विचारोत्तेजक उद्बोधन बना.

संकलन : डॉ. रागिनी भूषण
सेवानिवृत्त उपचार्य
पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत,
कोल्हान यूनिवर्सिटी



सत्र 14 का शेष भाग :

भी राष्ट्रसेवा है।

रश्मि शर्मा : आपका वर्णित पात्र 'डब्बू जी' आज भी लोगों के दिलों में बसता है। इसकी प्रेरणा?

आबिद सुरती : डब्बू जी मेरे पिता का व्यंग्यचित्र हैं। धर्मयुग में तीस वर्षों तक वे पाठकों के साथी रहे। मैंने महसूस किया कि हास्य में छुपी सच्चाई ही उसे लोकप्रिय बनाती है। मैं ललित कला में डिप्लोमा धारक था। मेरी चित्रकला को खूब सराहा गया, पहली इंटरनेशनल उत्तराखंड के नैनीताल में आयोजित हुई थी। इसके बाद देश-विदेश में चित्रकला की कई प्रदर्शनियाँ लगाई गईं। मैंने चित्रकला के क्षेत्र में भी ख्याति अर्जित की, किंतु 'डब्बू जी' लोकप्रियता ने मुझे कार्टून की दुनिया में कुछ नया और महत्वपूर्ण करने की प्रेरणा दी और मेरी कूची कार्टून रचने लगी।

रश्मि शर्मा : आपके पात्र 'बहादुर' की पृष्ठभूमि क्या रही?

आबिद सुरती : एंबल में बिताए समय ने मुझे यह पात्र दिया। अन्याय के खिलाफ खड़ा होने वाला एक युवा, जो माँ के आशीर्वाद से साहस पाता है—'बहादुर' उसी अनुभव की उपज है।

जनजातीय संस्कृति पर विचार

आबिद सुरती ने जनजातीय जीवन और आदिवासी संस्कृति पर भी गंभीर चिंतन रखते हुए कहा कि—भारत की कई उत्कृष्ट संस्कृतियाँ अभी भी अलिखित हैं। हमें उन्हें साहित्य में स्थान देना होगा, तभी वे मुख्यधारा में सम्मानपूर्वक शामिल होंगी।

मनोज कुमार सिन्हा से संवाद

रश्मि शर्मा : मनोज जी, आप इस सत्र में आए सभी अतिथियों के कैरिकेचर बनाकर लाए हैं। यह विचार कैसे आया?

मनोज कुमार सिन्हा : कैरिकेचर एक तरह का सम्मान है। मैं चाहता था कि हर अतिथि अपने साथ एक मुस्कान लेकर जाए। जब आप किसी का कैरिकेचर बनाते हैं तो आप उसके व्यक्तित्व को पढ़ते हैं—उसकी विशिष्टता को रेखाओं में पकड़ते हैं। यह मेरे लिए कला के माध्यम से संवाद का तरीका है।

रश्मि शर्मा : क्या कैरिकेचर भी सामाजिक टिप्पणी का माध्यम हो सकता है?

मनोज कुमार सिन्हा : निश्चित रूप से। कैरिकेचर केवल अतिशयोक्ति नहीं है, वह व्यक्ति का सार है। एक नेता, एक साहित्यकार या आम आदमी—सबकी अपनी कहानी है। रेखाएँ उसे उजागर करती हैं।

यह संवाद सत्र केवल कार्टून की तकनीक पर चर्चा नहीं था, बल्कि रेखाओं में छुपे सामाजिक सच की खोज थी। हास्य के पीछे छिपी गंभीरता, छोटे चित्र में समाए बड़े संदेश और कला की सामाजिक प्रतिबद्धता—इन सबने इस सत्र को विशिष्ट बना दिया। कार्टून, सचमुच, साहित्य की वह आधुनिक विधा है जो कम शब्दों में अधिक कहने की क्षमता रखती है।

संकलन : डॉ. पुष्पा कुमारी
सहायक अध्यापक, स्नातकोत्तर, हिन्दी विभाग
जमशेदपुर वीमेन्स यूनिवर्सिटी, जमशेदपुर



सत्र 15 का शेष भाग :

डॉ. कायनात : जब आप अकेले यात्रा करते हैं, तो स्थान आपसे सीधे संवाद करता है। किसी जनजातीय अंचल की लोककथा सुनना, किसी प्राचीन स्थल पर खड़े होकर इतिहास को महसूस करना – ये अनुभव लेखन को गहराई देते हैं। यात्रा मेरे लिए अध्ययन भी है और आत्मसंवाद भी।

साहित्य की भूमिका

संजय कृष्णा : विरासतों के संरक्षण में साहित्य की क्या भूमिका हो सकती है?

डॉ. रविता वाजपेयी : साहित्य अतीत और भविष्य के बीच सेतु है। जब लेखक लोकस्मृतियों को शब्द देता है, तब वह धरोहर को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाता है। भारतीय साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वह परंपरा को गतिशील रखता है।

भावी योजनाएँ

संजय कृष्णा : डॉ. कायनात आपकी आगामी योजनाएँ क्या हैं?

डॉ. कायनात : मैंने असम में एक सांस्कृतिक पहियोजना पर कार्य प्रारंभ किया है। साथ ही, अगले वर्ष विद्यापीठ फाउंडेशन के साथ झारखंड में 'रामायण सर्किट' पर कार्य करने की योजना बन रही है। हमारा प्रयास रहेगा कि पौराणिक स्थलों को शोध, साहित्य और संवाद के माध्यम से नई पीढ़ी से जोड़ा जाए।

झारखंड में रामायण सर्किट–एक अल्पज्ञात सांस्कृतिक आयाम

संजय कृष्णा ने उत्सुकता से प्रश्न रखा : झारखंड में 'रामायण सर्किट' की बात आपने की। क्या वास्तव में यहाँ के पौराणिक स्थल रामायण काल से जुड़े हुए हैं?

डॉ. कायनात : जी! यह अत्यंत रोचक और अभी तक अपेक्षाकृत अल्पज्ञात विषय है। झारखंड के विभिन्न जिलों में रामायण से जुड़े अनेक स्थल लोकमान्यताओं और परंपराओं में आज भी जीवित हैं।

उन्होंने विस्तार से बताया –सिमडेगा में रामरेखा धाम, जहाँ मान्यता है कि वनवास काल में भगवान राम ने विश्राम किया। सरायकेला-खरसावां में सीता कुंड और सीता नाला, पश्चिमी सिंहभूम में रामतीर्थ, लोहरदगा में चूल्हापानी, बोकारो में राम-लखन टुंगरी, हजारीबाग में राम कुंड जैसे कई पौराणिक संदर्भों से समृद्ध स्थल झारखंड में अवस्थित हैं।

गुमला के टांगी नाथ में भगवान परशुराम का फरसा होने की लोकमान्यता है और लोहरदगा में आंजनेय धाम को भगवान हनुमान की जन्मस्थली के रूप में भी माना जाता है।

साहित्य और शोध की आवश्यकता

डॉ. रविता वाजपेयी ने इस संदर्भ में कहा : इन स्थलों की ऐतिहासिकता और लोकविश्वास – दोनों पर गंभीर अध्ययन की आवश्यकता है। भारतीय साहित्य का दायित्व केवल उल्लेख करना नहीं, बल्कि शोध के साथ उसे स्थापित करना भी है।

कॉफी टेबल बुक की योजना

डॉ. कायनात कानी ने आगे कहा : इन सभी स्थलों को केंद्र में रखकर एक शोधपरक कॉफी टेबल बुक की योजना बन रही है। इस पुस्तक में केवल पौराणिक उल्लेख ही नहीं, बल्कि स्थानीय लोककथाएँ, पुरातात्विक संकेत, मानचित्र, फोटोग्राफी और सांस्कृतिक विश्लेषण भी सम्मिलित किए जाएँगे। हमारा उद्देश्य है – आस्था और अकादमिक दृष्टि, दोनों को साथ लेकर चलना।

यह 'रामायण सर्किट' न केवल सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ करेगा, बल्कि झारखंड के धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन को भी नई दिशा दे सकता है।

झारखंड की धरती केवल खनिज संपदा से समृद्ध नहीं, बल्कि पौराणिक और सांस्कृतिक परंपराओं से भी समृद्ध है। आवश्यकता है – शोध, दस्तावेज़ीकरण और संवेदनशील प्रस्तुति की।

यह सत्र केवल सांस्कृतिक स्मृतियों का पुनर्पाठ नहीं था, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए दिशा-सूचक भी था। संदेश स्पष्ट था – धरोहरें केवल संरक्षित नहीं की जातीं, उन्हें समझा और जिया जाता है। भारतीय साहित्य की दृष्टि में संस्कृति स्थिर नहीं, बल्कि सतत विकसित होने वाली चेतना है।



संकलन : **प्रो. (डॉ.) मुदिता चंद्रा**
सेवानिवृत्त प्राध्यापिका
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा

सत्र 16 का शेष भाग :

प्रो. त्रिपाठी : आदि शंकराचार्य ने केवल दर्शन नहीं दिया, उन्होंने सनातन की संरचनात्मक व्यवस्था भी स्थापित की.

भारत की चार दिशाओं में चार पीठ –

- दक्षिण में शृंगेरी शारदापीठ – यजुर्वेद की परंपरा
- पूरब में गोवर्धन मठ, पुरी – ऋग्वेद की परंपरा
- पश्चिम में द्वारका शारदापीठ – सामवेद की परंपरा
- उत्तर में ज्योतिर्मठ, बद्रीनाथ – अथर्ववेद की परंपरा

ये केवल मठ नहीं, वेदज्ञान और सनातन संस्कृति के जीवंत संरक्षक हैं.

जहाँ केवल विचार होता है, वहाँ विखंडन का खतरा रहता है; पर जहाँ अनुशासन और परंपरा का दंड होता है, वहाँ संरक्षण सुनिश्चित होता है.

धर्मदंड का अर्थ दमन नहीं, बल्कि मर्यादा और संतुलन है. यह उस नैतिक सत्ता का प्रतीक है जो धर्म को विचलन से बचाती है.

चारों पीठों की स्थापना के माध्यम से शंकराचार्य ने यह सुनिश्चित किया कि वेद, परंपरा और सनातन दर्शन केवल ग्रंथों में न रह जाएँ, बल्कि जीवित परंपरा के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवाहित हों.

आज के संदर्भ में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है. जब वैश्विक विचारधाराएँ तीव्र गति से समाज को प्रभावित कर रही हैं, तब यह संस्थागत संरचना सनातन के मूल सिद्धांतों की रक्षा करती है. युवा यदि यह समझ ले कि परंपरा स्थिरता नहीं, बल्कि संरक्षित ऊर्जा है, तो वह आधुनिकता को अपनाते हुए भी अपनी जड़ों से विच्छिन्न नहीं होगा. यही चार पीठों का शाश्वत संदेश है.

"किंतु साथ ही यह भी आवश्यक है कि पीठ पर आसीन उत्तराधिकारी अपने पद की गरिमा, मर्यादा और उत्तरदायित्व का सदैव पूर्ण भान रखे क्योंकि परंपरा की प्रतिष्ठा व्यक्ति के आचरण से ही सुरक्षित रहती है."

स्वामी विवेकानंद

भवानंद झा : स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को राष्ट्र की शक्ति कहा था. आज के समय में, जब युवा डिजिटल भटकावों और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के बीच खड़ा है, उनके विचारों की प्रासंगिकता आप कैसे देखते हैं?

प्रो. त्रिपाठी : स्वामी विवेकानंद ने केवल भावनात्मक जगाया नहीं, उन्होंने युवा चेतना को दिशा दी. उनका 'उठो, जागो' कोई सामान्य प्रेरक वाक्य नहीं, बल्कि

आत्मजागरण का प्रखर उद्घोष था.

उन्होंने स्पष्ट कहा था – 'मुझे सौ ऊर्जावान और चरित्रवान युवा मिल जाएँ, तो मैं राष्ट्र का स्वरूप बदल दूँ.' उनका राष्ट्रवाद आक्रोश पर नहीं, आत्मसम्मान, आत्मबल और चरित्र निर्माण पर आधारित था.

विवेकानंद ने धर्म को संकीर्ण परिभाषाओं से मुक्त कर उसे मानवता, सेवा और शक्ति का रूप दिया. उन्होंने युवा मन में यह विश्वास रोपा कि भीतर की ऊर्जा ही सबसे बड़ी शक्ति है. आज का युवा यदि अपने संस्कार, आत्मविश्वास और अंतर्निहित सामर्थ्य को पहचान ले, तो यही भारत की वास्तविक संपदा है. राष्ट्र निर्माण बाहर से नहीं, भीतर से प्रारम्भ होता है और यही कारण है कि विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता समय की सीमाओं से परे, सदियों तक अक्षुण्ण बनी रहेगी.

वीर सावरकर

भवानंद झा : वीर सावरकर का राष्ट्रचिंतन अक्सर विवादों का विषय रहा है. साहित्य में उनकी भूमिका को आप कैसे देखते हैं?

प्रो. त्रिपाठी : वीर सावरकर केवल एक राजनैतिक व्यक्तित्व नहीं थे, वे राष्ट्रचेतना के प्रखर वैचारिक स्थापत्यकार थे. उन्होंने लेखनी को क्रांति का माध्यम बनाया. '1857 का समर', 'काला पानी', 'मेरा आजीवन कारावास', 'हिंदुत्व के पंच प्राण', जैसे ग्रंथों ने इतिहास को नई व्याख्या दी और स्वतंत्रता के प्रथम संग्राम को राष्ट्रीय अस्मिता का स्वर प्रदान किया. सेल्युलर जेल की अमानवीय परिस्थितियों में भी उनका चिंतन थमा नहीं – यह केवल साहित्य नहीं, आत्मबल की घोषणा थी.

उनका लेखन भावनात्मक नहीं, तर्कपूर्ण और संगठित राष्ट्रवाद का घोष था.

सावरकर का बौद्धिक साहस, उनकी वैचारिक स्पष्टता और राष्ट्र के प्रति उनका अखंड समर्पण युवाओं को यह सिखाता है कि विचार से डरो मत, उसे गढ़ो और उसके लिए खड़े रहो.

मटमलाल टीगरा

भवानंद झा : भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के समय त्याग और बलिदान का प्रतीक किसे माना जा सकता है?

प्रो. त्रिपाठी : स्वतंत्रता संग्राम में अनेक महान व्यक्तियों ने अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया. किंतु यदि युवा चेतना और अदम्य साहस की बात करें, तो मटमलाल टीगरा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है. उन्होंने यह सिद्ध किया कि युवा केवल इतिहास का दर्शक नहीं, बल्कि उसका निर्माता भी होता है. आदर्श के प्रति अटूट निष्ठा और निर्भीक साहस ही उनके जीवन का संदेश है. उनका त्याग हमें स्मरण कराता है कि राष्ट्रनिर्माण केवल विचार से नहीं, बल्कि संकल्प और समर्पण से भी होता है.

भवानंद झा : हम कह सकते हैं कि आज का यह संवाद केवल इतिहास का स्मरण नहीं, बल्कि युवा चेतना का आह्वान है!

प्रो. त्रिपाठी : जी बिल्कुल! शंकराचार्य ने विचार दिया,विवेकानंद ने आत्मविश्वास दिया, सावरकर ने निर्भीकता दी,टीगरा ने समर्पण दिया – अब बारी युवाओं की है.भवानंद झा: यदि आज के युवा से एक वाक्य में कहना हो कि धर्म, राष्ट्र और साहित्य के बीच संतुलन कैसे बने, तो आप क्या कहेंगे?

प्रो. त्रिपाठी : धर्म आचरण में हो, राष्ट्र व्यवहार में हो और साहित्य संवेदना में – तब युवा जीवन और समाज दोनों को दिशा दे सकता है. यह सत्र केवल ऐतिहासिक व्यक्तियों का स्मरण नहीं था, बल्कि युवा पीढ़ी के लिए वैचारिक स्पष्टता, आत्मगौरव और राष्ट्रबोध का प्रेरक संवाद सिद्ध हुआ. परंपरा और आधुनिकता के संतुलन की यह चर्चा उपस्थित युवाओं के लिए चिंतन और संकल्प दोनों का आधार बनी.

संकलन: **इंदिरा पांडे**
साहित्यकार, मथुरा
एवं
उपासना सिन्हा
साहित्यकार, जमशेदपुर





सत्र 17 का शेष भाग :

अभिषेक चौबे : Uncut मतलब बिना चमक-दमक का सच। सिनेमा मेहनत है, असफलताओं से भरी एक यात्रा है। हर फ्रेम के पीछे कई अनदेखे संघर्ष होते हैं। फिल्में में दिलीन के पहले कई दृश्य कट देने पड़ते हैं, लेकिन निर्देशक के भीतर की बेचैनी नहीं कटती। वही उसे बेहतर बनाती है।

क्षेत्रीय सिनेमा का भविष्य

डॉ. जैसल: क्या आगे वाला समय क्षेत्रीय सिनेमा का है?

अभिषेक चौबे : हाँ! दर्शक अब प्रामाणिकता चाहता है। भाषा नहीं, कहानी महत्वपूर्ण है। झारखंड, बिहार, पूर्वांचल – इन इलाकों की कहानियाँ अभी पूरी तरह आई ही नहीं हैं। भविष्य इन्हीं में छिपा है।

विशेष प्रश्न: झारखंड में फिल्म शूटिंग की संभावनाएँ

डॉ. जैसल: झारखंड प्राकृतिक सौंदर्य, जनजातीय संस्कृति और विविध लोकेशनों से समृद्ध है। क्या आपको लगता है कि यहाँ फिल्म शूटिंग की व्यापक संभावनाएँ हैं?

अभिषेक चौबे : निश्चित रूप से। झारखंड की भौगोलिक विविधता, जंगल, पहाड़ और सांस्कृतिक परतें सिनेमा के लिए बेहद समृद्ध सामग्री हैं। यदि नीति, सुविधाएँ और प्रशासनिक सहयोग सुगम हो, तो यह राज्य एक बड़ा फिल्म डेस्टिनेशन बन सकता है। पूर्व में भी यहाँ कई फिल्मों की शूटिंग हो चुकी है। अगले वर्ष मैं अपनी अगली वेब सीरीज की शूटिंग झारखंड के विभिन्न लोकेशन में करने का प्लान कर रहा हूँ।

सिनेमा और समाज

डॉ. जैसल: क्या सिनेमा समाज को बदलता है या सिर्फ समाज का प्रतिबिंब होता है?

अभिषेक चौबे : सिनेमा दोनों है। वह समाज से जन्म लेता है और फिर उसी समाज को प्रभावित भी देता है। हर फिल्म क्रांति नहीं करती, लेकिन हर ईमानदार फिल्म सोच में हलचल जरूर पैदा करती है।

पंकज झा: एक किरदार कई बार दर्शक के भीतर छिपे सवाल को आवाज़ दे देता है। बदलाव धीरे होता है, लेकिन होता है।

टाइपकास्टिंग और जोखिम

डॉ. जैसल: पंकज जी, क्या आज भी अभिनेता टाइपकास्ट होने के डर से जूझता है? और निर्देशक जोखिम लेने से बचता है?

पंकज झा: टाइपकास्ट होना आसान रास्ता है, लेकिन कलाकार का विकास जोखिम लेने से होता है। हर नया किरदार एक परीक्षा है।

अभिषेक चौबे : जोखिम नहीं लेंगे तो नई भाषा कैसे बनेगी? सिनेमा सुरक्षित रहेगा तो साधारण हो जाएगा।

साहित्य से सिनेमा

डॉ. जैसल: साहित्य और सिनेमा का रिश्ता कैसा है? क्या आज भी अच्छी फिल्मों की जड़ में अच्छा साहित्य है?

अभिषेक चौबे : बिल्कुल। मजबूत पटकथा हमेशा किसी गहरी साहित्यिक समझ से आती है। साहित्य आपको चरित्र की गहराई देता है। जब किरदार शब्दों से जन्म लेते हैं, तो अभिनय में भी सच्चाई आती है।

युवा फिल्मकारों के लिए संदेश

अभिषेक चौबे : अपने आस पास की घटनाओं को देखिए, खूब पढ़िए, समझिए। सिनेमा कैमरे से नहीं, दृष्टि से बनता है।

पंकज झा : लोकप्रिय बनने की जल्दी मत कीजिए। पहले खुद को गढ़िए, फिर किरदार अपने आप गढ़े जाएँगे।

यह संवाद सिनेमा की चमक के पीछे छिपे श्रम, संघर्ष और संवेदनशीलता का अनकहा सच था। कला, बाज़ार, ऑटोरी और क्षेत्रीय संभावनाओं पर खुलकर चर्चा हुई। संदेश स्पष्ट था – सिनेमा सिर्फ मनोरंजन नहीं, समाज का जीवंत दस्तावेज़ है।



संकलन: **रेणुका अरयाना**
साहित्यकार
भिवाड़ी, राजस्थान

सत्र 18 का शेष भाग :

आकांक्षा : इस कला की शुरुआत बॉर्डर से होती है। यह फ्री-हैंड होती है—सिंगल या डबल ब्रश से। पारंपरिक रंग—गोंठ, सफ़ेद मिट्टी, पत्तियों से बने भूरे रंग। इसमें मूवमेंट और फ्लो होता है। तहपा नृत्य का चित्र—एकता का प्रतीक है। मेरे गुरु कहा करते थे—"ज्यादा फिनिशिंग से बनावटीपन आ जाता है, कला को उसकी सहजता में रहने दो।"

पुष्पांजलि : पुनिता जी, सोहराय से आपका रिश्ता कैसे जुड़ा?

पुनिता : शादी से जमशेदपुर आते-जाते मैंने इसके रंगों को देखा—और मन ठहर गया। हालाँकि इस पर गंभीरता से काम मैंने 5–10 वर्ष पहले शुरू किया। यह कला मेरे लिए मेडिटेशन है। रंगों से खेलना—मन को बहुत सुकून देता है।

पुष्पांजलि : आपकी साधना की प्रक्रिया कुछ अलग है?

पुनिता : मैं रोज़ आधा घंटा सीज़ होकर लकीर खींचने का अभ्यास करती हूँ—इससे लकीर सीधी और स्थिर होती है। अब तो चित्र बनाते समय टोना, गाना, भजन गुनगुनाना—सब साथ चलता है। मैं पूरी तरह चित्र में खो जाती हूँ।

पुष्पांजलि : सोहराय कला की विशेषताएँ?

पुनिता : यह झारखंड की पारंपरिक आदिवासी कला है। मुख्यतः महिलाओं द्वारा, सोहराय पर्व पर—मिट्टी की दीवारों पर, प्राकृतिक रंगों से—लाल, काला, सफ़ेद, पीला। पशु, पक्षी, फूल—सब इसमें आते हैं। यह कला माँ से बेटी में हस्तांतरित होती है। कभी-कभी ससुराल में चित्र देखकर लोग पहचान लेते हैं—कि बहू किस गाँव से आई है।

पुष्पांजलि : क्या इसमें क्षेत्रीय भिन्नता भी है?

पुनिता : हाँ! हर समुदाय का रंग, मोटिव अलग होता है। पहले मैंने चित्रों की नकल की—अब रंगों और डोली में बदलाव लाकर अपनी पहचान बना रही हूँ। मैं बच्चों को सोहराय सिखाने के लिए पुस्तक और सामग्री भी देती हूँ।

पुष्पांजलि : अंत में—वरली और सोहराय में मुख्य अंतर?

आकांक्षा : वरली में ज्यामितीय आकृतियों से भाव व्यक्त होते हैं।

पुनिता : और सोहराय में रंगों और मोटिफ्स से—जो पीढ़ियों में हस्तांतरित होते हैं।

पुष्पांजलि : आज हमने जाना—लोककला केवल दीवारों पर नहीं, संस्कृति की स्मृति में अंकित होती है।

प्रश्नोत्तर के क्रम में जमशेदपुर के विख्यात Abeero Arts, आदित्यपुर की संस्थापक श्वेता सिंह ने प्रश्न किया—

शहरी दर्शकों के बीच जनजातीय कला (Tribal Art) को अधिक लोकप्रिय और अर्थपूर्ण बनाने के लिए क्या आवश्यक है?

इस प्रश्न के उत्तर में सोहराय कलाकार पुनीता कुमारी ने कहा कि जनजातीय कला को शहरी समाज तक पहुँचाने के लिए जानकारी, सहभागिता और प्रामाणिकता अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने विशेष रूप से इस बात पर बल दिया कि स्कूलों, कॉलेजों और कॉर्पोरेट संस्थानों में नियमित कार्यशालाएँ आयोजित की जानी चाहिए। जब कलाकार स्वयं वहाँ उपस्थित होकर लाइव डेमॉन्स्ट्रेशन देते हैं, तो लोग केवल चित्र नहीं देखते, बल्कि उसकी प्रक्रिया, परंपरा और सांस्कृतिक अर्थ को भी समझ पाते हैं।

उन्होंने कहा कि जब शहरी दर्शक कलाकारों से सीधे संवाद करते हैं, तो उनके मन में जनजातीय कला के प्रति सम्मान, जिज्ञासा और दीर्घकालिक सराहना विकसित होती है। इस प्रकार यह कला केवल सजावट नहीं रह जाती, बल्कि संस्कृति की एक जीवित परंपरा के रूप में समझी जाने लगती है।

वरली कलाकार आकांक्षा सिंह ने इस संदर्भ में कहा कि जनजातीय कला को केवल डेकोर या सजावट की वस्तु के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए। इसके साथ जुड़ी कहानियों और सांस्कृतिक संदर्भ भी लोगों तक पहुँचने चाहिए।

उन्होंने बताया कि झारखंड की कई जनजातीय परंपराओं में म्यूरल आर्ट (दीवार चित्रकला) विशेष अवसरों पर बनाई जाती है। उदाहरण के रूप में, विवाह से पहले सास अपने घर की दीवारों पर चित्र बनाकर बहू के स्वागत की परंपरा निभाती है। यह केवल कला नहीं, बल्कि परिवार और परंपरा का भावनात्मक प्रतीक है।

उन्होंने यह भी कहा कि जनजातीय गाँवों में यह कला त्योहारों, जन्म, फसल कटाई, विवाह और अन्य पारिवारिक उत्सवों के अवसर पर बनाई जाती है। इसलिए जनजातीय कला को समझना, दरअसल एक संपूर्ण जीवन पद्धति को समझना है।

चर्चा को आगे बढ़ाते हुए श्वेता सिंह ने Artison Empowerment (कलाकारों के सशक्तिकरण) की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि जनजातीय कला के संरक्षण और प्रसार के लिए यह आवश्यक है कि:

कलाकारों को उचित और सम्मानजनक पारिश्रमिक मिलेऔर उन्हें प्रत्यक्ष पहचान और दृश्यता प्राप्त हो।

उनके लिए स्थायी आजीविका के अवसर बनाए जाएँ।

यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि बाजार की माँग के कारण कला की मौलिकता और प्रामाणिकता से समझौता न हो।

अंततः इस चर्चा में दोनों वक्ताओं की राय थी कि यदि जनजातीय कला को शहरी समाज

में लोकप्रिय बनाना है, तो उसे केवल एक कला वस्तु के रूप में नहीं, बल्कि परंपरा, कथा और समुदाय के जीवित अनुभव के रूप में प्रस्तुत करना होगा। तभी यह कला शहरी दर्शकों के लिए सघनुच अर्थपूर्ण और सम्मानजनीय बन सकेगी।



संकलन : डॉ. मनीला कुमारी
संकाय सदस्य डायट, बम्हरिया,
सरायकेला - खरसावां

सत्र 19 का शेष भाग :

'पीला' धूप की तरह जान झमेरे चलता है, अंधेरों से कहता है—डरना मत, मैं हूँ।
'नीला' आकाश की धीमी आवाज़ में कहता है—सब कुछ ठहर जाएगा, बस थोड़ा विश्वास रखो।
'हरा' पहली की साँस है, जो टूटे बीज से उठ खड़ा होता है और खड़े होने का निरंतर अभ्यास करता है।
'काला' चुप रहता है, पर उसकी चुप्पी में कई सवाल होते हैं—और वे सवाल सच भी होते हैं।
'सफेद' हर रंग को अपने भीतर जगह देता है, इसलिए वह शायद सबसे पूर्ण रंग है। और हाँ—जो सुन सके, उसके लिए रंग पूरा जीवन है, एक संवाद है।
आइए, इस संवाद-यात्रा को आगे बढ़ाते हैं और बात करते हैं पद्मश्री भज्जू श्याम जी से। इनका जन्म मध्य भारत के डिंडोरी में हुआ और वे गोंड जनजाति समुदाय से संबंधित हैं। वर्ष 2018 में उन्हें भारत के चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया। उनकी पुस्तक "लंदन जंगल बुक" वर्ष 2004 में प्रकाशित हुई, जिससे उन्हें अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली।
आपने अपनी कला से आदिवासी जीवन, लोककथाओं और प्रकृति की आत्मा को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित किया है। आपकी जीवन-यात्रा के पड़ाव हमारे समक्ष रखें।

भज्जू श्याम : मेरा बचपन गरीबी और अभावों में बीता। हमारे पास किताबें, ड्रेस और कॉपियाँ नहीं थीं। दोस्त स्कूल में डाँट पड़ती थी, इसलिए स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था। हम तीन भाई और एक बहन थे—सबकी स्थिति एक जैसी थी।
किसी तरह मैट्रिक पास किया और आगे की पढ़ाई छोड़ दी। फिर साधारण काम किए—मज़दूरी, पेड़ लगाना आदि। 18 साल की उम्र में भोपाल आया। पहले चौकीदारी की नौकरी की, लेकिन तीन महीने बाद वह भी छूट गई। रात की ड्यूटी के बाद एक दिन झपकी आ गई, तो सुपरवाइज़र ने पैसे काट लिए। तब मैंने वह काम छोड़ दिया।
एक दिन परेशान बैठा था, तभी जनगढ़ सिंह श्याम मेरे पास आए। उन्होंने कहा—"मैं स्केच करूँगा, तुम उसमें रंग भरो।" मैं कलाकार बनने भोपाल नहीं आया था, लेकिन उसी दिन से रंग भर रहा हूँ—और आज भी कर रहा हूँ।

प्रो. प्रणु : आपके भरे रंग आज हर शहर, हर कोने में दिखाई देते हैं। गोंड पेंटिंग की पहचान आपके काम से बनी है, और यही कारण है कि आज आपको यह सम्मान मिला है।

श्रोता वैष्णव चरण मुखी का प्रश्न : रंगों और साहित्य का क्या संबंध है? साहित्य में संयोग और वियोग शृंगार के लिए आप कौन-से रंग देखते हैं?

भज्जू श्याम : रस-मंजरी में भानुदत्त ने कहा है कि रंगों का साहित्य से अनुषांगिक संबंध है। संयोग शृंगार का रंग लाल और उसका पक्षी कपोत है। वियोग शृंगार का रंग काला और उसका पक्षी कौआ है।

प्रो. प्रणु : मनीष पुष्कले जी, आप समकालीन भारतीय चित्रकला के उन दुर्लभ चित्रकारों में से हैं, जो विदेशों में भारत की संवेदनशील, आध्यात्मिक और बौद्धिक चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं। आपकी कला-यात्रा के बारे में बताइए।

मनीष पुष्कले : हर कलाकार की शुरुआत अलग होती है। भज्जू श्याम की शुरुआत आपने सुनी—मेरी यात्रा भी कुछ वैसी ही है।
मेरा जन्म भोपाल में हुआ, पर मैं कहता हूँ—मैं शिक्षित नहीं, दीक्षित हूँ। मेरे भीतर का चित्रकार कई लोगों से मिलकर बनावा है। मैं उस संस्था का परिणाम हूँ, जिसका नाम है भारत भवन। उसने छोटे भोपाल को विचार का नगर बना दिया—कला की ताल, संगीत की ताल, नृत्य की ताल। मैं उस समुद्र की एक बूँद हूँ।

प्रो. प्रणु : आप वह समुद्र हैं सर, जो किनारों तक खुद चला आता है। अब तीसरी धारा के रूप में हमारे साथ हैं—ऋतु शर्मा, आप लेखिका भी हैं, कवयित्री भी हैं और राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा की पूर्व निदेशक भी रह चुकी हैं। आपकी पुस्तक "राइस – टेल्स ऑफ पावर एंड प्रॉमिस" नई दृष्टि प्रस्तुत करती है।
आप बताइए कि लेखिका और प्रशासक—इन दोनों भूमिकाओं के बीच आप कैसे संतुलन बनाती हैं?

ऋतु शर्मा : नमस्कार। मैं यहाँ एक लेखिका के रूप में उपस्थित हूँ। यह सच है कि मेरी यात्रा लोकतांत्रिक रही है। जब मुझे राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा में कार्य करने का अवसर मिला, तो कला के प्रति मेरी दृष्टि और गहरी हुई। यह मेरा सौभाग्य है कि आज मैं इतने बड़े कलाकारों के साथ मंच साझा कर रही हूँ। हर कलाकार की अपनी एक यात्रा होती है। मुझे बहुत पीड़ा होती है कि कलाकारों को वह आदर, सम्मान, सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक सुरक्षा नहीं मिल पाती, जिसके वे अधिकारी हैं।
हमारे समाज में आर्ट और क्राफ्ट के बीच एक कृत्रिम अंतर खड़ा कर दिया गया है। कंटेम्पररी या मॉडर्न आर्ट को ऊँचा दर्जा मिलता है, जबकि लोककला या जनजातीय कला को यह कहकर कमतर आँका जाता है कि "यह तो कोई भी कर सकता है।"
मधुबनी हो, वारली हो या कोई अन्य पारंपरिक कला—इनमें जो श्रम, साधना और मौलिकता है, उसे समझने की ज़रूरत है। यदि भारतीय कला को बचाना है, तो भारतीय कलाकारों को समर्थन देना ही होगा। कलाकार और व्यावसायिक जगत—दोनों को लाभ से ऊपर उठकर देश की सांस्कृतिक धरोहर के लिए काम करना होगा।
गोंड कला का आंदोलन

प्रो. प्रणु : भज्जू श्याम जी, आपने जनगढ़ सिंह श्याम के नेतृत्व में गोंड प्रधान चित्रकला के विकास की बात की। यह आंदोलन कैसे शुरू हुआ?

भज्जू श्याम : गोंड चित्रकार जनगढ़ सिंह श्याम मेरे चाचा थे और हमलोग एक ही गाँव में रहते थे। जब मैं छोटा था, वे भोपाल में पेंटिंग किया करते थे। गोंड जनजाति के भीतर प्रधान, अहीर, अगरिया जैसे उपसमूह होते हैं। प्रधान समुदाय के लोग देवी-देवताओं की पूजा करते हैं और धरती, पेड़-पौधे, जीव-जंतुओं की उत्पत्ति से जुड़ी कथाएँ गीतों के रूप में सुनाते हैं।
पहले चित्रकला काग़ज़ या कैनवास पर नहीं होती थी। घरों की महिलाएँ दीवारों पर जन्म, विवाह और त्योहारों से जुड़े चित्र बनाती थीं, जबकि पुरुष लकड़ी और लोहे पर नक्काशी करते थे। लगभग 50-55 वर्षों से यह कला कैनवास पर आई है।
जनगढ़ जी ने शुरुआत में सीमित रंगों से काम किया। धीरे-धीरे डिज़ाइनिंग आई और एक अलग पहचान बनी। आज गोंड कला में सिम्बोपर का महत्व है। वे हमेशा कहते थे—अपने तरीके से काम करो।
मैंने अपने विषय प्रकृति, देवकुल, लोककथाओं और मिथकों से लिए। रंग और रेखा को

में लोकप्रिय बनाना है, तो उसे केवल एक कला वस्तु के रूप में नहीं, बल्कि परंपरा, कथा और समुदाय के जीवित अनुभव के रूप में प्रस्तुत करना होगा। तभी यह कला शहरी दर्शकों के लिए सघनुच अर्थपूर्ण और सम्मानजनीय बन सकेगी।



संकलन : डॉ. मनीला कुमारी
संकाय सदस्य डायट, बम्हरिया,
सरायकेला - खरसावां

सत्र 19 का शेष भाग :

'पीला' धूप की तरह जान झमेरे चलता है, अंधेरों से कहता है—डरना मत, मैं हूँ।
'नीला' आकाश की धीमी आवाज़ में कहता है—सब कुछ ठहर जाएगा, बस थोड़ा विश्वास रखो।
'हरा' पहली की साँस है, जो टूटे बीज से उठ खड़ा होता है और खड़े होने का निरंतर अभ्यास करता है।
'काला' चुप रहता है, पर उसकी चुप्पी में कई सवाल होते हैं—और वे सवाल सच भी होते हैं।
'सफेद' हर रंग को अपने भीतर जगह देता है, इसलिए वह शायद सबसे पूर्ण रंग है। और हाँ—जो सुन सके, उसके लिए रंग पूरा जीवन है, एक संवाद है।
आइए, इस संवाद-यात्रा को आगे बढ़ाते हैं और बात करते हैं पद्मश्री भज्जू श्याम जी से। इनका जन्म मध्य भारत के डिंडोरी में हुआ और वे गोंड जनजाति समुदाय से संबंधित हैं। वर्ष 2018 में उन्हें भारत के चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया। उनकी पुस्तक "लंदन जंगल बुक" वर्ष 2004 में प्रकाशित हुई, जिससे उन्हें अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली।
आपने अपनी कला से आदिवासी जीवन, लोककथाओं और प्रकृति की आत्मा को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित किया है। आपकी जीवन-यात्रा के पड़ाव हमारे समक्ष रखें।

भज्जू श्याम : मेरा बचपन गरीबी और अभावों में बीता। हमारे पास किताबें, ड्रेस और कॉपियाँ नहीं थीं। दोस्त स्कूल में डाँट पड़ती थी, इसलिए स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था। हम तीन भाई और एक बहन थे—सबकी स्थिति एक जैसी थी।
किसी तरह मैट्रिक पास किया और आगे की पढ़ाई छोड़ दी। फिर साधारण काम किए—मज़दूरी, पेड़ लगाना आदि। 18 साल की उम्र में भोपाल आया। पहले चौकीदारी की नौकरी की, लेकिन तीन महीने बाद वह भी छूट गई। रात की ड्यूटी के बाद एक दिन झपकी आ गई, तो सुपरवाइज़र ने पैसे काट लिए। तब मैंने वह काम छोड़ दिया।
एक दिन परेशान बैठा था, तभी जनगढ़ सिंह श्याम मेरे पास आए। उन्होंने कहा—"मैं स्केच करूँगा, तुम उसमें रंग भरो।" मैं कलाकार बनने भोपाल नहीं आया था, लेकिन उसी दिन से रंग भर रहा हूँ—और आज भी कर रहा हूँ।

प्रो. प्रणु : आपके भरे रंग आज हर शहर, हर कोने में दिखाई देते हैं। गोंड पेंटिंग की पहचान आपके काम से बनी है, और यही कारण है कि आज आपको यह सम्मान मिला है।

श्रोता वैष्णव चरण मुखी का प्रश्न : रंगों और साहित्य का क्या संबंध है? साहित्य में संयोग और वियोग शृंगार के लिए आप कौन-से रंग देखते हैं?

भज्जू श्याम : रस-मंजरी में भानुदत्त ने कहा है कि रंगों का साहित्य से अनुषांगिक संबंध है। संयोग शृंगार का रंग लाल और उसका पक्षी कपोत है। वियोग शृंगार का रंग काला और उसका पक्षी कौआ है।

प्रो. प्रणु : मनीष पुष्कले जी, आप समकालीन भारतीय चित्रकला के उन दुर्लभ चित्रकारों में से हैं, जो विदेशों में भारत की संवेदनशील, आध्यात्मिक और बौद्धिक चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं। आपकी कला-यात्रा के बारे में बताइए।

मनीष पुष्कले : हर कलाकार की शुरुआत अलग होती है। भज्जू श्याम की शुरुआत आपने सुनी—मेरी यात्रा भी कुछ वैसी ही है।
मेरा जन्म भोपाल में हुआ, पर मैं कहता हूँ—मैं शिक्षित नहीं, दीक्षित हूँ। मेरे भीतर का चित्रकार कई लोगों से मिलकर बनावा है। मैं उस संस्था का परिणाम हूँ, जिसका नाम है भारत भवन। उसने छोटे भोपाल को विचार का नगर बना दिया—कला की ताल, संगीत की ताल, नृत्य की ताल। मैं उस समुद्र की एक बूँद हूँ।

प्रो. प्रणु : आप वह समुद्र हैं सर, जो किनारों तक खुद चला आता है। अब तीसरी धारा के रूप में हमारे साथ हैं—ऋतु शर्मा, आप लेखिका भी हैं, कवयित्री भी हैं और राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा की पूर्व निदेशक भी रह चुकी हैं। आपकी पुस्तक "राइस – टेल्स ऑफ पावर एंड प्रॉमिस" नई दृष्टि प्रस्तुत करती है।
आप बताइए कि लेखिका और प्रशासक—इन दोनों भूमिकाओं के बीच आप कैसे संतुलन बनाती हैं?

ऋतु शर्मा : नमस्कार। मैं यहाँ एक लेखिका के रूप में उपस्थित हूँ। यह सच है कि मेरी यात्रा लोकतांत्रिक रही है। जब मुझे राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा में कार्य करने का अवसर मिला, तो कला के प्रति मेरी दृष्टि और गहरी हुई। यह मेरा सौभाग्य है कि आज मैं इतने बड़े कलाकारों के साथ मंच साझा कर रही हूँ। हर कलाकार की अपनी एक यात्रा होती है। मुझे बहुत पीड़ा होती है कि कलाकारों को वह आदर, सम्मान, सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक सुरक्षा नहीं मिल पाती, जिसके वे अधिकारी हैं।
हमारे समाज में आर्ट और क्राफ्ट के बीच एक कृत्रिम अंतर खड़ा कर दिया गया है। कंटेम्पररी या मॉडर्न आर्ट को ऊँचा दर्जा मिलता है, जबकि लोककला या जनजातीय कला को यह कहकर कमतर आँका जाता है कि "यह तो कोई भी कर सकता है।"
मधुबनी हो, वारली हो या कोई अन्य पारंपरिक कला—इनमें जो श्रम, साधना और मौलिकता है, उसे समझने की ज़रूरत है। यदि भारतीय कला को बचाना है, तो भारतीय कलाकारों को समर्थन देना ही होगा। कलाकार और व्यावसायिक जगत—दोनों को लाभ से ऊपर उठकर देश की सांस्कृतिक धरोहर के लिए काम करना होगा।
गोंड कला का आंदोलन

प्रो. प्रणु : भज्जू श्याम जी, आपने जनगढ़ सिंह श्याम के नेतृत्व में गोंड प्रधान चित्रकला के विकास की बात की। यह आंदोलन कैसे शुरू हुआ?

भज्जू श्याम : गोंड चित्रकार जनगढ़ सिंह श्याम मेरे चाचा थे और हमलोग एक ही गाँव में रहते थे। जब मैं छोटा था, वे भोपाल में पेंटिंग किया करते थे। गोंड जनजाति के भीतर प्रधान, अहीर, अगरिया जैसे उपसमूह होते हैं। प्रधान समुदाय के लोग देवी-देवताओं की पूजा करते हैं और धरती, पेड़-पौधे, जीव-जंतुओं की उत्पत्ति से जुड़ी कथाएँ गीतों के रूप में सुनाते हैं।
पहले चित्रकला काग़ज़ या कैनवास पर नहीं होती थी। घरों की महिलाएँ दीवारों पर जन्म, विवाह और त्योहारों से जुड़े चित्र बनाती थीं, जबकि पुरुष लकड़ी और लोहे पर नक्काशी करते थे। लगभग 50-55 वर्षों से यह कला कैनवास पर आई है।
जनगढ़ जी ने शुरुआत में सीमित रंगों से काम किया। धीरे-धीरे डिज़ाइनिंग आई और एक अलग पहचान बनी। आज गोंड कला में सिम्बोपर का महत्व है। वे हमेशा कहते थे—अपने तरीके से काम करो।
मैंने अपने विषय प्रकृति, देवकुल, लोककथाओं और मिथकों से लिए। रंग और रेखा को

सत्र 20 का शेष भाग :

डॉ. राकेश कुमार : आज घर-परिवार और समाज में अपनापन, मधुरता, सम्मान—कहीं खोता जा रहा है। इस विकट दौर में विनोबा जी के विचार हमें किस दिशा में ले जाते हैं?

अध्यक्ष जी : विनोबा जी को "ऋषि विनोबा" कहा गया—क्योंकि वे ऋषि-परंपरा के थे। ऋषि जीवन को केवल चर्म-चक्षुओं से नहीं देखते—वे सूक्ष्म जगत को देखते हैं। हमारे भीतर क्रोध, आवेग, वासना, ग्लानि, पश्चाताप—ये सब क्यों उठते हैं? ऋषि कहते हैं—इसका उत्तर सिर्फ बाहरी तर्क या साधारण विज्ञान से नहीं मिलेगा।

उन्होंने बताया—सारी सृष्टि में तीन गुणों की लीला चलती है:

तमोगुण – अंधकार, जड़ता, आलस्य, मोह

रजोगुण – गति, इच्छाएँ, महत्वाकांक्षा, प्रतिस्पर्धा

सतोगुण – प्रकाश, स्पष्टता, मर्यादा, शीतलता

डॉ. राकेश कुमार : तो क्या यह कहा जा सकता है कि तमस और रज की अधिकता जीवन को अशांत करती है?

अध्यक्ष जी : बिल्कुल। तमोगुण का व्यक्ति अज्ञान और जड़ता में जीता है—वह परिवर्तन से डरता है, स्वच्छता और पवित्रता का आग्रह खो देता है। रजोगुण चलाता तो है, पर दिशा नहीं देता। आग और वायु चलायमान है—पर दिशाहीन हों तो मंगल जला दें, तूफान बनकर सब कुछ उड़ा दें।

रजोगुण की अधिकता से ईर्ष्या, द्वेष, दिखावा, सत्ता-लालसा जन्म लेती है। और सत्ता-लालसा राजनीति में सबसे स्पष्ट दिखती है—जहाँ जीत की कोई सीमा नहीं होती।

डॉ. राकेश कुमार : यह विश्लेषण आधुनिक समय की नब्ज पर हाथ रखता है।

अध्यक्ष जी : समाधान है—सतोगुण। सतोगुण का अर्थ है क्लेरिटी—मैं क्यों भाग रहा हूँ? मैं क्या चाहता हूँ? मेरा अंतिम लक्ष्य क्या है? सतोगुण आने पर ही रिश्तों का मूल्य समझ आता है।

आज "क्वालिटी टाइम" की बात होती है—वह बोध सतोगुण से ही आता है। रजोगुणी व्यक्ति परिवार को समय नहीं देता—वह महंगे उपहार दे देता है, पर दो मीठे बोल नहीं दे पाता। परिवार का आनंद सात्विक जीवन से ही मिलता है।

डॉ. राकेश कुमार : आपने "करुणा" की बात की। विनोबा जी के दृष्टिकोण में करुणा का स्थान क्या है?

अध्यक्ष जी : विनोबा जी कहते थे—दुनिया में शांति तब होगी जब करुणा का साम्राज्य होगा। और करुणा की देवी—भागवतियाँ होती हैं। उन्होंने "शांति सेना" बनाई—जिसका नेतृत्व भी भागवतियों के हाथ में था, जिसने कई देशों शांत करवाए।

सतोगुण का प्रमाण है—पोषण, संस्कार, संयम। यह केवल बोलने की बात नहीं—भोजन, पहनावा, चिंतन—सबमें सतोगुण चाहिए। रसोई की स्वच्छता भी आरोग्य की कला है—और वही घर का संस्कार बनती है।

डॉ. राकेश कुमार : आपने साहित्य और संगीत का भी उल्लेख किया—क्या वे भी गुणों से प्रभावित होते हैं?

अध्यक्ष जी : हाँ, साहित्य भी रजोगुणी हो सकता है—और संगीत भी। इसलिए सावधान रहना चाहिए। सतोगुणी साहित्य हृदय को पिघला देता है। उपनिषद कहता है—"रसो वै सः"—प्रभु रस रूप है। पर उस रस तक पहुँचने के लिए तमस की नींद और रज की बेचैनी से निकलकर सतोगुण में आना होगा।

गांधी जी ने भी कहा था—यह गलतफहमी है कि साहित्य का सबसे बड़ा रस सिर्फ शृंगार है। सात्विक जीवन में प्रवेश करते ही समझ आता है—जीवन में रस कितने प्रकार का है।

डॉ. राकेश कुमार : आचार्य जी, "सुख" पर आपने सुंदर बात कही। क्या कोई उदाहरण?

अध्यक्ष जी : राजस्थान की प्रसिद्ध कथा है—"सुख की कमीज"। राजा के पास सब कुछ था, फिर भी सुख नहीं। खोज चलती है—कोई सुखी नहीं मिलता...

अंततः एक नाईयान मिलता है—वह सुखी है, पर उसके पास कमीज नहीं। यह कथा बताती है—सुख वस्तुओं से नहीं, सतोगुण से आता है। यम-नियम, अहिंसा, सत्य, असतेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान—इनसे जीवन सात्विक होता है। सुख की गारंटी—सतोगुण।

डॉ. राकेश कुमार : आचार्य जी, आपने संक्षेप में जो जीवन-दर्शन दिया—वह हमारे समय का मार्गदर्शन बन सकता है। आपके उद्बोधन में मनुष्यता का एक सुंदर स्वर था। मुझे एक पंक्ति याद आ रही है—"औरों को हंसते देखो, हंसो और सुख पाओ...अपने सुख को विस्तृत कर लो, सबको सुखी बनाओ।" आज के संवाद ने हमें भीतर से शांत किया, दिशा दी। मैं पुनः प्रणाम करता हूँ।

अध्यक्ष जी : आप सबको प्रणाम! गांधी और विनोबा को समझने का सबसे सुंदर तरीका—उनकी पुस्तकों को पढ़ना, घर में चर्चा करना, और सत्संग को जीवन में उतारना है। ईश्वर आप सबको सात्विकता का प्रकाश दे—इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ प्रणाम!



संकलन : **डॉ. सविता चॉल**
सहायक आचार्य हिन्दी विभाग
को-ऑपरेटिव कॉलेज, जमशेदपुर

सत्र 22 का शेष भाग :

डॉ. शिवओम सिंह : इसी विषय पर श्रोताओं की ओर से एक प्रश्न आया है—कनाडा जैसे देशों में यदि AQI 50 से ऊपर जाता है तो अलर्ट जारी हो जाता है, जबकि भारत में हालात गंभीर होने के बावजूद शोर कदम कम दिखते हैं। जमशेदपुर जैसे शहरों में भी वायु गुणवत्ता लगातार बिगड़ रही है। आगे की योजना क्या है?

पद्मश्री जमुना टुडू : यह प्रश्न बिल्कुल सही है। वायु प्रदूषण और जंगलों की स्थिति आपस में गहराई से जुड़ी हुई है। जब जंगल खत्म होते हैं, तो हवा ज़हरीली होना तय है। हम जमीनी स्तर पर अपने अनुभवों और आंकड़ों के साथ सरकार तक लगातार अपनी बात पहुँचा रहे हैं। आगे वाले समय में तोस सुझावों के साथ संवाद को और मजबूत किया जाएगा—ताकि केवल चिंता नहीं, समाधान भी सामने आए।

पद्मश्री सुंडाराम वर्मा : मैं इसमें यह जोड़ना चाहूँगा कि सरकार और समाज को आमने-सामने नहीं, साथ-साथ चलना होगा। जब नीति और जन-चेतना मिलती है, तभी वास्तविक बदलाव संभव होता है।

पद्मश्री लक्ष्मण सिंह : और यही Green Revolution 2.0 की असली परिभाषा है—जहाँ खेती, जल, जंगल और समाज एक-दूसरे के पूरक बनें, विरोधी नहीं।

डॉ. शिवओम सिंह : आज का यह सत्र हमें यह याद दिलाता है कि पर्यावरण संरक्षण केवल विशेषज्ञों का विषय नहीं, बल्कि सामूहिक जिम्मेदारी है। जल, जंगल और जन—तीनों का संतुलन ही भविष्य की कुंजी है।



संकलन : अंशुमन भगत

सत्र 24 का शेष भाग :

मदन मोहन 'दानिश' :

और क्या आख़िर तुझे ऐ ज़िंदगानी चाहिए,
आरज़ू कल आज की थी, आज पानी चाहिए।
ये कहाँ की रीत है—जागे कोई, सोये कोई,
रात है सबकी तो सबको नींद आनी चाहिए।

दूसरी ग़ज़ल :

नींद जिसे रातभर नहीं आती,
मुमकिन है वह दुनिया बदलने के सपने देख रहा होगा...

पीयूष पुष्पम : अंबर जी, आप भी अपनी एक रचना से इस शाम को पूर्णता दीजिए।

अंबर पांडेय: आँखों में आँखें देकर देखना मेरी मातृभाषा है इसलिए बहुत दुख है मैं. चन्द्रबिन्दु सी चमकती उसकी पुतलियों से पूछा या मुझसे, यह जो कविता बन रही है हमारे बीच इस भीड़भाड़ में, पाठ कितने लोग इसका कर रहे हैं.

किसी से मिलो कभी तो प्रकृति सी बनी रहे
दिनों तक आँखों की भाषा को संगीत में ऐसे लो
तुम बदल ज्यों शुद्ध कामना प्रेम में बदल जाती है.

मेरा इसी भाषा से चल जाता काम यदि मुझे लिखनी न पड़ती यह कविता.

समापन टिप्पणी : यह सत्र केवल ग़ज़ल कविता-पाठ नहीं था, बल्कि ग़ज़ल और छंद की आत्मा को समझने की एक सार्थक कोशिश थी। संप्रेषणीयता, लय और जनभाषा पर केंद्रित यह संवाद यह प्रमाणित करता है कि—जब शब्दों में रस घुल जाए और लय साथ चल पड़े, तभी सशक्त माहौल बनता है।



संकलन : सुशील ठाकुर "साहिल"

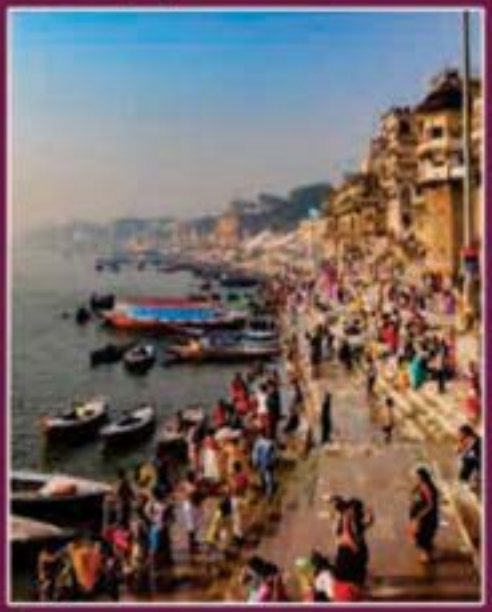
बनारस लिटरेचर फेस्टिवल में जमशेदपुर























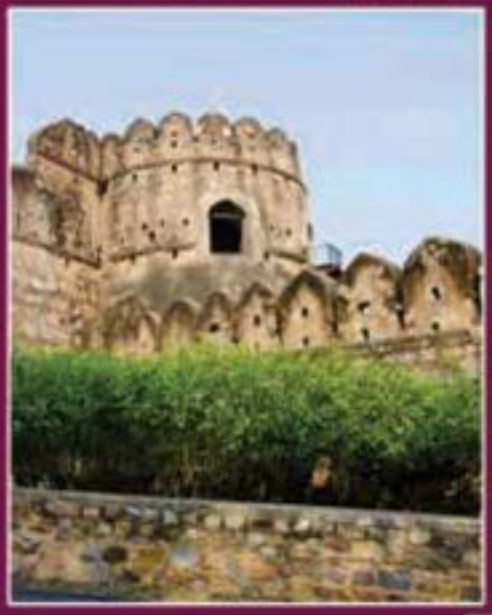
बुंदेलखंड लिटरेचर फेस्टिवल में जमशेदपुर























Unveiling the Theme of JLF 2.0

Announcement



Jamshedpur Literature Festival 2.0

Theme: Heritage, Roots and Responsibility

The Jamshedpur Literature Festival 2.0 is being announced with a renewed vision under the theme "Heritage, Roots and Responsibility. "This edition aims to move beyond celebration and towards meaningful engagement. It seeks not only to expand cultural, mythological, and tribal tourism in Jharkhand, but also to create sustainable pathways for employment, research, and intellectual exchange. JLF 2.0 envisions Jharkhand as a living civilizational landscape — where ancient geological heritage, tribal wisdom, spiritual traditions, and modern industry converge. By bringing together scholars, artists, policymakers, researchers, and youth, the festival will serve as a platform to document, reinterpret, and promote the region's rich legacy.

The broader objective is to open new academic and economic avenues rooted in heritage — encouraging research in indigenous knowledge systems, ecological traditions, oral histories, and Indian knowledge frameworks. Through this initiative, Jamshedpur Literature Festival 2.0 aspires to contribute a new chapter to the Indian Knowledge Tradition — one that is grounded in roots, guided by responsibility, and oriented toward the future.

VIDHYADEEP
FOUNDATION

Heritage Initiatives under JLF 2.0

"Discover Jharkhand – Write Its Story." Under the theme "Heritage, Roots and Responsibility," Vidhyadeep Foundation announces the following heritage-driven initiatives as part of Jamshedpur Literature Festival 2.0:



Coffee Table Book

Ramayana Circuit of Jharkhand

Vidhyadeep Foundation has signed a Memorandum of Understanding (MoU) with Bougainvillea Art Foundation, Noida to conceptualize and publish a Coffee Table Book on the Ramayana Circuit in Jharkhand.

The book will document the cultural, mythological, and civilizational connections of Jharkhand with the Ramayana tradition, presented through scholarly research, archival documentation, visual storytelling, and artistic interpretation.

Documentary Film

Pandav Yatra Trail (Krishna Circuit), Jharkhand

An MoU has been executed with Gr8 Design, Jamshedpur for the production of a documentary film on the Pandav Yatra Path (Krishna Circuit) in Jharkhand.

The documentary will explore mythological routes, oral traditions, local legends, and heritage sites associated with the Pandavas, connecting them with contemporary heritage tourism and cultural identity.





Heritage Art Camp & Exhibition

A dedicated Heritage Art Camp will be organized focusing on Jharkhand's cultural and natural heritage.

The artworks created during the camp will be curated and exhibited at Jamshedpur Literature Festival 2.0 under the central theme Heritage, Roots and Responsibility.

Heritage-Based Competitions in Educational Institutions

The Foundation will conduct heritage-themed competitions across schools, colleges, and universities in Jamshedpur.

These initiatives aim to engage youth in researching, documenting, and creatively expressing Jharkhand's civilizational and cultural legacy.





Photo Click Competition

A state-wide competition for freelance and media photographers focusing on Jharkhand's tribal and tourism destinations — from Sarna Sthal to Saranda Forest, waterfalls to sacred sites.

"50 Seconds Reel" Competition

For YouTube creators and reel makers to produce short-format heritage videos highlighting the beauty, history, and cultural richness of Jharkhand.





Jharkhand Travelogue Competition

Participants are invited to document their journeys across Jharkhand — its mythological temples, royal palaces, historic forts, and its cultural, literary, educational, military, and industrial heritage sites; places where indigenous communities create and preserve handcrafted traditions; tribal villages, sacred landscapes, geological wonders, and living cultural practices — transforming travel into meaningful heritage storytelling.

State Song Writing & Singing Competition

Jharkhand currently does not have an officially declared State Song.
Vidhyadeep Foundation will organize a Rajgeet (State Song) Writing and Singing Competition to invite creative contributions that reflect the cultural, tribal, ecological, and spiritual identity of Jharkhand.





Vision

These initiatives are aligned with the broader vision of JLF 2.0 — to position Jharkhand not merely as a resource-rich state, but as a living civilizational landscape where:

- Heritage generates research
- Tourism creates livelihoods
- Youth become cultural ambassadors
- Culture becomes a bridge to the future.

VIDHYADEEP
FOUNDATION

विद्यादीप फाउंडेशन : ज्ञान, संस्कृति और समाज के संगम का संकल्प

शिक्षा, साहित्य, कला, संस्कृति, विरासत, पर्यटन, शोध, जलवायु परिवर्तन और जनजातीय समाज—इन सभी आयामों को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास है विद्यादीप फाउंडेशन। यह संस्था केवल कार्यक्रम आयोजित करने वाली इकाई नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में निरंतर सक्रिय एक वैचारिक आंदोलन है।

विद्यादीप फाउंडेशन का मूल उद्देश्य उन आवाज़ों को सामने लाना है जो अक्सर मुख्यधारा के विमर्श से दूर रह जाती हैं। विशेष रूप से आदिवासी समाज के जीवन, संघर्ष, परंपराओं और प्रेरक कथाओं को दस्तावेज़ित कर उन्हें पुस्तकों के रूप में समाज के सामने प्रस्तुत करना संस्था का महत्वपूर्ण कार्य है। इन कथाओं के माध्यम से न केवल इतिहास और लोकस्मृति संरक्षित होती है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को अपनी जड़ों से जुड़ने की प्रेरणा भी मिलती है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी संस्था समान रूप से प्रतिबद्ध है। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति, स्कूल ड्रेस, पुस्तकें और आवश्यक तैस्तानिक सामग्री उपलब्ध कराकर उनके भविष्य को सशक्त बनाने का प्रयास किया जाता है। यह विश्वास संस्था की आधारशिला है कि शिक्षा ही वह दीप है जो समाज को स्थायी रूप से प्रकाशित कर सकता है।

साहित्य और बौद्धिक विमर्श को प्रोत्साहित करने के लिए विद्यादीप फाउंडेशन नियमित रूप से साहित्य महोत्सव और संवाद कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इन आयोजनों में देश-विदेश के प्रतिष्ठित लेखक, चिंतक, शिक्षाविद और समाजसेवी भाग लेते हैं तथा जलवायु परिवर्तन, जनजातीय अस्मिता, सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गंभीर विषयों पर सार्थक चर्चा होती है। इन मंचों का उद्देश्य केवल संवाद नहीं, बल्कि विचारों के माध्यम से समाज में जागरूकता और परिवर्तन की दिशा बनाना है।

संस्था का एक महत्वपूर्ण प्रयास यह भी है कि समाज को उन महान विभूतियों से जोड़ा जाए जिन्हें देश के सर्वोच्च सम्मानों से अलंकृत किया गया है। उनके जीवन-अनुभव, संघर्ष और उपलब्धियाँ युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनें—इसी भावना से ऐसे संवाद आयोजित किए जाते हैं।

झारखंड की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन के प्रति भी विद्यादीप फाउंडेशन दृढ़ संकल्पित है। राज्य के ऐतिहासिक स्थलों, लोकपरंपराओं, जनजातीय कला और सांस्कृतिक धरोहरों के दस्तावेज़ीकरण तथा प्रचार-प्रसार के माध्यम से इन्हें राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने का प्रयास किया जा रहा है।

शोध और ज्ञान-विस्तार की दिशा में भी संस्था निरंतर सक्रिय है। विदेशी साहित्य को हिंदी में उपलब्ध कराने तथा श्रीमद्भगवद्गीता जैसे महान ग्रंथों को जनजातीय भाषाओं में अनुवादित करने के प्रयास इस दिशा में महत्वपूर्ण पहल हैं। यह प्रयास केवल अनुवाद नहीं, बल्कि ज्ञान को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाने का एक सांस्कृतिक अभियान है।

विद्यादीप फाउंडेशन का विश्वास है कि जब शिक्षा का प्रकाश, साहित्य की संवेदना, संस्कृति की जड़ें और समाज की सहभागिता एक साथ आती हैं, तभी एक जागरूक और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण संभव होता है। यही विश्वास संस्था को निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

विद्यादीप फाउंडेशन — जहाँ ज्ञान का दीप समाज के हर कोने तक पहुँचाने का संकल्प जीवित है।

Our Sponsors





































Our Partners















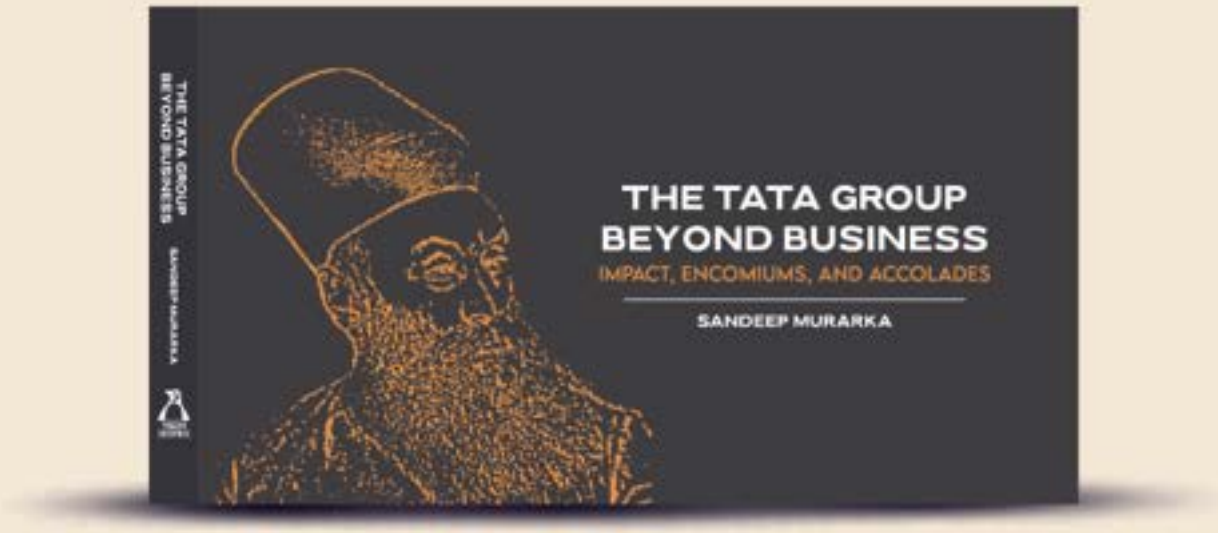




New Book

The Tata Group Beyond Business: Impact, Encomiums, and Accolades

Publisher : Penguin Enterprise
Publication date : 15 January 2026
Language : English
Print length : 176 pages



The Tata Group Beyond Business | A Tribute to Vision, Leadership, and Legacy offers a compelling tribute to Ratan Tata and the extraordinary leaders who have shaped the Group's 150+ years of history.Through rare photographs, inspiring anecdotes, and meticulous research, this book captures the entrepreneurial spirit, governance excellence, and bold strategic moves that have placed the Tata Group at the forefront of global business. Beyond boardrooms, it reveals the Group's enduring contributions to communities, education, sports, and culture.The Tata Group Beyond Business is both a valuable reference and a source of inspiration. Whether you are a business professional, student, historian, or admirer of the TATA legacy, this book will deepen your understanding of a corporate giant that continues to shape India's destiny and inspire generations.

PLEASE BOOK YOUR COPY : **+91 91234 05236**

VIDHYADEEP
FOUNDATION

CIN: U80902WB2022NPL253345 Nonprofit company: Registered under Section 8 of the Companies Act, 2013
CSR 1 registered with Ministry of Corporate Affairs
201, Silver, Siddha Pines, AS/185, Gopalpur, Rajarhat Main Road, North 24-Parganas, Pin-700136, West Bengal
Jamshedpurlitfest | foundationvidhyadeep@gmail.com | jamshedpurliteraturefestival@gmail.com